

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182457

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82
S94S

Accession No. P. G. H 804

Author सुदर्शनि

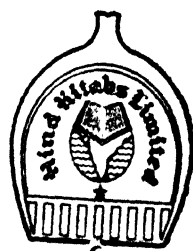
Title सिक्ंदर . 1947 .

This book should be returned on or before the date last marked below.

सिकंदर

[एक ऐतिहासिक नाटक तीन अंकोंमें]

सुदर्शन



हिन्द किताब्स लिमिटेड
बम्बई

Copyright 1947 by Sudarshan

पहला संस्करण
नवम्बर १९४७

मूल्य २।।)

मुद्रक : बन्हेयालाल शाह, ओरियंट गिरगांव, बंबई

प्रकाशक : वी. बुलवर्णी, हिन्दू किताब्स लि., २६१-२६३ हार्नबी रोड, बंबई

समर्पण

मिलनर्वा मूवीटोन बंबई के अध्यक्ष
कलाकार, निर्माता, दिग्दर्शक
सोहराब मोदी
को

भूमिका

यह नाटक पहलें सिनैमांक लिए लिखा गया था । इसे मिनर्वा मूर्वाटोन स्विट्जरलैंड के कलाकार मालिक सेठ मोहराब मोर्दाने मुफ्तसे लिखवाया, इसमें खुद महाराज पुरुषोत्तम की भूमिका ली, इसके चलचित्रपर रुपया पानीकी तरह बहाया और एक ऐसी चीज़ तैयार हो गई जिसे लोगोंने पसंद किया, बार-बार देखा और तारीफ़ की । अब उसी चीज़को मैंने नाटकके रूपमें बदल दिया है और उसके लिए कहीं-कहीं परिवर्तन भी करना पड़ा है । इस परिवर्तनसे नाटक अच्छा हो गया है या इसमें शिथिलता आ गई है, यह मैं नहीं कहता । यह समय कहेंगा, या इस नाटकके पाठक कहेंगे । नाटक छप गया, मेरा काम खत्म हुआ ।

इस नाटकका आधार ऐतिहासिक है, मगर इसका कहानी इतिहास नहीं है । या थुं समझ लीजिए कि भूमि और बुनियाद इतिहासकी है, उसपर जो भवन बना है वह कल्पनाका है । हां, इतना खयाल रखा गया है कि भवन भूमिकी बुनियादोंसे इधर उधर न हों पाए, और कोई यह न कह सके कि यह बात इतिहासकी बुनियादोंके विरुद्ध है । इतिहासकार और नाट्यकारमें बड़ा अंतर है । इतिहासकार यह बताता है कि अमुक समयमें यह घटना हुई । नाट्यकार यह बताता है कि यह घटना कैसे हुई ! इतिहासकार यह बताता है कि दिनकी रोशनीमें क्या हुआ ? नाट्यकार यह बताता है कि रातके अंधेरेमें क्या हुआ ? इतिहासकार परिणाम पकड़ता है और लोगोके सामने रख देता है । नाट्यकार उसका मनोवैज्ञानिक कारण ढूँढता है और उसे कार्यके साथ मिला देता है । इतिहासकारको जो-जो मिलाता है, वह कहता जाता है, और

जो नहीं मिलता उसकी परवाह नहीं करता । नाट्यकारको जो मिलता है उसे ले लेता है, जो नहीं मिलता उसकी खोज करता है, और टूट सिलसिले मिलाकर एक गृत्खलाबद्ध, समझमें आ जानेवाली, युक्तियुक्त चीज़ तैयार कर देता है ।

सिकंदरके जीवनमें भी कई ऐसे भाग थे, जो धुंधले थे, और उनके अपार देखना मुश्किल था । जैसे यह बात कि महाराज पुरु कैसे हार गया और सिकंदर कैसे जीत गया ? इतिहास साफ़ कहता है कि महाराज पुरु बड़े भारी योद्धा थे, उनका क्रद साढ़े छः फुट था । सिकंदर उनके सामने बच्चा मालूम होता था, और पुरुकी सेना पहाड़से टकरा जानेवाली थी । इतिहास यह भी कहता है कि महाराज पुरुसे लड़नेके बाद सिकंदरकी सेनाकी हिम्मत टूट गई और उसने आगे बढ़नेसे इनकार कर दिया । मगर इतिहास यह नहीं बताता कि पुरराज ऐसा शूर वीर योद्धा हार कैसे गया ? यहां नाटकका सिलसिला टूटता था, यहां नाट्यकारने अपनी सृभल्लू और कल्पनाके कमालसे काम लिया है । जो खाली स्थान थे, उन्हें भर दिया है और कहानीको चलनेके लिए दोनों टांगें दे दी हैं । अब कहानी आरामसे चलती है । न लंगड़ाती है, न रुकती है, न ठोकर खाती है । और कहानीका रास्ता सीधा और साफ़ है ।

इतिहास यह बताता है कि सिकंदरकी सेनाने आगे बढ़नेसे इनकार कर दिया और सिकंदरको विवश होकर यूनान लौटना पड़ा । मगर इतिहास यह नहीं बताता कि सिकंदरकी सेनाकी हिम्मत किस तरह टूटी, और जब सिकंदरने यह बचावत देखी तो उसने क्या किया ? इतिहास यह भी बताता है कि सिकंदर आठ दिनतक अपने खेमेमें औंधेमुँह पड़ा रहा और रोता रहा । मगर इतिहास यह नहीं बताता कि उसकी फ़ौजपर इसका क्या असर हुआ, और सिकंदरने कैसे लौटना मंजूर कर लिया ? यहां फिर गृत्खला टूटती थी और कहानी बेजोड़ होकर रह जाती थी । इस जगह फिर नाट्यकार अपने कारख़ाने लेकर आगे बढ़ा है और कहानीके चूल अपनी जगह बिठा दिए हैं ।

इस नाटकके पात्र ऐतिहासिक हैं यहां तक कि रूखसाना भी ऐतिहासिक है । इसका सिकंदरसे ब्याह हुआ था और इसे सिकंदरकी मौतके बाद सिकंदरके सेनापतिने मार डाला था । हमने सिर्फ इतना किया है कि उसे ईरानसे हिन्दुस्तान ले आए हैं और उससे सिकंदरकी जान और महाराज पुरुषी आन बचानेका काम लेकर उसे सिकंदरके साथ वापस भेज दिया है ।

‘सिकंदर’ का चलचित्र देखकर एक सज्जनने मुझे लिखा था कि मैंने पुरुषके चरित्रको महान् और उजागर कर दिया है । मेरा खयाल है पुरुषको जितना महान् मैंने दिखाया है, पुरुष उससे भी महान् था । हिन्दुस्तानने उसे आज तक नहीं पहचाना । शायद अब आज़ाद हिन्दुस्तानमें लोग उस आज़ादीके परवानेको पहचाननेकी कोशिश करें । यह नाटक इस महापुरुषका एक छोटासा आद है ।

माहीम-बम्बई

१० नवम्बर १९४७

}

सुदर्शन

पात्र-परिचय

सिकंदर ...	...	यूनानका मशहूर बादशाह
अरस्तू ...	...	सिकंदरका उस्ताद
रुखसाना ...	...	एक ईरानी रमणी
सेल्यूकस } पेरटीगोनस }	...	सिकंदरके सेनापति
युमनीस ...	...	सिकंदरका मंत्री
देवकुलीस } रेनीयास }	...	सिकंदरके दो सिपाही
पुरुराज ...	...	जेहलमका वीर राजा
आम्बि ...	...	लक्षशिलाका कामर राजा
प्रार्थना ...	...	आम्बिकी बहादुर बहन
सरिता ...		पुरुराजकी रानी
अमर } समर }	...	पुरुराजके वीर पुत्र
जसराम } शंकर सरन }	...	दो हिन्दुस्तानी प्रामीण
सुखमनी ...	...	एक प्रामीण स्त्री

और

प्रधान, मंत्री, अभिसार, सलकोटराज, कलूनराज, पुंचपत, सिपाही, नौकर, दरबारी, कोषाध्यक्ष, सेनापति, मजदूर इत्यादि ।

सिकंदर

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—पर्सिपोलिस (ईरान) के बाहर मिकंदर की छावनी

समय—संध्या

[उस्ताद अरस्तू, सेल्यूकस, युमनीस और एग्रीगोनस बातें करते दायिबल होते हैं । अरस्तू आगे आगे है, सेल्यूकस बैराह पीछे पीछे । अरस्तू क्रोधमें है । परदेके पीछे “अरस्तू ज़िन्दावाद” के नारे लग रहे हैं ।]

अरस्तू—(मुड़कर) सेल्यूकस ! अपने सिपाहियोंसे कह दो, हम आज तकरीर नहीं करेंगे ।

सेल्यूकस—उस्तादे ज़मा ! सिपाहियोंने कोई कसूर नहीं किया । वह आपसे अक्र और दानाईकी बातें सुनना चाहते हैं और ब्रह मैदानमें वक्तसे पहले आ गए हैं ।

सिकंदर

[परदेके पीछे “अरस्तू जिन्दाबाद ” के नारोंकी आवाज़ आती है ।]

अरस्तू—मगर सिकंदर नहीं आया । और हम आज जो कुछ कहना चाहते हैं वह इतना सिपाहियोंके लिए नहीं है, जितना सिकंदरके लिए है । इसलिए अगर अरस्तूकी तक्ररीर सुनना चाहते हों, तो अपने निकाटोर सिकंदरको लाओ ।

[सेल्यूकस सिर झुका लेता है ।]

अरस्तू—हम जानना चाहते हैं, आगिर निकाटोरको ऐसा कौन सा काम है, जो उसके पास हमारी तक्ररीर सुननेके लिए भी वक्त नहीं है ।

सेल्यूकस—(सिर झुकाकर) निकाटोरने मुझसे कोई जिक्र नहीं किया ।

अरस्तू—(युमनीसकी तरफ़ उँगली उठाकर) युमनीस ! तुम बोलो, क्या तुम जानते हो ?

युमनीस—(सिर झुका कर) नहीं उस्तादेज़मां ! मैं भी नहीं जानता ।

अरस्तू—(ऐगट्रीगोनसकी तरफ़ उँगली उठा कर) ऐगट्रीगोनस ! तुम जानते हो ?

ऐगट्रीगोनस—(सिर झुकाकर) नहीं, उस्तादेज़मां !

अरस्तू—मगर हम सब कुछ जानते हैं; हमसे सिकंदरकी कोई बात छुपी हुई नहीं है । हम यह भी जानते हैं कि सिकंदर रोशनीमें क्या करता है, हम यह भी जानते हैं कि सिकंदर अँधेरेमें क्या करता है । हमने सिकंदर को सिकंदरके खवाबोंमें भी देखा है ।

सेल्यूकस—आप उनके उस्ताद हैं । आप सब कुछ जानते हैं ।

अरस्तू—यह दुनियाकी बदनसीबी है कि अरस्तू जो आज दुनियाका सबसे बड़ा हकीम है अपनी अक्ल और दानाईके जग्राहर बिखेरनेके लिए

महफिल में आए और सिकंदर जो दुनियामें इन चीजोंका सबसे बड़ा जोहरी है, महफिलसे गैरहाज़िर हो । सिपाहियोंसे कह दो, हम आज जलसेमें तक्ररीर नहीं करेंगे । हमें जो कुछ कहना है, सिकंदरसे कहेंगे । और हम जानते हैं सिकंदर हम वक्ता कहां है । हम उसके पास जाएंगे ।

[अरस्तू चला जाता है । सेल्यूकस, ऐश्टीगोनस, युमनीस निराश होकर दूसरी तरफ़ लौट जाते हैं । परदा उठता है ।]



दूसरा दृश्य

स्थान—ईरानी रमणी ख़ुसानाका महल

समय—संध्या

[सिकंदर तेज़ीके साथ ख़ुसानाको बुलाता हुआ दाखिल होता है]

सिकंदर—(ऊंची आवाज़से) रेक्मनीज़ ! रेक्मनीज़ !!

ख़ुसाना—(फ़रशी सलाम करके) आलमपनाह ! मैं एक बार फिर यह अर्ज़ करनेकी इजाज़त चाहती हूं, कि इस नाचीज़का नाम रेक्मनीज़ नहीं, ख़ुसाना है ।

सिकंदर—मगर मावदौलत जिस चीज़को पसंद करते हैं उसके लिए, यूनानी नाम तजवीज़ कर लेते हैं । जबतक मावदौलतने तुम्हें न देखा था, तू ख़ुसाना थी । मगर जब मावदौलतकी आंग्योंने तुम्हें देखा और जब मावदौलतके दिलने तुम्हें पसंद कर लिया, तो तू ख़ुसाना नहीं

रही, रेक्सनीज़ हो गई है। अब तू रेक्सनीज़ है। हम तुझे रेक्सनीज़ ही कहेंगे।

रुखसाना—और आलमपनाह आप कौन हैं ?

सिकंदर—हम यूनानमें एन्कैज़ेन्डर थे, ईरान ने हमें सिकंदर बना लिया।

रुखसाना—और इसके लिए आप ईरानमें नाराज़ नहीं हैं ?

सिकंदर—हम नाराज़ क्यों हों ? ईरानने हमें (मुस्कराकर) तुम्ह जैसी हमीना दी है। अब वह बड़े से बड़ा गुनाह करे, तो भी हम उसे मुस्कराकर माफ़ कर देंगे।

रुखसाना—(ईरानी ढंगमें सिर झुका कर और हाथ उठाकर) शहिंशाह का शुक्रिया !

सिकंदर—सिकंदर को शुक्रिएका यह बड़ा तरीका पसंद नहीं है। पहले हमारे करीब आओ, अपने गोरे गोरे बाजू हमारी गरदनके गिंद डालो, अपनी रसीली आँखें हमारी नशीली आँखों से मिलाओ, अपने दिल आवेज़ हाँटोंपर दिलनवाज़ मुस्कराहट लाओ, और जब हमारी दुनियापर दीवानगी का आलम तारी हो जाए तो हुस्न और हया के बोझ तने थरथराते हुए लहजे में कहो—शुक्रिया ! और हम इक्कार करते हैं, कि हम यह जवान शुक्रिया कबूल कर लेंगे।

[सिकंदर धीरे धीरे आगे बढ़ता है]

रुखसाना—(दीवार के साथ पीठ लगाकर) लेकिन आलमपनाह !

[सिकंदर आगे बढ़कर रुखसाना को अपनी मर्दाना बांहों में कस लेता है। उसकी ठोड़ी पकड़कर ऊपर उठाता है और आँखों में आँखें डालकर कहता है—]

सिकंदर—अब कहो, शुक्रिया ! हम सुन रहे हैं ।

[रुखसाना पहले मुस्कुराकर आँखें मुका लेती है, फिर एकाएक सिकंदर की बाँटोंसे निकलकर पेरे चली जाती है और फिर शरारती और दिल लुभानेवाली लहजेमें कहती है—]

रुखसाना—शुक्रिया !

सिकंदर—(इस अंदा पर लोट पोट होकर) यूनान के देवताओंकी कृपामें ! तेरी शोखी और शरारत भी तेरा हुस्न है और हम इस हुस्नको पसंद करते हैं ।

रुखसाना—मैंने आलमपनाह के लिए अपने शोख हाथोंसे एक तोहफा तैयार किया है । आलमपनाह तारीफ़ करेंगे ।

सिकंदर—हम तेरे शोख हाथों की बग़ैर देखे तारीफ़ करते हैं ।

रुखसाना—रुखसाना आपके हाँथोंसे नहीं, आपकी आँखोंसे तारीफ़ सुनना चाहती है । (जानेकी इजाज़त माँगते हुए) इजाज़त है ?

सिकंदर—(मिर दिलाकर) नहीं ।

रुखसाना—(हँसकर) गोया हाँ ! (तनकर सलाम करके) जवान शुक्रिया !

[रुखसाना चली जाती है । सिकंदर उठकर एक बड़ी तस्वीर के पास चला जाता है, जिसमें सिकंदर और रुखसाना बैठे हैं ।]

सिकंदर—रुखसाना ! ले देख हमने तुझे रुखसाना कहा है । अब तू खुश हुई ? लेकिन अगर तू आ जाए तो हम फिर उसी तरह कहेंगे—रेक्स-नीज़ खूबसूरत नाम है !

[दरवाजे में एक ईरानी नौकर प्रवेश करता है ।]

सिकंदर—अब हम से यहां कौन मिलने आया है ? कह दो, हम यहां किसीसे नहीं मिलेंगे । हमें यहां कोई तंग न करे ।

नौकर—(झुककर और सलाम करके) उस्तादे ज़मां अरस्तू तशरीफ़ लाए हैं जहानपनाह !

सिकंदर—(प्रभावित होकर) उस्ताद अरस्तू आए हैं !

[अरस्तू आता है, सिकंदर यूनानी तरीक़े से सलाम करता है ।]

अरस्तू—(हाथ फैलाकर) तुझपर आसमानके देवताओंकी बरकतें बरसें ।

सिकंदर—(बैठनेकी जगह की तरफ़ इशारा करके) आपने बड़ी तकलीफ़ फ़रमाई !

अरस्तू—(बैठते हुए) आस्मानके देवता तुम्हें चांद और सूरजसे भी लम्बी उम्र दें, हम तुम्हसे कुछ कहने आए हैं । क्या तेरे पास वक्त है ?

[सिकंदर सामने खड़ा रहता है ।]

सिकंदर—मेरे पास जिस दिन उस्ताद के लिए वक्त न होगा, उस दिन देवताओंके पास मेरे लिए वक्त न होगा । (थोड़ी देरके बाद) फ़रमाइए !

अरस्तू—मेरे बच्चे ! जहां तक हवा जा सकती है वहां तक तेरी शोहरत जाए, क्या तेरा दिल इस वक्त औरतके खयाल से खाली है ? अगर नहीं, तो उसे खाली कर दे । वरना तेरा दिमाग़ हमारी दलील और दानाई की बातों को क़बूल न करेगा ।

सिकंदर—आपकी ज़बानसे निकला हुआ एक लफ़्ज़ भी ऐसा नहीं जिसके लिए मेरा दिल खाली न हो ।

अरस्तू—तो ले सुन । हम सिर्फ यह कहने आए हैं कि अगर तू दुनिया को फ़तह करना चाहता है तो पहले अपने आपको फ़तह कर । अगर तू अपने आपको फ़तह करना चाहता है तो औरतकी दुनियासे बचकर रह । औरत मर्दकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है । जो मर्द औरतकी दुनिया में जाता है, वह बरबाद हो जाता है, और दुनिया उसे समुद्रमें डूबे हुए जहाज़की तरह भूल जाती है । (उठकर चलते हुए) और यह हमारे दिमागका वहम नहीं, तारीखकी दुनियाका बार बार दुहराया हुआ सबक है । जो मुनेगा वह बहादुरोंकी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी पाएगा । जो न मुनेगा वह आम आदमियोंकी तरह अँधेरेमें जिएगा, गुमनामीमें मरेगा, और अपने पीछे अपना कोई निशान न छोड़ेगा ।

[अरस्तू चला जाता है । सिकंदर थोड़ी देर तक चुपचाप खड़ा देखता रहता है, फिर धीरे-धीरे आकर कुर्सी पर बैठ जाता है । इतनेमें रुख़साना एक फूलोंका ताज लिए हुए आती है और शोखीसे मुस्करा कर कहती है—]

रुख़साना—(ताज दिखाकर) मेरे शोख हाथोंकी शोखी ।

सिकंदर—(कुर्सीसे उठकर) हमें माफ़ करो, हमें एक ज़रूरी काम याद आ गया है ।

[रुख़साना ताज रख देती है और मस्तीसे चलती हुई सिकंदरके पीछे आकर खड़ी हो जाती है ।]

सिकंदर—आज हम ज़्यादा देर न ठहर सकेंगे । (चलना चाहता है ।)

रुखसाना—(कंधेसे पकड़ कर बिठाते हुए) वह कौन था, जो अभी अभी आया था ? अभी अभी गया है ?

सिकंदर—तुम उसका नाम सुनकर क्या करोगी ?

रुखसाना—यह समझनेकी कोशिश करूंगी कि वह कौन सा ज़रूरी काम है जिसने आपके दिलसे आपकी मुहब्बत और रुखसानाके चेहरेसे रुखसानाकी दिलकशी कम कर दी है।

सिकंदर—वह उस्ताद अरस्तू था ।

रुखसाना—और उसने आपसे क्या कहा है ?

सिकंदर—उसने एक बात यह कही है कि जो दुनियाको फ़तह करना चाहे, उसे औरतकी दुनियासे बचना चाहिए।

रुखसाना—और दूसरी बात ?

सिकंदर—दूसरी बात यह कि औरत मर्दकी सबसे बड़ी कमजोरी है ।

रुखसाना—सौ फ़ीसदी ग़लत ।

[सिकंदर मुत्कराता है, रुखसाना पीछेसे हटकर उसके सामने आ जाती है और कहती है—]

रुखसाना—औरत मर्दकी सबसे बड़ी ताक़त है । जो दुनियाको फ़तह करना चाहे, उसे औरतको अपने साथ रखना चाहिए । (सिकंदर अपनी जगहसे उठता है । रुखसाना अपनी बात पूरी करती है ।) मर्दकी ज़िन्दगी अधूरी है, औरत उसे पूरा करती है । मर्दकी ज़िन्दगी अँधेरी है, औरत उसे रोशनी देती है । मर्दकी ज़िन्दगी फीकी है, औरत उसमें रौनक लाती है । औरत न हो तो मर्दकी दुनिया वीरान हो जाए । और आदमी अपना गला घोटकर मर जाए ।

सिकंदर—(रुखसानाके कंधेपर हाथ रखकर) हम तुम्हें खुश हुए, तुम्हें

खूबसूरत फ़िक्ररे कहे हैं ।

रुखसाना—मैं इनाम माँगती हूँ । और मेरा इनाम यह है कि यहां (कुरसीपर बिठाकर) बैठिए और (शराब उठाते हुए) अपने उस्तादकी दोनों बातोंको मेरे घरकी शराबके एक जाममें रग़्क कर दीजिए ।

सिकंदर—(बेबसीसे) यह मुश्किल है ।

रुखसाना—क्या मुश्किल है ? (अदाके साथ) आप बादशाह हैं, फ़ातेह हैं, निकायोर हैं । आप सब कुछ कर सकते हैं ।

सिकंदर—हम दुनियाके सामने बादशाह हैं, फ़ातेह हैं, निकायोर हैं । मगर उस्तादके सामने एक नादान बच्चेसे भी नादान हैं । अरस्तू चाहे तो हम जैसे कई सिकंदर बना सकता है, मगर हम जैसे दस हजार सिकंदर भी चाहें तो एक अरस्तू नहीं बना सकते । (शराब फेंक देता है)

रुखसाना—आलमपनाह, आपने मेरी शराब क़बूल नहीं फ़रमाई !

सिकंदर—औरत, तुने मावदौलतको शराब इसलिए दी थी कि हम अपने उस्तादकी दो बातें इसमें रग़्क कर दें । मगर उस्तादने एक तीसरी बात भी कही है । क्या तेरे पास पत्थरका कलेंजा है ?

रुखसाना—(कोधसे) आलमपनाह ! आपकी लौंडीके पास लोहेका कलेंजा है । मैं हर एक चोट सह सकती हूँ ।

सिकंदर—उस्ताद कहता है जो मर्द औरतकी दुनियामें जाता है वह बरबाद हो जाता है । अब बोलो तुम क्या कहना चाहती हो ?

रुखसाना—मैं यह कहना चाहती हूँ कि आपके उस्तादने औरतकी पाकीज़गीकी तौहीन की है, उसने औरतकी बुजुर्गीको बदनाम किया है, उसने औरतकी दुनियाको ललकारा है । और मैं एक नाचीज़ और नातवाँ औरत औरतोंकी तरफ़से इसका जवाब दूंगी कि औरतके सामने उसकी, उसके बुढ़ापे की, उसकी हिकमतकी कोई हक़ीक़त नहीं ।

सिकंदर—(मुस्करा कर) हमें आज पहली मरतबा मालूम हुआ है कि जब खूबसूरती खफ़ा होती है तो और भी खूबसूरत हो जाती है ।

रुखसाना—(अपनी बात जारी रखते हुए) वह समझता है वह अक्कल-मन्द है, उसपर किसीका असर न होगा । मगर मैं साक्षित कर दूंगी कि उसकी ज़िंदगी भरकी कमाई हुई अक्कलमंदीको तबाह करनेके लिए औरतकी सिर्फ़ एक निगाह काफ़ी है ।

[रुखसाना जोशसे टहलती है ।]

सिकंदर—तू दीवानी है । हमारा अरस्तू ऐसी कमज़ोरियोंसे परे है ।

रुखसाना—(रुककर) मगर वह आदमी है, और हर आदमीके सीनेमें दिल होता है ।

सिकंदर—हमारा खयाल है उसके सीनेमें दिल नहीं । अगर कभी था, तो वह मर चुका ।

रुखसाना—औरत मरे हुए दिलमें भी जान डाल सकती है । आप सिर्फ़ इतना कीजिए कि सुबह अपने उस्तादके बाग़में छुपकर खड़े रहिए और जब मैं ताली बजाऊँ तो, अपने उस्तादके सामने चले आइए, और वहां आपकी आंखें अपने उस्तादकी वह तस्वीर देखेंगी, जिस पर आपके दिमाग़को कभी यक़ीन न आएगा ।

सिकंदर—मगर वहां तुम्हें जाने कौन देगा ?

रुखसाना—जो सिकंदरके दिलमें जा सकती है वह हर जगह जा सकती है । उसके लिए कहीं रोक नहीं है ।



तीसरा दृश्य

स्थान—बाग़के बाहरी दरवाज़े के सामने सड़क

समय—रातका आखिरी पहर

[सामने सड़क है । एक तरफ़ बड़ा ईरानी बनारसका दरवाज़ा है, जिसके दोनों तरफ़ लैम्प जल रहे हैं । दरवाज़े के सामने दो यूनानी सिपाही देवकुलीस और रेनीयास हथियार लगाए पहरा दे रहे हैं और साथ ही साथ बातें कर रहे हैं ।]

देवकुलीस—रेनीयास ! आखिर अब हम यहां परदेसमें कब तक पड़े रहेंगे ?

रेनीयास—जब तक देवताओं की मरज़ी होगी ।

देवकुलीस—देवताओं की मरज़ी नहीं, शाह सिकंदर और उस्ताद अरस्तू की मरज़ी कहो ।

रेनीयास—एक ही बात है । हम सिपाहियों के लिए सिकंदर और अरस्तू ही आस्मान के न मरने वाले देवता हैं ।

देवकुलीस—धीरे बोलो, कोई सुन लेगा, तो पेशी हो जायगी । और आजकल की पेशी बुरी है ।

रेनीयास—(पास आकर) अच्छा, मैं पूछता हूँ यह रखसाना कौन है, जिसने सिकंदर जैसे बेदिलके पत्थर देवताको भी क़ाबूमें कर लिया है और जिसने गरजते हुए तूफ़ान को मुठ्ठीमें बाँध लिया है, जिसकी बातें सभी करते

हैं, जिसे देखा किसी ने भी नहीं।

देवकुलीस—वह एक ईरानी औरत है।

रेनीयास—ईरानी औरत नहीं, ईरानी लड़की है।

देवकुलीस—(मुस्कराकर) तो मुझे यह कहने दो कि यह ईरानी लड़की नहीं ईरानी देवी है। देवता को देवी ही काबू कर सकती है। अगर मामूली औरत होती, या कोई आम लड़की होती, तो सिकंदर की मुहब्बत में गिरफ्तार होकर उसके पांव में गिरती और सिकंदर उसे नफरत की ठोकर लगाकर परे हटा देता। मगर वह देवी है और देवी देवता के पांवमें नहीं बैठती, दिलमें बैठती है। और उसकी मुहब्बत को फतह करती है, और उसकी मुहब्बत पर हुक्मत करती है। और देवता इस हुक्मत से खुश होता है।

रेनीयास—यार ! मैंने सुना है सिकंदर इस औरतका कहा कभी नहीं टालता। जो कहती है, करवा लेती है। जो चाहती है, मनवा लेती है।

देवकुलीस—मैंने सुना है वह कभी अपनी ख्वादिश ज़वानसे बयान नहीं करती। सिकंदर उसकी हर ख्वादिशको उसके होठोंपर आनेसे पहले उसकी आंखोंमें पढ़ लेता है। और इस तरह वह जो चाहती है, खुदबखुद हो जाता है। वह यह देखती है और ज़रा सा सिर हिलाकर मुस्करा देती है; और सिकंदर समझता है, उसने एक और मुल्क फतह कर लिया।

रेनीयास—(धीरेसे) मैं पृथ्वी हूँ क्या वह बहुत खूबसूरत है ?

देवकुलीस—ईरानकी ज़मीनके पास आज उससे ज़्यादा खूबसूरत औरत दूसरी नहीं है। अगर होती तो.....(बात बदलकर) हमारा बादशाह दूसरे दरजेकी चीज़ वभी पसंद नहीं करता। वह खुद अव्वल दरजेका है, वह सिर्फ अव्वल दरजेकी चीज़े पसंद करता है।

रेनीयास—(दरबाज़ेके एक तरफ़का लैम्प बुझाकर) क्यों दोस्त, क्या हमारा पहरा इस रखसानाके महलपर नहीं लग सकता ?

देवकुलीस—(दूसरा लैम्प बुझाते हुए) क्यों ?

रेनीयास—मेरा जी चाहता है एक बार इसे देखूँ, ताकि जब यूनानके लोग मुझसे पूछें कि तुमने ईरानमें क्या देखा, तो मैं सीना फुलाकर और सिर उठाकर कह सकूँ—मैंने ईरानमें ईरानकी सबसे बड़ी चीज़ देखी है । और इस चीज़के सामने हमारा बादशाह भी घुटने टेकता था । मगर (आह भरकर) हमारी ऐसी किम्मत कहाँ ?

[रखसाना मुँहपर नकाब डाले आती है ।]

रेनीयास—तू कौन है, जो यह भी नहीं जानती कि इस तरफ़ औरतोंके आने की मनाही है ।

रखसाना—(धीरेसे) क्यों मनाही है ?

देवकुलीस—इस लिए कि यहाँ उस्ताद अरस्तू रहता है, और उस्ताद अरस्तू का हुकम है इस तरफ़ कोई औरत न आने पाए—वह दुनिया की हर औरतसे इतनी नफ़रत करता है कि उसने अपनी दुनियाको औरतसे ख़ाली कर लिया है । इसलिए जिधरसे आई हो उधर ही को लौट जाओ । यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं ।

रखसाना—मैं इसी उस्ताद अरस्तूसे मिलने आई हूँ ।

रेनीयास—तुम हिन्दुस्तान फ़तह कर सकती हो, उस्ताद अरस्तूके सामने नहीं जा सकती ।

रखसाना—मैं उस्ताद अरस्तूके सामने नहीं जाऊंगी, उस्ताद अरस्तू मेरे सामने आएगा । हट जाओ, मैं रास्ता मांगती हूँ और मेरा हुकम आज तक किसीने नहीं डाला ।

देवकुलीस—मगर आज तुम्हारा हुक्म हमें टालना होगा ।

रुखसाना—सिर झुका कर एक तरफ हो जाओ, तुम रुखसानाका हुक्म सुन रहे हो, और रुखसानाका हुक्म तुम्हारा बादशाह भी नहीं टालता ।

रेनीयास—(घबराकर) क्या हम रुखसाना बानोके सामने खड़े हैं ?

देवकुलीस—(सहमकर) हम माफ़ी मांगते हैं । हममें आपको रोकनेकी हिम्मत नहीं । (रास्ता दे देते हैं) हमने आपको पहचाना न था ।

रुखसाना—(अंदर जाते जाते) जब तक मैं अंदर हूँ, यहाँ सिवाए बादशाह के और कोई न आने पाए । और याद रखो तुम्हें हुक्म दे दिया गया है ।

रेनीयास—(झुककर और डरकर) बानोके हुक्मकी तामील होगी ।

[रुखसाना अंदर चली जाती है । दोनों सिपाही घबराकर चुपचाप खड़े रह जाते हैं । इतनेमें अंदरसे रुखसानाके गानेकी आवाज़ आती है । दोनों सिपाही कान लगाकर सुनते हैं और एक तरफ हो जाते हैं ।]

गीत

उठ जाग जबानी आती है ।

उठ जाग !

[परदा उठ जाता है । अन्दरक. वाग दिखाई देता है । रुखसाना फूलोंको तोड़ रही है, और झूम झूमकर गा रही है ।]

गीत

उठ जाग जबानी आती है.....उठ जाग

उठ उठ दरवाज़ा खोल पुरा,

कुछ देख ज़रा, कुछ बोल ज़रा ।
 कुछ हँस ले,
 कुछ गाले,
 कुछ अपना रंग जमा ले ।
 तू किस्मतसे खुश किस्मत है—
 उठ तेरे घरमें फूलोंकी रंगीन कहानी आती है ।
 उठ जाग ।

[उस्ताद अरस्तू अपने दो मंज़िले मकानसे गीत सुनता है और गीत को पसंद करके नीचे उतरता है । दूसरी तरफ सिकंदर आकर एक तरफ छुपकर खड़ा हो जाता है । रुखसानाका गीत जारी रहता है ।]

गीत

पीने का मौसम आया है,
 जीने का मौसम आया है ।
 कुछ खा ले,
 कुछ पी ले,
 मरने से पहले जी ले ।
 कब रोज़ नसीबा खुलता है—
 कब रोज़ रोज़ उजड़े दरयामें नई रवानी आती है ।
 उठ जाग ।

[अरस्तू आकर रुखसानाके पीछे खड़ा हो जाता है और कहता है—]

अरस्तू—तू कौन है जो हमारा बाग उजाड़ रही है ?

रुखसाना—(हिरनी की तरह चौंककर) मैं ! (डरते डरते) मैं रुखसाना हूँ ।

[अरस्तू रुखसाना की तरफ देखता है । रुखसाना पहले सादगीके साथ अरस्तू की तरफ देखती है, इसके बाद शरमाकर सिर झुका लेती है ।]

रुखसाना—अगर मैंने आपका बाग उजाड़ा है, तो मैं माफ़ी मांगती हूँ ।

अरस्तू—(मुस्कराकर) नहीं तूने हमारा बाग नहीं उजाड़ा, तूने इसके फूलोंको ज्यादा खूबसूरत और इसकी हवाको ज्यादा खुशबूदार बना दिया है—तू रुखसाना नहीं, तू अफ़साना है !

रुखसाना—(हैरान होकर) मैं अफ़साना हूँ !

अरस्तू—नहीं मैंने ग़लती की । तू अफ़साना नहीं है, तू दुनियाके पास ज़वानीका देखा हुआ सुपना है, तू खूबसूरतीके पास प्यारका ग़ाया हुआ गीत है । तू आसमानकी तरफ़से ज़मीनकी तरफ़ भेजी हुई सौयात है । (रुखसाना हैरानीसे देखती है । अरस्तू कहे जाता है—) और इतना ही नहीं, तू फूलोंके कानमें बहारकी कही हुई कहानी है !

[रुखसाना शरमाकर गरदन झुका लेती है और मुस्कराकर कनखियोंसे अरस्तू की तरफ़ देखती है । मानों आँखोंके तीर मारती है ।]

अरस्तू—(टहलते टहलते) बहुत ज़माना गुज़रा, जब हम ज़वान थे, या ज़्यादा सही लफ़्ज़ोंमें जब हमारी दुनिया ज़वान थी, उस वक़्त यूनानमें तेरी उम्रकी एक लड़की थी । जब वह हँसती थी, दुनियाकी रोशनी बह जाती थी । जब वह चलती थी, दिलोंके तार भनभना उठते थे । जब वह बोलती थी, बहारके बोल बेहोश हो जाते थे । वह मर गई

तो हमारा प्यार मर गया, हमारा दिल मर गया, हमारी उम्रें मर गईं । और—हम जवानीमें बुढ़े हो गए !

रुखसाना—आदमी जवानीमें बुढ़ा भी हो जाता है क्या ?

अरस्तू—हां, आदमी जवानीमें बुढ़ा भी हो जाता है और बुढ़ापेमें जवान भी हो जाता है !

[रुखसाना हैरान होती है ।]

अरस्तू—आज हमें ऐसा मालूम होता है जैसे हमारे बागमें तू नहीं आई, हमारे बुढ़ापेमें बहार आ गई है, और हम फिरसे जवान हो गए हैं ।

[अरस्तू टड्कता है, रुखसाना हैरानीसे उसकी तरफ देखती है ।]

अरस्तू—हैरान न हो लड़की ! हम तुझे दुनियाकी हर चीज़ देंगे । सिर्फ़ एक बात बता, क्या तू हमसे प्यार कर सकेगी ?

[रुखसाना जोरसे हँस पड़ती है]

अरस्तू—यानी नहीं कर सकेगी ? (सिर हिलाकर) तू भी दूसरे लोगोंकी तरह मुँह देखती है, दिल नहीं देखती । और जो दिल नहीं देखता, वह सब कुछ देखते हुए भी कुछ नहीं देखता !

[अरस्तू जानेके लिए मुड़ता है, रुखसाना आगे बढ़कर शोखीके साथ उसका रास्ता रोक लेती है ।]

अरस्तू—अगर तू हमें प्यार नहीं कर सकती तो तू (मुस्कराकर) हमारा रास्ता क्यों रोकती है ?

रुखसाना—अपने प्यारकी कीमत बतानेके लिए !

अरस्तू—(खुश होकर) तो बता, हम उसे आसमानके तारे देकर भी खरीदेंगे ।

[रुखसाना आगे बढ़कर अरस्तूके कानमें कुछ कहती है । अरस्तू सुन कर चौंकता है, और रुखसाना की तरफ देखता है ।]

अरस्तू—तू खुद बेवकूफ है, या तू हमें बेवकूफ बनाना चाहती है ? कोई अक्लमंद आदमी यह नहीं कर सकता । (चलते हुए) यह नासुमकिन है ! यह कभी नहीं हो सकता । आदमी आदमी है, आदमी घोड़ा और गधा नहीं है ।

रुखसाना—(शोखीके साथ आह भर कर) अफसोस ! प्यारने जवानीकी छोटी सी बात भी मंजूर न की, और प्यार देखता रह गया ।

अरस्तू—(मुड़कर) लेकिन इससे हासिल क्या होगा ? (वापस आकर) ला, लगाम कहां है ? हम तेरी यह बचपनकी बात भी मंजूर करते हैं ।

[रुखसाना खुश होकर एक कोनेसे एक रस्सा उठा लाती है । अरस्तू घुटनोंके बल झुक जाता है । रुखसाना उसके मुँहमें लगाम दे देती है और उसपर उचककर सवार हो जाती है । अरस्तू चलता है, रुखसाना खुश होकर कहती है ।]

रुखसाना—(खेलते हुए)

देख देख कर घोड़ा मेरा दुनिया है हैरान ।

बांका खेल छबीला गवरु में इस पर कुरबान ।

ज़रा चल फ़र फ़र फ़र फ़र

ज़रा चल फ़र फ़र फ़र फ़र

[अरस्तू घोड़े की तरह चलता है । रखसाना कहती है:—]

चल जल्दी कर अब चाल दिखा

चलने का अपने हाल दिखा

कुछ पांवोंकी सुर-ताल दिखा

मैं कहती हूँ—————

[सिकंदर सामने आकर खड़ा हो जाता है और क्रोधसे कहता है—]

सिकंदर—रखसाना !

[अरस्तू रखसानाको पीठपरसे उतार देता है और कमर सीधी करता है ।]

रखसाना—(ताना देते हुए) औरत मर्दकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है । जो अपने आपको फ़तह करना चाहे, उसे औरतकी दुनियासे बचना चाहिए ।

[अरस्तू रखसानाकी तरफ़ देखता है मगर कुछ बोलता नहीं ।]

सिकंदर—उस्ताद यहांसे तशरीफ़ ले चलिए । यह लड़की [इस काबिल नहीं कि आपकी आँखोंके सामने खड़ी हो सके ।

[अरस्तू पहले सिकंदर की तरफ देखता है, फिर रखसाना की तरफ, फिर सिकंदर की तरफ मुड़कर कहता है—]

अरस्तू—तू हैरान हो रहा है कि उस्तादको क्या हो गया ? यह लड़की खुश हो रही है कि इसने हमें हरा दिया । लेकिन हम कहते हैं कि अगर औरत हम जैसे बुद्धे और अक्लमंद आदमीको इस तरह बेवकूफ बना सकती है, तो वह तुम जैसे नौजवानको क्या न बना देगी । बुढ़ापा बरफसे भी ठंडा है, जवानी अंगारेसे भी गरम है । बुढ़ापा अक्लमंद और समझदार है, जवानी दीवानी और नातजुर्बाकार है । बुढ़ापा देखता है और सोचता है; जवानी देखती है और बेचैन हो जाती है । अब आसमानके देवता तुम्हें देखनेकी आँख और सुननेके कान दें । ज़रा सोच, अगर औरत बुढ़ापेको शराब पिला सकती है, तो वह जवानी पर क्यों जादू न कर देगी ? (सिकंदरका चेहरा परेशान हो जाता है ।) सिकंदर यह वाक्या तेरे उस्तादकी हार नहीं, तेरी ज़िन्दगीके लिए एक सबक है । इसे दिलकी गिरहमें बांध रख, यह ज़िन्दगी भर तेरे काम॥आता रहेगा

[अरस्तू तनकर चला जाता है । सिकंदर और रखसाना दोनों उसकी तरफ आदर पूर्ण दृष्टिसे देखते रह जाते हैं । जब अरस्तू चला जाता है तो सिकंदर रखसानाकी तरफ मुड़ता है—]

सिकंदर—तुने देखा, हमारे उस्तादने दानाईकी दो बातोंसे अपनी हारको जीत में बदल दिया है । सचमुच मदौकी दुनिया जीतकी दुनिया है ।

रखसाना—आलमपनाह ! आदमीके दिलका चैन जंग और जीतमें नहीं, अमन और प्यारमें है ।

सिकंदर—उस मर्द पर देवताओंकी लानत हो जो अमन और प्यारकी ज़िन्दगी पर जोश और जीतकी ज़िन्दगी कुरबान कर दे। (रुखसाना हैरान होकर देखती है) माबदौलतकी तरफ़ शिकायतकी निगाहोंसे न देख। माबदौलत का दिल मुहब्बतके लिए तुम्हें चुन चुका है। लेकिन दुनियाको जीतना हमारी ज़िन्दगीका मक़सद है। इसलिये अपनी ख़ुबसूरती और ज़वानी के साथ हमारा इंतज़ार कर। हम दुनिया जीतकर बहुत जल्द तेरे पास लौट आएँगे...देवता निगहबान—

[सिकंदर चला जाता है। “ देवता निगहबान” की आवाज़ें आती रहती हैं, रुखसाना सुन सुनकर हैरान होती रहती है। इतनेमें परदा गिरता है।]



चौथा दृश्य

स्थान—रास्ता

समय—उसी दिनकी दुपहर

[सिपाही ज़ोर ज़ोरसे “देवता निगहबान” “देवता निगहबान” के नारे लगाते हुए दाखिल होते हैं। उनके आगे आगे अरस्तू और सिकंदर हैं और उनके गलेमें फूलोंकी मालाएँ हैं। उनके पीछे पीछे रथ आ रहा है, और रथ सजा हुआ है। रथके साथ साथ सेल्यूकस, ऐंटीगोनस और युमनीस भी हैं।]

अरस्तु—हमें मजबूर न कर । हम वापस जाएँगे । हमारी पैदाइशकी ज़मीन हमें हमारे बुढ़ापेमें वापस बुला रही है और हमारा दिल चाहता है हमारी हड्डियाँ यूनानके सिवाए और कहीं दफ़न न हों !

सिकंदर—मगर उस्ताद ! मेरा दिल आपके कदमोंकी तरफ़ दौड़ेगा, तो मैं क्या करूँगा ?

अरस्तु—यह तेरी मेहरबानी है जो तू हमें ऐसी इज़ाज़तकी बातें कहता है । लेकिन असल यह है कि हमारे पास जो कुछ था, वह हमने तुम्हें दे दिया । सिर्फ़ एक बात बताना बाक़ी था कि अगर मर्द सोच समझसे काम न ले और अपने ऊपर अक़लके दरवाज़े बंद कर ले, तो औरत क्या कर सकती है ? आज हमने तुम्हें वह भी बता दिया । अब तेरा इल्म पूरा है, अब तू सब कुछ जानता है । और जो तू नहीं जानता, वह मैं भी नहीं जानता । इस लिए अब तेरे दिलको मेरे पाँवकी तरफ़ दौड़नेकी ज़रूरत नहीं । अब तू खुद अपना उस्ताद है ।

[अरस्तु सिकंदरका हाथ थामकर रथरपर चढ़ता है ।]

सिकंदर—फिर भी मुझे इजाज़त दीजिए, मैं भी आपके साथ यूनानको लौट चूँ ।

अरस्तु—अगर मैंने तुम्हें यूनान लौटनेकी इजाज़त दे दी, तो यूनान मुझे कभी माफ़ न करेगा । यूनान तुम्हें दुनियाको फ़तह करते हुए देखना चाहता है, और तेरे पास यूनानका अरमान पूरा करनेकी ताक़त है । दुनिया फ़तह कर । यूनान अपनी तारीख़ और तारीफ़ लेकर तेरी वापसीका इंतज़ार करेगा ।

सिकंदर—मगर उस्ताद.....

अरस्तु—(बात काटकर) देवताओंपर भरोसा रख । सिपाहियोंको नाराज़

होनेका मौका न दे । और अपने आपको हर रसीले और नशीले लालचसे बचा । फिर तू देखेगा कि दुनियाकी हर फ़तह और हर खुशी तेरी है । देवता निगहबान !

सिकंदर—(सिर झुकाकर) देवता निगहबान !

अरस्तू—(रथमें खड़े होकर सिपाहियोंसे) देवता निगहबान !

सिपाही—(ऊँची आवाज़से) देवता निगहबान !

दूसरे सिपाही—(ऊँची आवाज़से) देवता निगहबान !

[रथ चला जाता है, सिकंदर देखता रह जाता है । एकाएक वह मुड़ता है और सेल्यूकसको सम्बोधन करके कहता है ।]

सिकंदर—सेल्यूकस !

[सेल्यूकस आगे बढ़कर यूनानी ढंगसे सलाम करता है ।]

सिकंदर—कूचका हुक्म जारी कर, हम हिन्दुस्तानपर हमला करेंगे ।

[सेल्यूकस सिर झुकाता है । फ़ौजी बाजा बजना शुरू हो जाता है । फ़ौजके सिपाही गाते हुए प्रवेश करते हैं ।]

गीत

ज़िन्दगी है प्यारसे प्यारमें बिताए जा ।

हुस्नके हुज़ूरमें अपना दिल लुटाए जा ।

अपना सिर झुकाए जा

ज़िन्दगी है प्यारसे...

ज़िंदगी है एक रात, प्यार उसमें है चिराग़ ।

यह चिराग़ जितनी देर जल सके जलाए जा ।

रौशनी लुटाए जा ।

ज़िंदगी है प्यारसे—

ज़िंदगी है एक बाग़, प्यार उसमें है बहार ।

उसमें आँखका खुमार, ढालकर मिलाए जा ।

शौक़से पिलाए जा ।

ज़िन्दगी है प्यारसे—

ज़िंदगी है इक जुआ, दूरसे देखता है क्या ।

आगे बढ़कर अपनी जान दावपर लगाए जा ।

हँसके मात खाए जा ।

ज़िंदगी है प्यारसे—

ज़िंदगी जनून है, जनूनसे निभाए जा ।

तू अपने अज़मको खुदाए ज़िंदगी बनाए जा ।

आसमां पै छाए जा ।

ज़िन्दगी है प्यारसे—

[सिपाही गाते गाते मार्च करते हैं । पीछेके परदे बदलते जाते हैं, जिसका मतलब यह है कि सिपाही कई देशोंमें गुज़र रहे हैं । आखिरमें हिन्दुस्तानके नक्शेवाला परदा आ जाता है, सिपाहियोंका गीत जारी रहता है । वह गाते गाते चले जाते हैं । सबके बाद रखसाना आती है और उनसे कुछ दूरीपर रहकर उनके पीछे पीछे चली जाती है । परदा उठता है ।]



पांचवां दृश्य

स्थान—पुरुका महल

समय—दिनका तीसरा पहर

[महाराज पुरु, उनका मंत्री बुद्धिचंद, सेनापति अभयराज, कोषाध्यक्ष धनराज और राजकुमार अमरसिंह और समरपाल । एक सवार सामने खड़ा है ।]

सवार—महाराजकी जय हो ।

पुरु—भारतमाताकी जय हो । कहो क्या समाचार है ?

सवार—सिकंदरने सिंध पार कर लिया और अब आगे बढ़ रहा है ।

पुरु—उसके पास कितनी सेना है ?

सवार—एक लाखसे ज्यादा है, कम नहीं है ।

पुरु—क्या महाराज आभिने उसे रोकनेका यत्न नहीं किया ?

सवार—मैंने सुना है महाराज आभिने हार माननेका फैसला कर लिया है ।

पुरु—अर्थात् आगने पानीका नाम सुनते ही अपने शीले बुझा दिए । सुना राजकुमार समर तुमने ?

समर—मैं पहले ही जानता था वह तलवार लकड़ीकी है । और लकड़ी की तलवार काट नहीं करती ।

सवार—महाराज आभि चाहते हैं कि सिकंदरकी सहायता लेकर हमारे राज्यपर हमला करें और हमें जीतकर शक्तिशाली बन जाएँ ।

पुरु—जिसके पास अपनी शक्ति नहीं, उसे भगवान भी शक्ति नहीं दे सकता । शक्ति आत्माके अंदरसे आती है, बाहरसे नहीं आती । जो बाहरकी शक्तिपर भरोसा करता है वह अपने लिए काले दिनोंको

पुकारता है । (सवार से) तुम जा सकते हो ।

[सवार चला जाता है । मंत्री चिंतित दिखाई देता है ।]

पुरु—(मुस्कराकर) क्यों मंत्री बुद्धिचंद ! आप धवरा क्यों गए ? वीरोंकी दुनियामें धवराना पाप है ।

मंत्री—मैं धवराता नहीं हूँ । मैं सोच रहा हूँ, जब घरके दरवाज़े ही चोरोंके साथ मिल गए, तो घरका क्या बनेगा ?

पुरु—अगर घरके अंदरका दरवाज़ा मज़बूत है, तो घरका कुछ नहीं बिगड़ेगा ।

अमर—और घरके अंदरका दरवाज़ा मज़बूत है । पिताजी ! आप हमपर विश्वास कीजिए । हममें जान है, हम जीतेगे ।

समर—सिकंदरने आज तक जानके लोभी देखे हैं, आनके लोभी नहीं देखे, पिताजी !

पुरु—(बात काटकर) लेकिन बेटा ! युद्धके लिए बहुतसी चीज़ोंकी ज़रूरत है । कोषाध्यक्षजी, अगर कोषका रुपया समाप्त हो जाय तो क्या होगा ? ज़रा सोचकर बताइए ।

कोषाध्यक्ष—हम अपने घरोंकी एक एक चीज़ बेचकर उसका मूल्य भेंट कर देंगे ।

पुरु—और अगर दुश्मनकी सेना हमसे कई गुना ज़्यादा हुई तो ?

सेनापति—आप दीर्घायु हों, आपका एक एक योद्धा चार चार दुश्मनोंपर भारी होगा ।

पुरु—और संभव है तुम्हारे महाराजको भी अपने जीवनकी आहुति देनी पड़े । फिर ?

अमर—आपका लहू मेरी और समरकी रगोंमें ज़िंदा रहेगा ।

पुरु—(खुश होकर) अगर यह बात है तो हमें ब्रह्मा भी नहीं हरा सकता । सेनापतिजो, आप तैयारी कीजिए, हम लड़ेंगे । और (मंत्रीसे) आप काश्मीर, सलकोट और कुल्लुतराजके राजाओंको निमंत्रण भेजिए ।

मंत्री—मगर वह आएँगे ?

पुरु—(मुस्कराकर) क्यों न आएँगे ! आखिर वह आदमी हैं, चलते फिरते पुतलें नहीं हैं । लिखिए, हमारे देशपर बाहरके आदमीने हमला किया है । अगर इस समय हम सबने उसे मिल मिलकर न भगा दिया, तो हमारी संतान हमें कायर कहेगी, और हमारे देशपर विदेशी राजा राज करेगा ।



छठा दृश्य

स्थान—आम्भिराजके महलका एक कमरा

समय—संध्या

[आम्भिराज और उसकी बहन प्रार्थना बातें कर रहे हैं ।
प्रार्थना जोशमें है । आम्भि उसे समझा रहे हैं ।]

प्रार्थना—हमारे देशपर विदेशी राजा राज नहीं करेगा और आपकी मुँह की खानी पड़ेगी ।

आम्भि—प्रार्थना ! तू हमारी बहन है । तुझे इसका खयाल रखना चाहिए ।

प्रार्थना—और आप राजा हैं । आपको अपने देशका खयाल रखना चाहिए ।

आम्भि—(टहलते टहलते) मगर हम हैरान हैं, तू समझती क्यों नहीं । हम जो कुछ कर रहे हैं, अपने देशके लिए ही कर रहे हैं ।

प्रार्थना—आप अपने आपको धोखा क्यों देते हैं ? आपको अपनी जान प्यारी है, जानका आराम प्यारा है । और जिसे आराम प्यारा होता है, वह जो कुछ करता है, अपने और अपनी जानके लिए करता है, देश और धर्मके लिए कुछ नहीं करता ।

आम्भि—(प्रार्थनाके सामने रुककर) तो तुम ही बताओ, हम क्या करें ।

प्रार्थना—देशपर संकट आया है । महाराज पुरस्के साथ मिलकर सिकंदरका सामना कीजिए । आपका सबसे बड़ा कर्त्तव्य देशकी स्वाधीनताको बचाना है ।

आम्भि—पुरस्के साथ मिलना असम्भव है । पुरु हमारा दुश्मन है ।

प्रार्थना—(ताना देते हुए) तो सिकंदरके साथ मिलकर पुरस्की गर्दन काटिए, और भारतको गुलाम बनाइए ।

आम्भि—आखिर तुझे पुरस्का इतना खयाल क्यों है ?

प्रार्थना—इसलिए कि वह वीर है, बहादुर है, अपने देशके लिए अपने जीवन और जहानकी बाज़ी लगा सकता है ।

आम्भि—मगर वह हमारा दुश्मन है, और उससे हमारे राजको सदाके लिए ख़तरा है । अगर हम सिकंदरके साथ मिलकर यह कांटा सदाके लिए निकालें डालें, तो इसमें कौन सी बुराई है ? राजनीति इसकी आज्ञा देती है । बुद्धि इसका समर्थन करती है ।

प्रार्थना—आपको कहानी सुननेका शौक है ?

आम्भि—(क्रोधसे) मैं इस समय कोई कहानी नहीं सुनना चाहता ।

प्रार्थना—कहानी दिलचस्प है ।

आम्भि—(क्रोधसे) कहो, क्या कहती हो ।

प्रार्थना—(हँसकर) कहते हैं, एक बार जंगलमें घोड़े और शेरकी लड़ाई हुई ।

और घोड़ा कमजोर था, और शेर बलवान था । और घोड़ा सोचता था, मैं कैसे जीतूंगा । आखिर आदमीने घोड़ेसे कहा—‘मैं तेरी मदद करूँगा, और तू जीत जायगा ।’ घोड़ेकी बाँछें खिल गईं । बोला—‘बड़ी मेहरबानी ।’ आदमीने कहा—‘मुझे अपनी पीठपर चढ़ा ले ।’ घोड़ेने चढ़ा लिए । उस समय एक लोमड़ीने कहा—‘मूर्ख ! शेर तो हारता हारेगा, मगर तू तो पहले ही हार गया ।’ और देख लो घोड़ा आज तक आदमीका दास है, शेर आज तक जंगलका राजा है । चौबे जी छब्बे बनने चले थे, दुबे बननेसे भी रहे ।

आम्भि—इसका मतलब क्या है ? क्या मैं भी घोड़ा हूँ ।

प्रार्थना—मतलब यह है कि ऐसे घोड़े आज भी हैं, जो बाहरके आदमीको पीठपर चढ़ाकर खुश होते हैं, और समझते हैं, कि वह इस तरह शेर को हरा देंगे ।

आम्भि—तुम जानती हो तुम क्या कह रही हो ?

प्रार्थना—(क्रोधसे) मैं यह कह रही हूँ कि आप अपना देश और देशका हित बेचनेपर तुले हुए हैं । इसलिए आजसे न आप मेरे भाई हैं, न मैं आपकी बहन हूँ । (और भी क्रोधसे) न आपका घर मेरा घर है, न आपकी हार-जीत मेरी हार-जीत है । नमस्कार ।

[मुड़कर चलना चाहती है ।]

आम्भि—मगर जाओगी कहाँ, तुमने यह भी सोच लिया ?

प्रार्थना—किसी ऐसी जगह, जहाँ तुम जैसे कायरोंके दर्शन न हों। और भारत में अभी ऐसी जगहोंकी कमी नहीं।

आम्भि—अर्थात् पुरुके पास ?

प्रार्थना—पुरुके पास जाना पाप नहीं है।

आम्भि—भाईको छोड़कर भाईके दुश्मनके पास जाते हुए लाज न आएगी तुम्हें ?

प्रार्थना—अगर भाईको भारतके दुश्मन सिकंदरके पास जाते लाज नहीं आती, तो बहनको भारतके मित्र पुरुके पास जाते हुए क्यों लाज आए ? तुम भारतको पराधीन बनानेकी कोशिश करो, मैं भारतको स्वाधीन रखनेकी कोशिश करूँगी और देखूँगी, बहन हारती है या भाई हारता है।

[पर्दा गिरता है ।]



सातवां दृश्य

स्थान—सिकंदरके फ़ौजी पड़ावके पास एक सड़क

समय—संध्या

[सिकंदर और सेल्यूकस बातें करते हुए प्रवेश करते हैं ।]

सिकंदर—हिन्दुस्तान खूबसूरत मुल्क है। इसकी ज़मीन, इसके पहाड़, इसके

बाग-बगीचे, इसके नदी-नाले सब खूबसूरत हैं। यहां कुदरतने अपनी बरकतें और बहारें क्रम क्रमपर खड़ी कर दी हैं। यहांके खेत सोना उगलते हैं, यहांके आसमान मोती बरसाते हैं, यहांकी हवाएं गीत सुनाती हैं। ऐसा मालूम होता है जैसे देवताओंने यह मुल्क बनाते वक़्त अपना सारा क़माल और सारी कारीगरी ख़त्म कर दी है, और स्वर्गकी खुशियां ज़मीनपर बिछा दी हैं। लेकिन फिर भी (आह भर कर) हम यहां खुश नहीं हैं।

सेल्यूकस—हमारी ज़िंदगी भरकी खुशियां आलमपनाहकी एक मुस्कराहट पर कुर्बान हो जाएं। आपका मुर्बाया हुआ फूल चेहरा हमारे सिपाहियोंकी हिम्मत तोड़ देता है।

सिकंदर—सेल्यूकस ! चांद और सूरज रोशनीके चश्मे हैं, मगर कुदरतने उनके लिए भी अंधेरा और बादल दो दुश्मन पैदा कर दिए हैं। और जब यह दुश्मन उनपर ग़ालिब आ जाता है, तो उनके चेहरों पर भी उदासी छा जाती है।

सेल्यूकस—लेकिन आलमपनाह ! ज़ूपिट्रका बेटा चांद और सूरजसे भी बड़ा है।

सिकंदर—(मुस्करानेकी कोशिश करते हुए) तो बोलो, तुम ज़ूपिट्र के बेटेसे क्या चाहते हो ?

सेल्यूकस—गुलाम आपको हंसते मुस्कराते देखना चाहता है। और यह सिर्फ़ गुलाम ही नहीं चाहता, हमारी सारी फ़ौज चाहती है, हमारी फ़ौज का हर एक सिपाही चाहता है, हमारे खेमोंकी मेखें गाड़नेवाला एक एक मज़दूर चाहता है—आलमपनाहकी खुशी हमारे आदमियोंकी ताक़त है।

सिकंदर—(मुस्कराकर) तो क्या बादशाहको इतनी भी आज्ञादी नहीं कि जब चाहे दो ठंडी आहें भर ले, या जब उसका दिल भर आए, तो वह आंखोंसे दो गरम आंसू गिरा ले। क्या बादशाहीमें

इतनी बेवसी है ? क्या बादशाहीमें इतनी गुलामी है ? अगर जवाब हाँ है, तो हमें यह बादशाही छोड़नी होगी ।

सेल्यूकस—देवता हुजूरपर जन्नतकी बरकतें निसार करें ! हुजूर हमारे आका हैं । हम हुजूरकी खुशी चाहते हैं । अगर हुजूर खुश न होंगे, तो हमारी खुशी मर जाएगी, हमारे हौसले मर जाएंगे, हमारे अरमान मर जाएंगे । और हमारे पाँच आगे बढ़नेसे इंकार कर देंगे ।

सिकंदर—तो बताओ, तुम्हारी खुशी (मुस्कराकर) माबदौलतसे क्या चाहती है ? माबदौलत तुम्हारी बात पर खीर फरमाएंगे ।

सेल्यूकस—अगर आलमपनाहकी इजाजत हो, तो आपका दिल बहलानेके लिए नाच गानेका इंतजाम किया जाए ?

सिकंदर—आज कल माबदौलतको गाने बजानेकी ज़रा ख्वाहिश नहीं है ।

[सेल्यूकस निराश होकर मुड़ता है । सिकंदर उसकी निराशाको भांप जाता है ।]

सिकंदर—ठहरो !

[सेल्यूकस वापस मुड़ता है ।]

सिकंदर—क्या माबदौलतने तुम्हें मायूस कर दिया है ? तो जाओ, जो तुम्हारी मरज़ी हो करो । हम जानते हैं, तुम्हें अपने मुल्क और माबदौलतकी बेहतरी मंजूर है !

[सेल्यूकस सलाम करके चला जाता है, सिकंदर उसकी तरफ़ देखता रहता है । इतनेमें परदेके पीछेसे बाजेकी आवाज़ शुरू होती है । सिकंदर भी

चला जाता है। आवाज़ ज़्यादा साफ़ और तेज़ हो जाती है। परदा उठता है। यूनानी और ईरानी लड़कियाँ नाचती और गाती हुई दिखाई देती हैं। सिकंदर आकर सिंहासन पर बैठ जाता है, और खुश होनेका यत्न करता है। यह नाच गाना आधा ईरानी है, आधा यूनानी। जब ईरानी लड़कियाँ नाचती हैं, धुन भी ईरानी हो जाती है, नाच भी ईरानी हो जाता है। जब यूनानी लड़कियाँ नाचती हैं, धुन भी यूनानी हो जाती है, नाच भी यूनानी हो जाता है। सरदार सिकंदरकी तरफ़ देखते हैं, सिकंदर नाचने वालियोंकी तरफ़ देखता है। मगर उसका दिल खुश नहीं है।]

गीत

पी शराब,

क्यों हिजाब,

आज कल शबाब है !

[लड़कियाँ यूनानी और ईरानी किस्मकी सुराहियोंसे शराब ढालकर सरदारोंको दे रही हैं, मगर चूँकि सिकंदर नहीं पीता, इसलिए सरदार भी नहीं पीते। लड़कियाँ गाती हैं—]

गीत

अजकल बहार है,

हुस्न पर निखार है,

शोस्त्रियाँ निगाहमें, आंखमें खुमार है।

ढाल जाम,

सुबहो शाम,

बन साजबाब है।

आज कल शबाब है ।

आजकल जहान भरमें छा गई जवानियां,

आजकल क्रदम क्रदम पै बिछ गई कहानियां,

क्यों हिरास,

क्यों उदास,

तू तो अपनी रातका आप आफ्रताब है ।

आज कल शबाब है ।

आज कल शबाब है ।

[सिकंदरका मन गानेमें नहीं लगता, इसलिए वह एकाएक उठ बैठता है । नाच गाना बंद हो जाता है । सिकंदर सिंहासनसे उतरकर बाहर आ जाता है । युमनीस पीछे पीछे आता है । सिकंदर मुड़कर युमनीसकी तरफ देखता है ।]

सिकंदर—युमनीस ! नाच गाना बंद करनेको ज़रूरत नहीं । अपनी और अपने आदमियोंकी खुशियां जारी रखो ।

युमनीस—आलमपनाह ! जब हुजूरकी तबीयत खुश नहीं है, तो हमारी खुशियां कैसे जारी रह सकती हैं । खादिम सिर्फ उस वक्त खुश हो सकते हैं, जब उनका आक्रा खुश हो ।

सिकंदर—और अगर आक्राकी तबीयत काबुमें न हो, तो आखिर वह क्या करे ?

युमनीस—लेकिन हमारा आक्रा ज़ूपिटरका बेटा है ।

सिकंदर—(मुस्करानेकी निष्फल कोशिश करते हुए) तो क्या तुम चाहते हो, हम हमेशा हँसते मुस्कराते रहें ?

युमनीस—यह सिर्फ मैं नहीं चाहता, हमारी तमाम फ़ौज चाहती है, फ़ौजका

एक एक सिपाही चाहता है। हमें फ़तह मिले या न मिले, मगर हमें आपकी मुस्कराहट मिल जाए। हमारे हौसले ग्वड़े रहेंगे।

सिंकदर—अगर हमारी मुस्कराहट चाहते हो, तो—(युमनीसको कंधेसे पकड़कर उसका मुंह दूसरी ओर कर देता है) जाओ, नाच गाना शुरू करा दो, और मुरभाए हुए दिलोंको फिरसे खिला दो। और हम इक्क़रार करते हैं, हमारी तबीयत खुश हो जाएगी।

[युमनीस सलाम करके मुड़ता है, सिंकदर चला जाता है। नाच गाना फिरसे शुरू हो जाता है।]

गीत
पी शराब,
क्यों हिजाब,
आजकल शाबाब है।

[परदा गिरता है। सिंकदर आता है, और कुछ उदासीसे इधर उधर टहलता रहता है। इसके बाद रूख़सानाकी तस्वीरपर से परदा उठाता है। इसके साथ ही पीछे बाजा और नाच शुरू हो जाता है। सिंकदर तस्वीरकी तरफ़ देखता रहता है।]

सिंकदर—क्या तुम जानती हो, हम क्यों उदास हैं? इसलिए कि तुम हमारे पास नहीं हो। इसलिए कि हमारी आँखोंमें तुम्हारे सिबाय दुनियाकी कोई हसीन औरत हसीन नहीं है। इसलिए कि हमारे कान तुम्हारे सिबाय और किसीका गीत सुनकर खुश नहीं होते, और यह लोग हमें मामूली औरतोंके नाच गानेसे खुश करना चाहते हैं। दुनिया

हमें फातेह समझती है, दुनिया हमें निकाटोर कहती है, हमसे डरती है, कांपती है, थरथराती है। यह कौन जानता है, कि हम एक मामूली लड़कीके सामने बेबस हो चुके हैं, और उसने हमारी रातोंकी नींद भी हमसे छीन ली है। कौन जानता है, तेरे बगैर यह दुनिया कितनी छोटी रह गई है, दुनियाकी खूबसूरती कितनी फीकी पड़ गई है। काश मैं दुनियाका बादशाह न होता, तो उड़कर तेरे पास पहुंच जाता, और तू मुझे मुहब्बतकी दुनियाका बादशाह बना लेती। हम एक दूसरेकी तरफ देखते और जीते, जीते और एक दूसरे की तरफ देखते। और दुनिया स्वर्ग बन जाती। और स्वर्ग हमारे पांव तले बिछ जाता।

[सिकंदर फिर टहलकर तस्वीरके सामने चला जाता है, और कहता है—]

सिकंदर—हमें यह तेरी खामोशी पसंद नहीं। अगर तू हमारी रेक्सनीज़ और रखसाना है, तो नाच और गा। (गुनगुनाता है) उठ जाग जवानी आती है।



आठवां दृश्य

स्थान—गरीबों की बस्ती ।

समय—सुबह

[गरीबों की बस्ती में गरीब लोग जमा हैं, और खुश हो रहे हैं । एक नवयुवती सुखमनी नाच रही है, और गा रही है, और दूसरे लोग सुन रहे हैं । सुननेवालोंमें रुखसाना भी है और ईरानी पोशाकमें है । रुखसाना औरतोंके साथ मिलकर बैठी है, जिससे मालूम होता है कि वह कुछ दिनोंसे यहीं है ।]

गीत

सावन के दिन आए रे, मंगवा दे चुनरिया ।

घर घर साज सजाए रे, रंगवा दे चुनरिया ।

नई चुनरिया रूप निखारे,

लाल चुनरिया रंग उभारे,

देखत मन ललचाए रे—मंगवा दे चुनरिया ।

[बाजा बजता रहता है, नाच होता रहता है । गनेशी और मुरली बातें करते हैं—]

गनेशी—क्यों मुरली ! देखा मेरी मां कैसा नाचे है ?

मुरली—अरे यार गनेसी ! तू नहीं जाने, मेरी नानी इससे भी अच्छा नाचे है ।

गनेशी—उंह, लेरी नानी अच्छा नाचे है ! न चुड़ैलके मुँहमें दांत, न पेटमें

आंत । (जस्तरामसे) क्यों बापू, मुरलीकी नानी मां से अच्छा नाचे है ?

जस्तराम—(गनेशीके सिरपर थप्पड़ मारकर) यह लौंडे इसे बदमास हैं कि

सारा मजा गपड़-चीथ कर देवे हैं ।

[सुखमनी फिर गाती है]

आ गया बन में रत मतवारी,
छा गया मन में प्रेम खुमारी,
जोबन शोर मचाये रे, मंगवा दे चुनरिया ।

[मुरलीकी नानी और नाना उठकर नाचते और गाते हैं]

सावन के दिन आए रे मोहें लागी नजरिया ।
सब जग मौज मनाये रे, मोहें लागी फिकरिया ।
गुजर गई जोबन की बतियां,
बीत गई रंग रस की रतियां,,
कौन गई रत लाए रे, मंगवा दे चुनरिया ।

[गाना समाप्त होते ही लड़कियां अपने अपने भाईको राखी बांधती हैं, भाई पैसे देते हैं । मुरलीकी कोई बहन नहीं है, वह रो पड़ता है । उसकी नानी उसे चुप कराती है । छुसाना हैरान होकर देखती है ।]

नानी—न रो बेटा, न रो ।

छुसाना—मगर यह रोता क्यों है ?

सुखमनी—आज राखी है ना राखी ! आज हर आदमी को उसकी बहन राखी बांधे है ।

छुसाना—और जिसकी बहन न हो ?

सुखमनी—उसे जो इस्त्री राखी बांध दे, वही उसकी बहन बन जाए है ।

रुखसाना—रस्मे हिन्द खूब अस्त ।

मुरलीका नाना—(मुरलीको चुप कराते हुए) अब भगवान पर किसीका क्या जोर है । देख ना हमारे महाराजके पास सबे सुख है, मुदा बहन उनके भी नहीं । न आज तक किसीने उनके राखी बांधी है । इस विसेमें तू और महाराज दोनों गरीब हैं ।

रुखसाना—(चौककर) क्या महाराजके बहन नहीं है ?

[सोचती है और चली जाती है । गाना फिर शुरू हो जाता है ।]



नवां दृश्य

स्थान—महाराज पुरुका महल

समय—सुबह

[महाराज पुरु और उनकी महारानी सरिता]

सरिता—मैं कहती हूँ; प्रार्थना से क्यों न कहें कि वह अमर और समरके राखी बांधकर उनकी बहन बन जाए ।

पुरु—सरिता रानी ! तुम्हारी वह बात बुरी ।

* हिन्दुस्तानकी यह रीत बहुत अच्छी है ।

सरिता—(डरकर) क्या बात महाराज ?

पुरु—जब देवो तुम हमारे मुंहकी बात छीन लेती हो । (महारानी खुश होती है ।) हम खुद तुमसे यही बात कहनेवाले थे । मगर खैर ! किसीसे कहो, प्रार्थनाको बुला लाए ।

सरिता—(मुस्कराकर) महाराजकी आज्ञाका पहले ही पालन हो चुका है !

पुरु—(मुस्कराहटको दवानेका यत्न करते हुए) हमारी आज्ञासे पहले ही आज्ञाका पालन हो गया ? अगर हम आज्ञा न देते, तो क्या होता ?

सरिता—या तो महाराज आज्ञा दे देते, या कह देते, सरिता रानी तुम्हारी वह बात बुरी, तुमने हमारे मनकी बात मुंह पर आनेसे पहले छीन ली ।

[महाराज हँस पड़ते हैं । प्रार्थना आती दिखाई देती है । महाराज और महारानी देखते हैं ।]

सरिता—प्रार्थना आ गई । (प्रार्थनासे) आओ बेटी, आओ !

[प्रार्थना आकर दोनोंके सामने खड़ी हो जाती है ।]

पुरु—हम कहें ?

सरिता—मैं कहूंगी । (प्रार्थनासे) सुन बेटी ! आज राखीका दिन है, आज बहनें भाइयोंको राखी बांधती हैं । मगर हमारे राजकुमारोंकी कोई बहन नहीं है । तुम्हारा यहां भाई नहीं है, इसलिए.....

पुरु—(बात पकड़कर) तुम जाकर उन्हें राखी बांध दो । उन्हें बहन मिल जाएगी, तुम्हें भाई मिल जाएंगे ।

सरिता—(दो राखियां देते हुए) लो बेटी जल्दी करो । कहीं ऐसा न हो

वह मुंह जुठाल लें । दौड़कर जाओ ।

[प्रार्थना चली जाती है ।]

पुरु—चलो आज तक हम बेटी वाले थे, आज बेटीवाले भी बन गये । बेटी के बिना भी घरकी शोभा नहीं होती । वह घर ही क्या, जहाँ बहन भाइयोंसे प्यारकी लड़ाई न लड़े, और देख लो, लड़ाई शुरू हो गई । आओ, जग छिपकर देखें ।

[दोनों छिप जाते हैं । प्रार्थना और राजकुमार समर दौड़ते हुए आते हैं ।]

समर—तुम दिग्वाती क्यों नहीं, क्या लाई हो ?

प्रार्थना—बाबा ! यो बार तो कहा है कि दिग्वाती हूँ, दिग्वाती हूँ । मगर आप तो सुनते ही नहीं । (इशारा करके) वहाँ बैठ जाइए ।

समर—(बैठकर) बैठ गए !

प्रार्थना—बड़ी कृपा आपकी !

समर—अब दिग्वाओ, क्या लाई हो ? हममें सबर नहीं है ।

प्रार्थना—(शरमाकर) महारानी जी ने कहा है, कि राजकुमारोंको राखी बांध दो—राखी लाई हूँ ।

समर—(हैरान होकर) राखी ?

प्रार्थना—(शरारतसे मुस्कराकर) हाँ राखी !

समर—(उदास होकर हाथ बढ़ा देता है) तो लो बांध दो ।

प्रार्थना—(राखी देकर) आप ही बांध लीजिए, मैं क्यों बांधूँ ? मैं नहीं बांधती । अगर बांध दूंगी, तो बहन बन जाऊंगी ।

समर—तो मैं महाराजसे क्या कहूँगा ?

प्रार्थना—जो मनमें आए, कह देना ।

[प्रार्थना भाग जाती है । अमर आकर ग्रासता है राग्वी उठा लेता है और उसे बड़े ध्यानसे देखता है ।]

समर—(घबराहटको छिपाते हुए) आओ भैया !

अमर—अगर आज्ञा हो, तो आज लगे हाथों एक ठो बधाई दी जाए ।

समर—(घबराकर) बधाई ? (संभलकर) तुम्हें या हमें ?

अमर—दोनोंको ।

समर—(टालने की कोशिशमें) हम मतलब नहीं समझें !

अमर—तो मैं समझा दूं, बड़े भैया ! आपको एक ठो स्त्री मिलनेकी बधाई !

मुझे एक ठो भाभी मिलने की बधाई !! और पिताजी को एक-ठो...

समर—धत् !

अमर—अब धत् कहनेसे यह बात न छिपेगी, बड़े भैया ! आज यह बात एक मेरे मुंह पर है, कल यह बात सारे शहरके मुंह पर होगी । आप किस किसको रोकेंगे ?

[अमर भागता है, समर पीछा करता है । महाराज पुरु और रानी सरिता छिपने की जगहसे हँसते हुए बाहर आ जाते हैं ।]

पुरु—हमने सोचा था, प्रार्थना हमारी बेटी बन गई । मगर प्रार्थना हमारी बेटी न बनकर बहू बन गई ।

सरिता—एक ही बात है ?

[एक नौकर आकर प्रणाम करता है]

पुरु—क्या बात है ?

नौकर—ईरानके जरनैल शहरज़ादकी बेटी रुखसाना मिलने आई है, और द्वार पर खड़ी अंदर आनेकी आज्ञा मांगती है ।

पुरु—उपस्थित करो ।

सरिता—तो मैं जाऊं । जाने यह स्त्री जो कुछ कहना चाहती है, मेरे सामने कह सके या न कह सके ?

[सरिता चली जाती है । रुखसाना प्रवेश करती है, और सिर झुकाती है ।]

पुरु—सिर न झुकाओ । भारतवर्षमें स्त्री पराए पुरुषके सामने कभी सिर नहीं झुकाती ।

रुखसाना—मेरे मुल्कमें बादशाहके सामने हर आदमी सिर झुकाता है ।
इसलिए—(फिर सिर झुकाती है ।)

पुरु—तुम उस देशकी बेटी हो, जिस पर सुल्तान दारा राज करते थे, और दारा हमारे मित्र थे । हम अपने देशमें तुम्हारा स्वागत करते हैं ।
(चौकीकी तरफ इशारा करके) बैठ जाओ । (रुखसाना बैठ जाती है) अब कहो, हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं ?

रुखसाना—मैं फुरुए हिन्दीके लिए एक तोहफ़ा लाई हूँ ;

पुरु—हम तुम्हारा तोहफ़ा खुशीसे मंजूर करेंगे ।

रुखसाना—(आगे बढ़कर), अपना दस्ते मुबारक मुझे दीजिए । (पुरु मतलब नहीं समझता) मेरा मतलब है, अपना शाही हाथ मुझे दीजिए ।

पुरु—(मुस्कराकर) दस्ते-मुबारक ! (हाथ बढ़ाकर) लो !

*पुरुका फ़ारसी नाम ।

[रुखसाना कलाई पर राखी रख देती है । पुरु हाथ खींच लेता है ।]

रुखसाना—आप डरते हैं ?

पुरु—नहीं, हम सोचते हैं ।

रुखसाना—इसमें सोचनेकी क्या बात है ?

पुरु—भाई-बहन बनना आसान है, इस संबंधको निभाना आसान नहीं है ।

रुखसाना—सोच लीजिए । मैं तो घर ही से सोचकर आई हूं ।

[पुरु सोचता है ।]

रुखसाना—मगर यह न भूलिएगा कि मैं ईरानसे आई हूं और वह फ़ैसला करके आई हूं, कि हिंदोस्तानके बादशाहको अपना भाई बनाऊंगी ।

पुरु—(सोचनेके बाद अपना हाथ आगे बढ़ाकर) बांध दो !

[रुखसाना राखी बांध देती है ।]

रुखसाना—(राखी बांधते हुए) आजसे आप मेरे भाई हैं ।

पुरु—आजसे तुम मेरी बहन हो । अच्छा ! आज तुमने मुझे पहली बार राखी बांधी है । बोलो, तुम्हें क्या दिया जाए ?

रुखसाना—मैंने चांदी सोना लेनेके लिए आपको भाई नहीं बनाया । मेरे ईरानके पास मेरी ज़रूरतकी हर चीज़ मौजूद है ।

पुरु—बहनके पास दुनिया भरके खज़ाने हों, फिर भी भाईको यही चाहिए कि राखीके दिन बहनको भेंट दे ।

[पुरु उठकर घड़ियालका रस्सा खींचता है । नौकर प्रवेश करता है ।]

पुरु—प्रबंधकर्तासे कहो, हमारी बहनको एक हजार मुहर और एक महल दिला दे ।

रुखसाना—(हैरान होकर) एक महल ?

पुरु—महाराजकी बहन सराय और धर्मशालामें नहीं रह सकती ।

[नौकर चला जाता है, रुखसाना सोचमें पड़ जाती है ।]

पुरु—हमारी बहन क्या सोच रही है ?

रुखसाना—मैं सोच रही हूं, कि आपने मुझसे यह भी नहीं पूछा, कि मेरे यहां आनेका मकसद क्या है ?

पुरु—भाईका धर्म कहता है, तू यह बात न पूछ, तू हिन्दुस्तानी है ।

रुखसाना—और बहनका फ़ज़ि कहता है, तू यह बात इसी वक्त बता दे, तू ईरानी है ।

पुरु—तो बहन बोलें, भाई सुनेगा ।

रुखसाना—मैं यहां इसलिए आई हूं, कि सिकंदरको हर खतरेसे बचाऊं ।

[पुरु हैरान रह जाता है ।]

रुखसाना—आपको अफ़सोस हुआ है ?

पुरु—हमें अफ़सोस नहीं हुआ, हमें हैरानी हुई है ।

रुखसाना—(राखी पर हाथ रखके) अगर आप चाहें, तो मैं इसे अब भी उतार सकती हूं ।

पुरु—(रुखसानाके हाथको अपने हाथसे थपथपाकर) तुम इसे बांधकर हमारी बहन बन सकती हो, इसे उतारकर पराई नहीं बन सकती । अब यह संबंध कभी नहीं टूटेगा ।

[बाहर शोर मचता है]

शोर—महाराजकी जय ! महाराजकी जय !!

[पगटा गिरता है]



दसवां दृश्य

स्थान—सिकंदरका खेमा

समय—दिन

[सिकंदर बाहर आता है और युमनीस और सेल्यूकससे पूछता है—]

सिकंदर—यह शोर काहेका है ?

सेल्यूकस—शाहको मुबारक हो, तक्षशिलाके महाराज आम्भिने हार मान ली है ।

सिकंदर—और उसके दूसरे दोस्तोंने ?

सेल्यूकस—उन्होंने भी ।

सिकंदर—मावदौलतको यह सुनकर खुशी हुई । देवताओंको कुरबानियां दो !

युमनीस—आलमपनाह ! उन्होंने हुजूरकी खिदमतमें बेशुमार तोहफे भेजे हैं ।

सिकंदर—उनको भी हमारी तरफसे ईरान और यूनानके तोहफे भेजो, और

पैगाम दो कि निक़ाटोर उनसे मिलना चाहता है ।

युमनीस—आलमपनाहके हुक्मकी पूरी पूरी तामील होगी ।

[सिकंदर टहलता है । टहलते टहलते युमनीसके सामने रुक जाता है और उससे कहता है—]

सिकंदर—युमनीस ! आज हमने हिन्दुस्तानपर पहली फ़तह पाई है । आज हम खुश हैं, और हम अपनी यह खुशी अपने आदमियोंमें भी तक़सीम करना चाहते हैं । इसलिए यह सब तोहफ़े बाँट दो । लेकिन खयाल रहे कि इस खुशीसे हमारे खेमोंकी मेखें गाड़ने वाले हिंदुस्तानी मज़दूर भी महरूम न रहने पाएँ ।

युमनीस—आपके हुक्मकी तामील होगी ।

[रंगमंचपर थोड़ी देरके लिए अँधेरा छा जाता है । इसके बाद रोशनी होती है तो दो दो मज़दूर गाते हुए दिखाई देते हैं ।]

दो मज़दूर

एक—(दूसरेसे) तू बता !

दूसरा—(पहलेसे) तू बता !

दो और मज़दूर

तीसरा—(चौथेसे) तू सुना !

चौथा—(तीसरेसे) तू सुना !

दो और मज़दूर

पाँचवाँ—(छठेसे) तुम्हको आज क्या भिला ?

छठा—(पाँचवेंसे) पहले हमको तू बता !

दो और मज़दूर

सातवां—(आठवेंसे) ऊंह !

आठवां—(सातवेंसे) ऊंह !

दो और मज़दूर

नवां—(दसवेंसे) तू दिखा !

दसवां—(नवेंसे) तू दिखा !

[दो और मज़दूर झपटकर बीचमें आ कूदते हैं ।]

नवां—आ गई नई बला ।

दसवां—मदद करें देवता ।

ग्यारहवां—अरे दोस्तो ! बता क्यों नहीं देते ? आखिर इसमें नुकसान काहेका है ?

पहला—नुकसान यह है कि यह अव्वल दरजेका बदमास है । चील-भपट्टा मारकर छीन लेगा ।

दूसरा—और हमें यह अंदेशा है, कि इसकी नजर बुरी । जिसके तोफेको देख लेगा, फिर उसकी रैर नहीं ।

ग्यारहवां—अच्छा भाई ! तुम न बताओ । हम बताते हैं । हमें मिला है यह चांदीका हाथी ।

बारहवां—और यारोंको मिला है सोनेका शेर !

ग्यारहवां—अरे बैठ, शेर मिला है । शेर तो तेरे घरमें पहले ही मौजूद है ।

पहला—अरे ! (सारा मुंह खोल देता है) इसकी जोरू सचमुच ऐसी जबरजस्त है कि शेर भी दुम दबाकर भागे ।

बारहवां—और तेरे घरमें हाथी नहीं है ?

दूसरा—अरे भाई ! (डरकर आंख बंद कर लेता है) इसकी जोरू हाथीसे

भी मोटी है ।

[सब क्रहक्रहा लगाकर हँसते हैं ।]

पहला—हमें मिली है चाँदीकी तस्तरी !

दूसरा—हमें मिला है हाथी दांतका घोड़ा !

तीसरा—हमें मिला है सोनेका साधु !

[दो मज़दूर फिर गाना शुरू कर देते हैं ।]

एक—तू बता !

दूसरा—तू बता !

दो और मज़दूर

तीसरा—तुझको आज क्या मिला ?

चौथा—पहले हमको तू बता !

दो और मज़दूर

पाँचवा—उहँ !

छठा—ऊँहँ !

दो और मज़दूर

सातवाँ—तू सुना !

आठवाँ—तू सुना !

[मज़दूर गाते गाते चले जाते हैं । सिकंदर, सेल्यूकस और युमनीस बातें करते करते प्रवेश करते हैं । दो तीन आदमी तोहफ़े लेकर जा रहे हैं । सेल्यूकसके हाथमें दो तलवारें हैं ।]

सिकंदर—माबदौलतका खयाल है, हर एकको अपना अपना हिस्सा मिल गया ।

युमनीस—आलमपनाह की मेहरबानीसे सचमुच कोई खाली नहीं रहा । यह तलवारें आपके लिए हैं ।

सिकंदर—(मुस्करा कर) तुम अपने बादशाहके सामने झूठ क्यों बोलते हो ? हम देख रहे हैं तुम दोनों अभी तक शाही मेहरबानीसे महसूस हो । तुम्हें इस झूठकी सजा मिलेगी । और तुम्हारी सजा यह है कि (मुस्कराकर) यह तलवार (युमनीससे) तुम्हें और यह तलवार (सेल्यूकससे) तुम्हें ।

[दोनों फौजी सलाम करते हैं । सिकंदर मुस्करा कर सलामका जवाब देता है ।]

युमनीस—लेकिन आलमपनाहने अपने लिए कुछ नहीं रक्खा !

सिकंदर—(गंभीरतासे) माबदौलतने अपने लिए वह चीज रक्खी है जो हिन्दोस्तानके खजानेमें भी नहीं । (कुछ ठहरकर) उम्मीद !

[सेल्यूकस और युमनीस सिर मुकाते हैं ।]

सिकंदर—इस वक्त हम खुश हैं और हर खुशीके मौकेपर हमें रुखसाना याद आ जाती है । इंतजार करो, हम उसकी तस्वीरसे मिलकर अभी आते हैं ।

[सिकंदर मुड़ता है और खेमसे निकलकर अपने सोनेके खेमेमें चला जाता है । युमनीस और सेल्यूकस एक दूसरेकी तरफ देखते हैं ।]

सेल्यूकस—देवताओंकी कसम ! हमारा बहादुर बादशाह सचमुच जूपिटर का बेटा है ।

युमनीस—इसे लड़ना भी आता है, प्यार करना भी आता है । इतनी दूर आकर भी इसे वह औरत नहीं भूली ।

[सिकंदर तेज़ीसे बाहर निकलता है ।]

सिकंदर—सेल्यूकस !

सेल्यूकस—(आगे बढ़कर) आलमपनाह !

सिकंदर—पुम्ने क्या जवाब दिया है ?

सेल्यूकस—गुलाम यह बात आलमपनाहसे कल अज़ करना चाहता था ।

सिकंदर—आज क्यों नहीं ?

सेल्यूकस—आज फ़तहका दिन है ।

सिकंदर—सिकंदरके लिए हरएक दिन फ़तहका दिन है । कहो उसने क्या कहा है, हम सुनना चाहते हैं ।

सेल्यूकस—गुलामकी जानबख़शी हो !

सिकंदर—माबदौलतको अच्छी ख़बर मिलनेमें देर हो जाए तो हो जाए, लेकिन बुरी ख़बर मिलनेमें ज़रा देर नहीं होनी चाहिए । कहो क्या बात है ? हमने तुम्हारी जानबख़शी की !

सेल्यूकस—पुम्ने जवाब दिया है, कि वह तलवार लेकर मैदान जंगमें आपसे मिलने आएगा ।

सिकंदर—(एकाएक युमनीसकी तरफ़ मुड़कर) युमनीस ! यूनानके सबसे अच्छे तोहफ़े इस शख्सके लिए रक्वो । हम ऐसे आदमियोंको पसंद करते हैं जो हमारी मातहतती मंज़ूर करते हैं । मगर हम ऐसे आदमियों की इज़ज़त करते हैं जो हमसे लड़ते हैं—

[एक तरफ सिकंदर चला जाता है, दूसरी तरफ युमनीस और सेल्यूकस चले जाते हैं ।]



ग्यारहवाँ दृश्य

स्थान—पुरुका युद्ध-मंडल

समय—संध्यासे पहले

[पुरु और दूसरे हिन्दुस्तानी राजे बैठे हैं । पुरु बोल रहा है, राजे महाराजे सुन रहे हैं । दोनों राजकुमार अमर और समर भी उपस्थित हैं ।]

पुरु—हम ऐसे आदमियोंका आदर करते हैं जो लड़ना जानते हैं, मगर हम ऐसे आदमियोंकी पूजा करते हैं जो मरना जानते हैं । इसमें संदेह नहीं, आदमीका जीवन जीवन है । मगर संसारमें कभी कभी ऐसा समय भी आ जाता है, जब आदमी मर जाए, तो अमर हो जाता है, जीता बच जाए तो मर जाता है । आज वीर-परीक्षाका वही युग आन पहुँचा है, अर्थात् यूनानके राजा सिकंदरने हमें कमजोर और कायर समझ कर हमपर आक्रमण कर दिया है ।

अभिसार—मगर क्या वह बताता है कि इस आक्रमणका कारण क्या है !

पुरु—वह कहता है वह सारे संसारको अपने पाँव पर भुका हुआ देखना चाहता है ।

कलूतराज—और जो देश उसके पांवमें झुकनेसे इंकार कर दे ।

पुरु—वह कहता है, ऐसे देशको जीता रहनेका कोई अधिकार नहीं । वह एक हाथमें आग और दूसरे हाथमें तलवार लेकर आगे बढ़ता है और हर उस देशको जो अपना सिर ऊंचा रखना चाहता है नष्ट और भ्रष्ट कर देता है । कई देशोंने हार मान ली है, कई नष्ट हो चुके हैं । अब भारतवर्षकी बारी है और सिकंदर हमारे दरवाजे पर खड़ा पुकार पुकारकर पृथ्वी रहा है, बोलो तुम्हारा क्या विचार है । महा-राजा अभिसार—

अभिसार—हमारा विचार यह है कि सम्मान और वीरता केवल एक आदमीके लिए पैदा नहीं हुई । न एक आदमीको यह अधिकार है कि वह सारे संसारको डराना और धमकाना शुरू कर दे ।

पुरु—कलूतराज ! आपको क्या पसंद है ? हारका जीवन, या सम्मान की मौत ?

कलूतराज—हमें जीतका जीवन पसंद है ।

पुरु—सलकोटराज, आपका क्या विचार है ?

सलकोटराज—हम लड़ेंगे ।

पुरु—पुच्छपत आप ?

पुच्छपत—हम जीतेंगे ।

दूसरे राजे—हम जीतेंगे ! हम जीतेंगे !!

पुरु—परन्तु दुश्मनको निर्धन समझना भूल होगी । वह सिकंदर है । और सिकंदर जीतना जानता है, हारना नहीं जानता ।

समर—भगवानकी सीधी आंख चाहिए, हम जीत कर उसे हारना भी सिखा देंगे ।

अमर—हम उसे ऐसी शिक्षा देंगे कि दूसरी बार उसे भारतवर्षकी तरफ आंख उठाकर देखनेका भी साहस न होगा ।

अभिसार आर दूसरे राजे—(ऊंची आवाज़से) भारत माता की जय !

पुरु—(एक एक शब्द पर जोर देकर) भारत माता की जय !

कलूतराज—पुरुराज ! आपने अपना विचार प्रकट नहीं किया ?

पुरु—हमारा विचार है कि अगर कोई आदमी संसारकी सुख-शांतिके लिए भय बनता है और संसारकी हर छोटी बड़ी शक्तिको अपनी उंगलीके इशारे पर नचाना चाहता है तो हर आदमीका धर्म है कि या उसका सामना करे, या अपने आपको आदमी कहना छोड़ दे । और हमारा विचार है—हम आदमी हैं ।

कलूतराज—आपने हमारे मनकी बात कही है ।

पुरु—हमारा विचार है राजा प्रजाके लिए होता है । सिकंदरका विचार है प्रजा राजाके लिए होती है । हमें ऐसे सिद्धांतोंके विरुद्ध लड़ना चाहिए, वरना न्यायकी आंगणमें हम पापी ठहरेंगे ।

कलूतराज—आपका विचार बिलकुल ठीक है ।

अभिसार—आप आगे बढ़िए, हम आपके साथ हैं ।

पुरु—तो आओ, इस समय हम आपसके भगड़े भूल जाएं, घरकी लड़ाइयां भूल जाएं, एक दूसरेकी शिकायतें भूल जाएं । और सबसे पहले उस आदमीसे निपट लें जो सारे संसारका शासक बननेके लिए हमारे घरोंका सुख और दिलोंकी खुशियां नाश करना चाहता है । अगर हमने मिलकर सामना किया तो हमारे लिए जीवन और जीत है । अगर हम अलग अलग हो गए तो हमारे लिए मलामत और मौत है ।

[सब राजे चलें जाते हैं, युद्ध-मंडलका कमरा खाली हो जाता है ।
परदेके पीछेसे गानेकी आवाज़ आने लगती है । परदा उठता है ।]

अंतर दृश्य
स्थान—बाज़ार

[कई लोग गा रहे हैं ।]

गीत

जीते देश हमारा,
जीते देश हमारा ।

भारत है घर-बार हमारा, भारत है संसार हमारा,
हम भारतके पंख-पखेरू, भारत है गुलज़ार हमारा ।
जीते देश हमारा ।

[परदा गिरता है]

अंतर दृश्य
स्थान—एक और बाज़ार

[ज़सराम और उसके साथी गाते हुए प्रवेश करते हैं]

गीत

जीते देश हमारा ।

चरबोंमें सोने की लंका, कंठमें दरियाओं की माला ,
इसका रूप अनूप मनोहर, सिर पे सुंदर ताज हिमाला ।
जीते देश हमारा ।

सिर्फदूर

[परदा गिरता है ।]

अंतर दृश्य

स्थान—मंदिर

[मुखमनी और उसकी सखियां मंदिरके सामने गा रही हैं ।]

गीत

जीते देश हमारा

महादेव तू सबका स्वामी, सब कुछ तेरे हाथ,
राह दिखा दे, जोत जला दे, आज अंधेरी रात ।

हमको तेरा एक सहारा ,

जीते देश हमारा ।

देश हमारा जुग जुग जीते, सब जग महिमा गाए,
सब जगको जीने मरने की सीधी बाट दिखाए ।

इसकी लीला अपरम्पारा,

जीते देश हमारा ।

[परदा गिरता है ।]

अंतर दृश्य

स्थान—नदीका किनारा

[श्रानानो सेनाके सिपाही गाते हुए आते हैं ।]

गीत

जाग जंग के देवता,

जाग !

जाग अपने दिल की होशरूबा आग को जगा ।

उठ अपने घर की खौफनाक आंधियां उठा ।

तू अपनी दे दुआ हमें,

दे अपना हौसला हमें,

छा जाएं सब जहान पर,

दे ऐसा वलवला हमें ।

जंग के देवता,

जंग के देवता !

—परदा—

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—सिकंदरका खेमा

समय—रात

[सिकंदर, सेल्यूकस युमनीस, एंटीगोनस, आम्बिराज सब जमा हैं ।
सिकंदर बेचैनीसे इधर उधर टहल रहा है । दूसरे सब सहमे हुए हैं ।]

सिकंदर—दो महीने गुज़र गए और हमारी फ़ौजका एक सिपाही भी दरिया
के उस पार नहीं जा सका । सेल्यूकस ! हमारा गुस्सा पागल हो
जाएगा ।

सेल्यूकस—आलमपनाहका इक़बाल दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे ।

बिला शुबह देर हो गई है, लेकिन फिर भी—

सिकंदर—(बात काटकर) तुम इसे देर कहते हो, माबदौलत इसे अपनी हार

समझते हैं। हमारे सामने आज तक कोई दरिया इतनी देर नहीं ठहर सका। (युमनीसकी तरफ मुड़कर) क्यों युमनीस ! तुम क्या कहते हो ?

युमनीस—आलमपनाह ! बरसातका मौसम है।

सिकंदर—अपनी कमजोरीको बरसातके परदेमें छिपानेकी कोशिश न करो।

तुम जानते हो, यह बरसात नहीं है, जो हमें रोक रही है। यह पुरुकी फ़ौज है, जो हमें आगे नहीं बढ़ने देती।

आम्बिराज—पृथ्वीपाल ! जब तक मैं जीता हूं, आपको चिंता करनेकी ज़रूरत नहीं। आपकी सेना आगे बढ़ेगी।

सिकंदर—मावदीलत आपकी बहादुरीसे खुश हुए ! और जब हम किसीसे खुश होते हैं या जब हम किसी चीज़को बढ़ा या ख़ुबसूरत समझते हैं तो हम उसे यूनानी नामसे पुकारते हैं। (बरतनमें शराब उँडेलते हुए) आज तक आप महाराज आम्बि थे, आजसे आपका नाम महाराज आम्फ़िस है। युमनीस लिग्व लो, (शराब पीता है) हमने महाराजका नाम तबदील कर दिया।

[युमनीस सिर झुकाता है।]

आम्बि—मैं बादशाहके दिए हुए नामकी इज़्ज़त करूंगा !

[सिकंदर शराब पीकर सीधा आम्बिके सामने आकर खड़ा हो जाता है।]

सिकंदर—क्यों राजा आम्फ़िस ! क्या यह पुरु सचमुच बहुत बहादुर है ? मावदीलतका इरादा है एक बार लड़ाईसे पहले उसे उसकी पूरी शान-शौक़तमें देख लें। लड़ाईके बाद अगर वह बच गया, तो उसकी

शान-शौक़त नहीं बचेगी । अगर उसकी शान-शौक़त बच गई, तो वह खुद नहीं बचेगा । और हम दोनोंको देखना चाहते हैं ।

आम्भि—मगर निकाटोर—

सिकंदर—(मुस्कराकर)—कोई अगर मगर नहीं । तुम्हारा निकाटोर देखना चाहता है कि वह कौन-सा पत्थर और लोहेका बना हुआ आदमी है जो आँधी तूफ़ान भूचालके सामने झुकनेसे इंकार करता है । ऐसे पत्थर और लोहेके आदमी रोज़ रोज़ नहीं पैदा होते; सैकड़ों हज़ारों सालोंके बाद पैदा होते हैं । (युमनीसके पास जाकर) युमनीस ! तैयारी करो, माबदौलतने दरियाके पार जानेका फ़ैसला कर लिया है ।

[सिकंदर चला जाता है । युमनीस पीछे पीछे जाता है ।]

ऐंटीगोनस—आसमानके देवता गवाह हैं, हमारा बादशाह सचमुच बहादुर है ।

वह जो चाहता है, करता है, उसे कोई नहीं रोक सकता ।

सेल्यूकस—अलेक्ज़ैंडर ज़िंदाबाद !



दूसरा दृश्य

स्थान—महाराज पुरका दरबार

समय—दुपहर

[महाराज पुर सिंहासनपर बैठे हैं । राजदरबारी अपनी अपनी जगह पर हैं । महाराजके पास ज़रा नीचेकी चौकियोंपर राजकुमार अमर और समर बैठे हैं । सामने एक ऊंची जगहपर सरिता, प्रार्थना और रखसाना बैठी हैं । वह सबको देख सकती हैं, उन्हें कोई नहीं देख सकता । भाट कविता पढ़ रहा है—]

भाट— सुन राजन ऐही विनय मन की, तू जो काज करै

उस काज की जय ।

नित लाज रखै तू गरीबन की, नित तोसे

गरीब निबाज की जय ।

तेरे नाम की जय, तेरे काम की जय, तेरे तख्त की जय

तेरे ताज की जय ।

तोहे राजन ऐसी असीस लगै, त्रैलोक में हो

पुरराज की जय ।

दरबारी—(एक साथ) पुरराजकी जय ! पुरराजकी जय !!

प्रधान—यूनानके महाराज सिकंदरका राजदूत महाराजकी सेवामें सिकंदरका

संदेशा लेकर आया है, और अंदर आनेकी आज्ञा मांगता है ।

पुरा—उपस्थित करो ।

[नौकर बाहर जाता है । सिकंदर खुद राजदूतके लिबासमें अंदर

आता है, यूनानी ढंगसे बांह आगे बढ़ाकर सलाम करता है, और एक पेपाइरस महाराज पुरु की सेवामें पेश करता है ।]

पुरु—(मंत्री को सिकंदरका पत्र देते हुए) मंत्रीजी ! हमारा खयाल है आप यूनानी भाषा जानते हैं । पढ़िये, क्या लिखा है ।

[मंत्री पेपाईरसको सरसरी निगाहसे देखता है । दरबारी उत्सुकतासे इंतज़ार कर रहे हैं । पुरु अपनी जगह आरामसे बैठा है । सिकंदर चुपचाप खड़ा रहता है ।]

मंत्री—इस पत्रका मतलब यह है कि निकाटोर एलेक्जैंडरकी तरफसे महाराज पुरुके नाम सेहत सलामती । महाराजको मालूम हो कि जुपिटरका बेटा एलेक्जैंडर दुनियाको जीतनेके लिए यूनानसे निकला है । लेकिन उसकी नरमदिली नहीं चाहती कि ख़वामख़वाह बेगुनाहोंका खून बहाया जाए । इसलिए वह चाहता है कि जिस तरह महाराज अम्फिस और उसके दोस्तोंने यूनानके सामने सिर झुकाकर दानाईका सुबूत दिया है और अपनी हुकूमतके अमनको बचा लिया है, उसी तरह आप भी एलेक्जैंडर को विजयी मान लें तो आपकी पदवी, इलाक़ा, अधिकार सब इसी तरह क़ायम रहेंगे । आपको सिर्फ़ दो सौ हाथी, दो हज़ार हिन्दुस्तानी तलवारें और सोनेके बीस हज़ार अंडे हर साल भेंटके तौर पर देने होंगे ।

[मंत्री पढ़ते पढ़ते रुक जाता है और कागज़के ऊपरी हिस्सेको तह करके निचले हिस्से पर आता है ।]

पुरु—(दिलचस्पीसे सुनते हुए) जुपिटरके बेटेने और क्या लिखा है ?

मंत्री—(पढ़ते हुए) आखिरमें लिखा है, इसके बदलेमें एलेक्जैंडर इस बात का ज़िम्मा लेता है कि आपके राजमें कोई शोक शोक न की जाएगी, बल्कि अगर कोई तीसरी ताकत आपके मुल्क पर हमला करेगी तो एलेक्जैंडर की फौजें आपकी मदद करेंगी ।

[मंत्री पेपाइरसको लपेट लेता है । सिकंदर पुरुका जवाब सुननेके लिए सिर उठाता है ।]

पुरु—राजदूत ! जाकर अपने बादशाहसे कह दो कि आज तक उसने हिन्दुस्तान की तलवारें देखी हैं, अब वह हिन्दुस्तानके तलवारबाज़ देखेगा ।

[दरबारी खुश होते हैं ।]

सिकंदर—मेरे बादशाहने आपकी तरफ़ मित्रताका हाथ बढ़ाया है ।

पुरु—यह मित्रताका हाथ नहीं, अभिमानका हाथ है । वह चाहता है हम एक दासके समान उसके सामने घुटने टेककर उसके हाथको चूमें और वह मालिककी तरह हमारी पीठको थपथपा दे । (घृणा से) पुरुने दूसरोंका सिर अपने सामने झुकाना सीखा है, अपना मित्र दूसरोंके सामने झुकाना नहीं सीखा ।

सिकंदर—मगर मेरा बादशाह ज़रूरत पर आपको मदद भी देगा ।

पुरु—जिस दिन पुरु बाहरके लोगोंकी मदद लेकर राज करेगा, उस दिन उसका राज राज न रहेगा, एक भिग्वारीका भीख-घर बन जाएगा ।

सिकंदर—तो मैं जाकर क्या कहूँ ?

पुरु—तुम्हारे राजाने हमारा अपमान किया है, हम इसका जवाब तलवारसे देंगे ।

सिकंदर—मैं फिर एक बार बड़े अदबसे अर्ज़ करना चाहता हूँ कि आप सोच लें, इसका नतीजा क्या होगा ? लड़ाई । और लड़ाई बुरी चीज़ है ।

पुरु—लड़ाईमें लोग जागते हैं, और उठते हैं, और जीवनके मैदानमें आगे बढ़ते हैं ।

सिकंदर—मगर जो कमज़ोर हैं वह लड़ाईमें तबाह और बरबाद हो जाते हैं । उन्हें अपने आपको बचानेके लिए अगर सिर झुकाना पड़े तो झुका देना चाहिए ।

पुरु—राजदूत ! तुम अपनी हदसे बाहर जा रहे हो, फिर भी हम तुम्हें क्षमा करते हैं । मगर क्योंकि तुम अपनी हदसे बाहर जा चुके हो, इसलिए हम भी तुमसे एक बात पृच्छते हैं । अगर हम इन्हीं शर्तोंके साथ तुम्हारे बादशाहकी तरफ़ मित्रताका हाथ बढ़ाएं, तो वह मित्रताके हाथ को आदरसे पकड़ लेगा या घृणासे भटक देगा ?

सिकंदर—मेरा बादशाह संसारको फ़तह करनेके लिए पैदा हुआ है, दोस्ती की भीख मांगनेके लिए पैदा नहीं हुआ ।

पुरु—तो पुरु भी अपने देशका झंडा ऊंचा रखनेके लिए पैदा हुआ है, उसे मिट्टीमें मिलानेके लिए पैदा नहीं हुआ । (अपने मंत्रीकी तरफ़ देखकर) मंत्रीजी ! यूनानी राजदूतके हाथ महाराज सिकंदरके लिए जवाहरोंसे जड़ी हुई सोनेकी दो रोटियां भेज दी जाएं ।

[दरबारी हैरान होकर एक दूसरेकी तरफ़ देखते हैं । अमर और समर मुस्कराते हैं । सिकंदर चौंकता है ।]

सिकंदर—(हैरानीसे चौंककर) सोनेकी रोटियां ?

पुरु—(मुस्कराकर) और लोगोंको आटे, मक्की, जौ से बनी हुई रोटियोंकी भूख लगती है, तुम्हारे सिकंदरको सोने, हीरे, हरे-जवाहरसे बनी हुई

रोटियोंकी भूख लगती है। अगर ऐसा न होता तो वह दुनियाके सुख चैनको इस तरह नास न करता फिरता।

सिकंदर—महाराज ! आप मेरे सामने मेरे बादशाहकी बेइज्जती कर रहे हैं। लेकिन जब आप मेरे बादशाहके सामने होंगे तो आपके मुंहसे बेइज्जती के यह लफ्ज न निकल सकेंगे।

पुरु—(मुस्कराकर) हम जो कुछ कह रहे हैं, तुम्हारे बादशाहके मुंहपर कह रहे हैं।

[मंत्री हैरान होता है।]

सिकंदर—आप क्या फरमा रहे हैं ?

पुरु—(एक एक शब्द पर जोर देकर) हम यह कह रहे हैं कि हमारे राज-दरबारमें इस समय सिकंदरका राजदूत नहीं, बल्कि राजदूतके भेषमें खुद सिकंदर खड़ा है।

दरबारी—(चौंककर) सिकंदर !

[मारे दरबारी हैरान होते हैं]

सिकंदर—(हैरानीसे) सिकंदर ?

[पुरु मुस्कराता है और उंगली उठाकर दुबारा कहता है—]

पुरु—हम अपने सामने सिकंदरके दूतको नहीं, खुद सिकंदरको देख रहे हैं।

क्या आप इन्कार कर सकते हैं ?

सिकंदर—नहीं, हम इन्कार नहीं करते। आपके पास देखनेवाली आंगव है।

हम उस आखकी तारीफ़ करते हैं ।

पुरु—हमारे पास काट करनेवाली तलवार भी है ।

सिकंदर—हम जब तलवारकी काट देखेंगे, हम उसकी भी तारीफ़ करेंगे ।

लेकिन इस वक्त आपको हमारी हिम्मतकी तारीफ़ करना चाहिए, जो हमें आपके दरबारमें ले आई है ।

पुरु—और अगर हम आपकी हिम्मतको बांधकर बंदी-घरमें डाल दें, तो ?

सिकंदर—दुनिया कहेगी, पुरुके पास दाना आदमीकी आख थी, दिलेर आदमीका दिल न था ।

पुरु—और अगर हम आपको क़त्ल करा दें, तो ? क्या आपको पछतावा न होगा कि आपने अपनी नादान हिम्मतका कहना मानकर अपने जीवनकी सबसे बड़ी भूल की ?

सिकंदर—हमें क़त्ल करके आपको पछतावा होगा कि आपने दुनियाको दुनियाकी दिलेरीसे खाली कर दिया ।

[पुरु क्रहक्रहा लगाकर हँसता है ।]

सिकंदर—और आपने यह भी सोचा कि अगर आपने हमें क़त्ल करा दिया तो दुनिया आपको क्या कहेगी ?

पुरु—आप दुनियाकी सुख-शांतिमें आग लगा रहे हैं । आप अपने एक मन को खुश रखनेके लिए दुनियाकी अनगिनत खुशियोंका गला घोट रहे हैं । आप जिधर जाते हैं आग और आंधी आपके साथ साथ जाती है । अगर दुनिया आपको कुछ न कहेगी, तो वह हमें क्या कह सकती है ?

सिकंदर—यह कि पुरुने अपने दरबारमें आए हुए सिकंदरको घेरकर मार डाला ! यह उसकी कायरता और कमज़ोरी थी ।

पुरु—अगर सिकंदर दिना किमी कारगाके ईरान, मिस्र और कंधारके लाग्यों निर्दोष बेटीको उनके घरमें जाकर कल्ल कर दे तो वह वीर, बहादुर और निकटोर् । लेकिन अगर पुरु अपने देशकी मर्यादा और राजकी स्वतंत्रताके लुंटेरेको सजा दे तो वह कायर और कमजोर ! न्यायकी यह युक्ति यूनानी होटोंसे बोल सकती है, बाक़ी दुनियाके होटोंसे नहीं बोल सकती । आखिर हमारे हिन्दुस्तानने आपका क्या बिगाड़ा है ! क्या हममें से किसीने आपके मुंहसे आपकी गेटी, आपके तनसे आपका कपड़ा, आपके मनसे आपकी देश-भक्ति छीननेकी कोशिश की ? क्या हममेंसे किसी ने आपकी आज़ादीको अपने मन और मर्ज़ीके सामने झुकनेपर मजबूर किया ? अगर नहीं, तो आप किस न्यायसे हिन्दुस्तान को अपना सेवक बनानेका यत्न कर रहे हैं ?

सिकंदर—जो बादशाह अपने राजको बढ़ाए बरौर मर जाता है, वह बादशाह नहीं है ।

पुरु—और जो बादशाह अपने हाथमें आए हुए दुश्मनको छोड़ दे, वह क्या है ?

सिकंदर—हम सिर्फ़ यह जानते हैं, कि एक आदमी पर इतने आदमियोंका हमला करना एक ऐसी बेदुसाफ़ी है जिसको दुनियाका कोई मुल्क जायज़ करार नहीं दे सकता, यहां तक कि आपका हिन्दुस्तान भी नहीं ।

पुरु—और क्या दुनियामें कोई ऐसा देश है, जो छोटे-छोटे कमजोर देशोंपर सिकंदरके हमलोंको ठीक समझकर उनकी प्रशंसा करे ? क्या दुनियामें कोई ऐसा देश है, जो कहे कि सिकंदरका एक लाख बीस हजार सिपाहियोंके साथ पुरुके तीस हजार आदमियों पर हमला करना बहादुरी और दिलेरी है ? क्या आप अपने नव्वे हजार सिपाहियोंसे कह देंगे, कि तुम एक तरफ़ हो जाओ, तीस हजार सिपाहियोंसे तीस हजार सिपाही ही लड़ेंगे ? क्या आपने दाराके साथ लड़ते समय देख लिया

था, कि आपकी फ़ौज दाराकी फ़ौजसे ज़्यादा तो नहीं है ? अगर नहीं तो इस समय शिकायत क्यों ? आपका दाव चल गया, आपने दुश्मन को मार दिया, आपके दुश्मनका दाव चल गया, उसने आपको मार दिया ।

सिकंदर—तो मारिए ! सिकंदर मरनेसे नहीं डरता । और आप देखेंगे कि उसकी मौत उसकी जिन्दगीसे भी शानदार होगी ।

[सिकंदर छातीपर हाथ रखकर ग्वड़ा हो जाता है ।]

पुरु—जो आदमी दुनियामें बीमारी बनकर आया है, उसकी मौत कभी शानदार नहीं हो सकती । उसकी मौतपर दुनिया आरामका सांस लेगी और शांतिकी नींद सोएगी । कहेंगी, चलो अच्छा हुआ, बीमारी टल गई ।

सिकंदर—तो हुक्म दीजिए, आपके दरबारमें हरएक आदमीके पास तलवार है । और मैं इक्क़रार करता हूं, कि अपनी तलवारको मयानसे बाहर न निकालूंगा ।

पुरु—हम आपके मनकी बात अभी पूरी कर देंते, और आपकी बोटी बोटी उड़ा देंते । मगर शोक, आप राजदूतके वेशमें हैं, और हमारा धर्म हमें इससे रोकता है ।

[सिकंदर चौंकर देखता है ।]

पुरु—जाइए ! आप स्वतंत्र हैं । हमारे देशका कोई आदमी आपका रास्ता नहीं रोक सकेगा । और अगर कोई रोकेगा, तो हमारी सेना आपकी सहायता करेगी ।

मंत्री—महाराजकी जय हो, मेरा अपराध क्षमा किया जाए ।

पुरु—(मुस्कराकर) आप क्या कहना चाहते हैं ?

मंत्री—राजनीति कहती है, हाथ आए हुए दुश्मनको छोड़ना और अपनी हार खरीदना एक ही चीजके दो नाम हैं ।

पुरु—(मुस्कराकर) भारतकी राजनीति कहती है, राजदूत बनकर जो भी आए, उससे राजदूतका सुलूक होना चाहिए, और सिकंदर राजदूतके वेशमें है । (सिकंदरसे) राजन् ! अब हमारी भेंट युद्ध-भूमिमें होगी । आशा है, उस समय आप राजदूत न होंगे, और अकेले भी न होंगे और उस समय हमारी जवानें न लड़ेंगी, तलवारें लड़ेंगी ।

[पुरु उठता है, सारा दरबार खड़ा हो जाता है ।]

पुरु—(मिहामनसे उतरकर मंत्रीसे) मंत्रीजी ! महाराज सिकंदरको राजमेंना की रक्षामें नदीके किनारे तक पहुंचा दीजिए ताकि उसे कोई नुकसान न पहुंचा सके । (सिकंदरसे) यूनानाधीश नमस्कार !

सिकंदर—महाराज पुरु ! हमने आज तक किसीको सलाम नहीं किया । लेकिन आप बहादुर हैं । हम आपको सलाम करते हैं ।

[सिकंदर पुरुको सलाम करता है ।]



तीसरा दृश्य

स्थान—सिकंदरकी छावनी

समय—संध्या

[आगे आगे सिकंदर आता है, पीछे पीछे सेल्यूकस, युमनीस, एंटीगोनस, और आम्बिराज आते हैं। सिकंदर बोल रहा है, बाक़ी सुन रहे हैं।]

सिकंदर—हमने पुरुको देख लिया और हम खुश हुए। यह पुरु आदमी नहीं है, मीनार है, पहाड़ है, आसमान है। वह मुकनेके लिए पैदा नहीं हुआ। अगर वह मुक जाएगा, तो दुनिया गरीब हो जाएगी।

एंटीगोनस—शाहने ऐसे लफ़्ज़ आज तक किसी दुश्मनके लिए इस्तेमाल नहीं किए।

सिकंदर—हमने ऐसा दुश्मन आज तक नहीं देखा। वह बहादुर भी है, समझदार भी है, शरीफ़ भी है—वह हाथमें आए हुए दुश्मनको माफ़ भी कर सकता है।

युमनीस—तो अब हमें क्या हुक्म होता है ?

सिकंदर—अपनी सारी ताक़तें जमा कर लो, हमने पहाड़से टकराने और आस्मानको मुकानेका फैसला कर लिया है।

सेल्यूकस—आप हुक्म दीजिए, हम मानेंगे। हमारी फ़ौजमें एक भी आदमी ऐसा नहीं, जो आपके हुक्मपर मरनेको तैयार न हो।

सिकंदर—हम खुश हुए। मगर याद रखो, पुरुका खून भी गरम है और पुरुके पछे भी मज़बूत हैं।

आम्बि—मुझे पूर्ण आशा है, पुरु आपके सम्मुख कभी न उठर सकेगा। वह बातोंका धनी है, तलवारका धनी नहीं है।

सिकंदर—(मुस्कराकर) मालूम होता है, महाराजने अभी तक पुरुको नहीं देखा ।

आम्भि—मुझे क्षमा किया जाए, मैंने पुरुको देखा है ।

सिकंदर—आपने देखा होगा, समझा न होगा । पुरुको समझनेके लिए सिकंदरके दिमागकी ज़रूरत है । और सिकंदरने यह समझा है, कि पुरु जान दे देगा, आन न देगा । वह बहादुर है ।

आम्भि—मगर सवाल यह है कि क्या उसकी वीरता आपकी वीरताके सामने ठहर सकेगी ?

सिकंदर—अगर आपकी ताकत हमारे साथ है, तो नहीं ठहर सकेगी ।

आम्भि—तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरी सेनाका एक एक योद्धा आपके साथ है !

सिकंदर—और हम आपसे वादा करते हैं, कि जीतके बाद आपका पूरा खयाल रक्खा जाएगा ।

आम्भि—मुझे आपपर विश्वास है ।

सिकंदर—अब आप आराम कीजिए, आप थक गए होंगे ।

[आम्भिका प्रस्थान]

सेल्यूकस—महाराज वफ़ादार है ।

सिकंदर—वफ़ादार न कहो । आम्भि वफ़ादार नहीं है, आम्भि वतन-फ़रोश है । हम उससे नफ़रत करते हैं ।

सेल्यूकस—शाहने ठीक फ़रमाया है ।

सिकंदर—लेकिन हमें उसकी ज़रूरत है, इसलिए हम उसके मुंहपर उसकी तारीफ़ करते हैं । जो आदमी कामयाब होना चाहे, उसमें अपना दिल और इरादा छिपानेकी ताकत होनी चाहिए । हर वक्त और

हर जगह सच बोलनेवाले आदमीकी मरनेके बाद पूजा हो सकती है, मगर वह अपनी ज़िंदगीमें हमेशा नाकामयाब रहता है ।

[सिकंदर टहलता है । एंटीगोनस, सेल्यूकस, युमनीस सिर झुकाए खड़े रहते हैं । सिकंदर एंटीगोनसके सामने जाकर रुक जाता है ।]

सिकंदर—एंटीगोनस ! हम इस लड़ाईमें जीतेंगे । क्योंकि इसवक्त हिन्दुस्तान में ऐसे कमीने आदमी भी हैं, जो अपना फ़ायदा देखते हैं, अपने वतनका फ़ायदा नहीं देखते; जो बेगानोंको अपना समझते हैं, अपने भाइयोंको अपना नहीं समझते । उनकी नज़र कमज़ोर है, वह दूर तक नहीं देख सकते । न वह इतनी मोटी बात समझते हैं कि उनकी जीतका मतलब उनके वतनकी हार है । न वह यह जानते हैं, कि वह अपनी रूह बेचकर अपने जिस्मका आराम ख़रीद रहे हैं । मगर जो अपनी रूह बेचता है उसके जिस्मको हमेशाका आराम कभी नहीं मिलता । बिकी हुई रूह जिस्मको भी बेच देती है । और जो अपने जिस्म और रूहका मालिक नहीं रहता, आस्मानके देवता उसकी किस्मत में गुलामी लिख देते हैं, और वह शेरोंके पांव तलेकी मिट्टी चूमता है ।

एंटीगोनस—शाहने बजा फ़रमाया है ।

सिकंदर—और गुलामके लिए दुनियामें न आराम है, न इज़्ज़त है । वह सिर्फ़ दूसरोंकी खिदमत करता है और दूसरोंकी मज़ी देखकर अपना सिर झुकाता है । देवताओंका शुक है, हमारे यूनानमें आम्भि जैसे गुलाम नहीं हैं ।



चौथा दृश्य

स्थान—महाराज पुरका बाग

समय—सवेरा

[प्रार्थना फूल तोड़ रही है और साथ ही साथ गा रही है । राज-कुमार समर छिपकर सुन रहा है ।]

गाना

खिलो खिलो मतवारी कलियों खिलने की रत आई आज ।

कुदरत ने कलियों के कानों में यह बात सुनाई आज ।

खिलो खिलो—

इस रत की हर बात सुहानी,

हर दिन गीत हर रात कहानी,

इस बाँके हरियाले जुग में जग हरियाली छाई आज ।

खिलो खिलो—

नगर नगर जंगल बन महके

देख देख रमिया मन चहके

सब के सिर पर भूम रही है जीवन की अंगड़ाई आज ।

खिलो खिलो—

[प्रार्थना चक्र लगाती है और भूम भूमकर गाती है । समर तालियाँ बजाता हुआ प्रवेश करता है । प्रार्थना शरमा जाती है, और गाना बंद कर देती है ।]

समर—हमने तुम्हारा सुंदर चेहरा देखा था, तुम्हारा मीठा गला न देखा था । आज वह भी देख लिया ।

प्रार्थना—जो छिप छिपकर किसी पराई स्त्रीका प्रेमगीत सुनता है, वह पुरुष पाप करता है । अगर महाराजसे उस आदमाकी शिकायत की जाए, तो महाराज उसे दंड देते हैं ।

समर—तो करो शिकायत महाराज से । हमें भी आज तक कभी दंड नहीं मिला ।

प्रार्थना—(क्रोधसे) अच्छा करती हूं ।

[प्रार्थना क्रोधसे मुड़कर चलने लगती है । समर पीछे जाता है ।]

समर—(आवाज देते हुए) प्रार्थना !

प्रार्थना—(चलते चलते) प्रार्थना नहीं सुनती ।

समर—(पीछा करते हुए) मुझे तुमसे एक बात कहना है ।

प्रार्थना—मुझे महाराजसे आपकी शिकायत करना है ।

[समर आगे बढ़कर रास्ता रोक लेता है ।]

समर—सिर्फ एक बात, प्रार्थना !

प्रार्थना—(कंधे हिलाकर बनायी क्रोधसे) कहिए, क्या कहते हैं आप !

समर—(एकाएक प्रार्थनाके गीले कपड़े देखकर) यह तुम्हारे बाल गीले क्यों हैं ?

प्रार्थना—मैं शाही बागकी नदीमें नहाकर आई हूं ।

समर—मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि तुम आजकल नदीमें न नहाया करो ।

प्रार्थना—क्यों न नहाया करूं । इतना पहरा जो है ।

समर—नदीमें मगरमच्छ हैं । और वह मगरमच्छ जवान लड़कियोंको पकड़ लेते हैं ।

प्रार्थना—पुराने समयमें मगरमच्छ नदीमें रहते थे, आजकल ज़मीन पर आ गए हैं ।

समर—तो गोया हम मगरमच्छ हैं ।

प्रार्थना—हां, अगर आपने किसी लड़कीको पकड़ लिया है, तो आप भी मगरमच्छ हैं ।

समर— (तंग आकर) भई तुम तो हर समय हँसती रहती हो ।

प्रार्थना— (गम्भीरतासे) अब नहीं हँसती ।

समर—मेरा यह मतलब नहीं ।

प्रार्थना—आपकी एक बात अभी हुई या नहीं ? अगर नहीं, तो कर लीजिए । मुझे और भी काम है ।

समर—बात यह है कि हम आजकल एक सुपना देखा करते हैं ।

प्रार्थना— (आँखें नीची करके) जी !

समर—वह सुपना बड़ा मनोहर और मीठा है ।

प्रार्थना— (उसी तरह सिर झुकाए हुए) जी !

समर—हमने वह सुपना महारजको भी सुना दिया है ।

प्रार्थना— (बड़ी घबराहट से) जी !

समर—उन्होंने कहा है जिसके सुपने देखते हो जाकर उसीको सुनाओ ।

प्रार्थना— (बड़ी शर्म से) अच्छा !

समर—तो कहो हम उनसे क्या कहें ?

प्रार्थना—जो आपका मन कहें ।

समर—और हम क्या समझें ?

प्रार्थना—जो आपका मन आपको समझाए ।

समर— (मुस्कराकर) हम समझ गए ।

प्रार्थना—अच्छा ।

समर—बताओ, तुम क्या समझी हो ?

प्रार्थना— (गिलखिलाकर हँस पड़ती है) कुछ भी नहीं ।

समर—प्रार्थना ! तुम्हें हमारी बातका जवाब देना पड़ेगा ।

प्रार्थना— (हँसकर) नहीं देना पड़ेगा ।

समर—हम कहते हैं तुम्हें जवाब देना पड़ेगा ।

प्रार्थना—तो वहाँ बैठ जाइए ।

समर— (बैठकर) लो बैठ गए ।

प्रार्थना—अब आंग्रे बंद कर लीजिए ।

समर— (आंग्रे बंद करके) लो बंद कर लीं ।

प्रार्थना—जब तक मैं न कहूँ, बंद रखिए ।

[प्रार्थना अपने फूल समरके सामने रख देती है, और आप धीरे धीरे परे चली जाती है ।]

प्रार्थना— अब आंग्रे खोल लीजिए ।

[यह कहकर प्रार्थना भाग जाती है । समर आंग्रे खोलकर फूल देखता है और उसका चेहरा चमक उठता है ।]

समर— (ऊँची आवाज़से चिल्लाकर) प्रार्थना ! प्रार्थना !!

[महारानी सगिता और राजकुमार अमर प्रवेश करते हैं ।]

सरिता— (आते-आते मुस्कराकर) प्रार्थनाने चार ही दिनोंमें अपना जादू चला दिया । क्या बात है ?

समर— (घबराकर) कुछ नहीं, माताजी !

अमर— (शगरतसे) माताजीको सब कुछ मालूम है ।

समर— (क्रोधसे) अमर ! तुम चुप रहो जी, तुम छोटे हो ।

अमर— (मज़ाक से) भगवान ! अगले जन्ममें मुझे छोटा न बनाना ।
जो उठता है वही दवा लेता है ।

सरिता— (समरसे) उसने क्या कहा, हाँ या नहीं ?

[समर जवाब नहीं देता ।]

सरिता—पगला ! मांसे भी शर्म !

अमर—माताजी ! होठोंसे हँसी निकल रही है, इसलिए आप ही समझ जाइए । पृच्छनेकी क्या ज़रूरत है ।

सरिता—तो इसका अर्थ है -हाँ । मैंने तो महाराजसे पहले ही कहा था, लड़की चाँद है, बेटा सूरज है, जोड़ी मिल जाएगी । तो बेटा ! अब प्रार्थनासे न मिला करो । हमारे देशकी यही रीत है ।

अमर— (समरसे) कहिए, बहुत अच्छा माताजी ।

[समर मुस्कराता है ।]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—गरीबोंकी बस्ती

समय—दुपहर

[सुखमनी गा रही है, लोग सुन रहे हैं ।]

गीत

फुलवारन लागे चोर, मालनियां सोय रही ।

इन चोरन सों चौकस रहियो,

छा रहे चारों ओर...मालनियां सोय रही ।

दूजे चोर धियारा खोजें,

साया देख सहारा खोजें

फुलवारनके चोर निराले,

उनको जैसी रैन धियारी—वैसी उजली भोर,

मालनियां सोय रही ।

दूजे चोर चुरावें चाँदी,

सोना हीरा मानक मोती,

फुलवारनके चोर भयानक

सोने चाँदीकी का बतिया, तन मन लेत मरोर,

मालनियां सोय रही ।

एक आदमी—यह सुखमनी हमारे गांवकी सोभा है । आसीरवाद देओ,
जीती रहे ।

[मुरली गनेशीको इशारा करता है ।]

गनेशी—(आगे बढ़कर) जीती रह, ओ मां जीती रह ।

[सुखमनी हँस पड़ती है, दूसरे लोग भी हँस पड़ते हैं । जसराम क्रोध से देखता है, गनेशी पीछे हट जाता है ।]

बूढ़ा शंकरसरन—(जसरामसे) भैया ! तूने पिछले जनममें मोती दान किए होंगे जो तुम्हारी जेब ऐसे ऐसे मिसरी गीत गाए है ।

सुखमनी—(हिरान होकर) मिसरी गीत !

जसराम—काका ! कानकी भैल निकलवाओ । जिसे तुम मिसरी गीत बता-
वत हो वह वाचन तोला पाव रस्ती हिन्दुस्तानी गीत है ।

बूढ़ा शंकरसरन—अरे भैया ! ऊटसे भी बड़ा होई गवा मुदा अक्कल इत्ती भी नाहीं । (उंगलीसे इशारा करके) जौन गीत मिसरी जैसा मीठा होय, उसे हम मिसरी गीत कहत हैं । यहाँ कोई छोकरी गुड़-गीत गाए है, कोई मिरची गीत गाए है । मुदा तेरी स्त्री ...

जसराम—(लोगोंसे) काका शंकरसरन बुझिया गया मुदा परमेसरकी सौं इसकी बातें अब भी जवान हैं ।

बूढ़ा शंकरसरन—क्या सुखमनीके खवसूरत गलेसे भी ज्यादा ?

[लड़कियां हँस पड़ती हैं ।]

सुखमनी—(शरमाकर) चलो हटो काका ! तुम तो ऐसी बातें बनाए हो कि आदमीको सरम आ जावे ।

[शरमाकर चली जाती है ।]

एक आदमी—(व्यंगसे) जरा सरमाए है ।

गनेशी—(पास आकर) बापू मां सरमाए क्यों है ?

जसराम—(बच्चेके मुंहकी तरफ़ देखकर) इसलिए कि उसके घर तेरे जैसा हुसियार बेटा टपक पड़ा । (उसका मुंह दूसरी तरफ़ घुमाकर) भाग बदमास !

बूढ़ा शंकरसरन—(सिरसे पगड़ी उतारकर और बैठकर) अरे भैया ! हमारी खोपड़ीपर भी जरा हाथ फेर दे ।

[सुखमनी काकी को लेकर आ जाती है, जसराम चौंकता है । सुखमनी इशारा करती है कि चुप रहो । इस बीचमें बूढ़ा शंकरसरन कहता जाता है—]

बूढ़ा शंकरसरन—जरा हाथ फेर दे ।

जसराम—काहे काका ! हाथ काहे फेर दूं ?

बूढ़ा शंकरसरन—इसलिए कि हमारे दिन भी फिरे और हमरी बुढ़ी भी हमसे मिसरी-बातें करे । उसकी जहर-बातोंके मारे तो हमारा नाकों दम है । परमेसरकी सौं ।

सुखमनी—काका ! अगर काकी ए बात सुन ले तो... ?

बूढ़ा शंकरसरन—तो जो मरजी आए कहे । हमें उसका जरा भी खोप नहीं है ।

बूढ़ी काकी—क्या कहा ?

बूढ़ा शंकरसरन—(डरसे खड़ा होकर और पगड़ी सिरपर रखते हुए) मैं कहे था—मैं कहे था—मैं तुम्हारी परसंसा करे था । यह आजकलके छोकरे छोकरियां तुम्हारी सान-सोभा क्या जानें ?

[सब लोग हँसते हैं, सुखमनी फिर गाना शुरू करती है और टेकके

बोल बोलती है —]

सुखमनी—फुलवारन लागे चोर, मलनिया सोय रही ।

एक नौजवान—भैया जसराम ! जाने हो सुखमनिया फुलवारनका चोर
किसे कहे है ?

जसराम—भाई हमें काह खबर ? हमें आम खानेसे मतबल है, पेड़ गिननेसे
काह मतबल ? सुखमनी गीत गाए है, हमारा मन खुस होए है ।
बस हम तो इत्ता ही जाने हैं !

बृद्ध शंकरसरन—अबे गोवर गनेस ! इन काली मूछोंसे क्या पृछे है, इस
सफेद डाढ़ीसे पृछ । ऐसा उत्तर दूं कि तेरे मनका दुआरा खुल जाए ।

जसराम—काका बुद्धा होय गवा है, मुदा घालकी खाल निकाले है । हाँ
काका ! कहो फुलवारनका चोर कौन है ?

बृद्ध शंकरसरन—(लोगोंसे) अगर यह गीत सुखमनिया गाए, तो फुलवारनका
चोर जसराम । अगर हमारी जोरू गाए, तो इसारा सीधा हमारी तरफ ।

नौजवान—काका क्या कविता करे है ।

दूसरा नौजवान—एकदम झूठ !

पहला नौजवान—एकदम सच !

दूसरा नौजवान—झूठ है !

पहला नौजवान—सच है !

जसराम—अरे भैया ! महाभारत काहे करत हो ? गनेसीकी मांसे पृछ लो ।

सुखमनी—फुलवारी हिन्दुस्तान है, यवन राजा सिकंदर चोर है । वह हमारी
मान-मर्यादा चुराने आया है । मुदा हमारे लोग-बाग आराम की नींद
सोय रहे हैं ।

बृद्ध शंकरसरन—अपने राम समझे थे, प्रेमका गीत है ।

सुखमनी—देसके संकट-समय जो प्रेमका गीत गाए है, वह भी पाप करे

है, जो प्रेमका गीत सुने है, वह भी पाप करे है ।

जसराम—अरे वाह री गनेसीकी मां ! तूने तो लाखपणाकी बात कह दी !

[गनेशी पिताकी तरफ ध्यानसे देखता है ।]

सुखमनी—(सब लोगोंसे) घर तजो, घरका आराम तजो और देसकी रखवाके लिए आगे बढ़ो ।

बूढ़ी काकी—जिन्दा रह बेटा ! जिन्दा रह !

गनेशी—(मुस्लीसे) अरे देखा ! तेरी नानी मेरी मांको 'जिन्दा रह' कहे है । वाह री मां ! तूने मुझे खुस कर दिया ।

सुखमनी—(सब लोगोंसे) प्रतिज्ञा करो, सौगंध खाओ कि दुश्मनको जान दे दोगे, देसकी आन न दोगे ।

एक नौजवान—तू जरा चिन्ता न कर, देसकी खातिर हमारी जान भी हाजिर है ।

सुखमनी—बातें तो सब करे हो, मुदा कुछ करके दिखाओ तो जानें ?

बूढ़ा शंकरसरन—वह ! अभी तूफान दूर है । नजदीक आने दे, फिर देखना हमारे बाजू क्या क्या करते हैं !

[अंतिम शब्दपर तूफान शुरू हो जाता है, मिट्टी उड़ने लगती है ।]

छठा दृश्य

स्थान—नदीके किनारे सिकंदरका तम्बू

समय—रात

[तूफानकी आवाज़ आ रही है, सिकंदरका खेमा उड़ा जाता है ।
सिकंदर, सेल्यूकस, युमनीस और आम्बि हैरान होकर सिर उठाते हैं।]

आम्बि—महाराज ! बड़ा भारी तूफान है ।

सिकंदर—आप इसे तूफान कहते हैं, हम इसे कुदस्तका तमाशा कहते हैं ।

जब कुदस्त चुपचाप पड़े पड़े उकता जाती है तो अपना जोश, जवानी और गुस्सा लेकर खड़ी हो जाती है और खेलती है—हमें यह खेल खूबसूरत मालूम होता है ।

आम्बि—(हैरान होकर) आपको यह तूफान खूबसूरत मालूम होता है ?

सिकंदर—(जवाब न देकर) तूफान सोती दुनियाको हिलाता है, जगाता है और भंभोड़कर खड़ा कर देता है । और मावदौलत हर ऐसी चीज़ की कद्र करते हैं, जो दुनियाको मुक़ाबिलेके लिए मजबूर कर दे । हम इसे ही ज़िन्दगी समझते हैं । (युमनीस की तरफ़ मुड़कर) युमनीस लिख लो, यह फ़िक्ररे तुम्हारे बादशाहकी ज़िन्दगीकी तशरीह हैं ।

[बड़े ज़ोरका तूफान आता है, तम्बू उखड़ जाता है ।]

आम्बि—महाराज तम्बू उखड़ जाना बहुत बड़ी बदशगुनी है ।

सिकंदर—नहीं हमारे दोस्त ! यह बदशगुनी नहीं, आस्मानके कभी न मरने वाले देवताओंका इशारा है कि अब हमारे आराम और इंतज़ार

करनका वक्त नहीं है—हम आज नदी पार करेंगे ।

सेल्यूकस— (सहमकर) लेकिन आलमपनाह । इस आँधी और अँधेरे में ?

सिकंदर—आँधी चिरायको बुझा सकती है, मगर आँधी आगको नहीं बुझा सकती । आग आँधीमें और भी भड़कती है ।

आम्भि—मगर यूनानाधीप ! फिर भी—

सिकंदर— (आम्भिके कंधोंको थपथपाकर) जो आदमी यूनानसे दुनिया जीतने निकला है, वह आँधी और अँधेरेसे नहीं डरता । चलो, तीस हजार सिपाही लेकर पंद्रह बीस मील ऊपर चलें और तूफानके परदे में नदी पार कर लें । उधरसे हम हमला करेंगे, इधरसे (युमनीसकी तरफ इशारा करके) सुबहके वक्त युमनीस नदी पार करके हमला कर देगा । (युमनीस सामने आ खड़ा होता है और सिर झुकाता है ।) युमनीस ! अपने आदमियोंसे कहो, यूनानके देवताओंको कुर्बानियाँ दें और सूरजके जागनेसे पहले पहले पुरुषो जीतनेके लिए तैयार हो जाएं । आँधी और अँधेरेके ऐसे ऐसे मौके कभी कभी मिलते हैं ।

[बड़े जोरका तूफान आता है । सिकंदर और उसके साथी तूफानमें छिप जाते हैं । परदा उठता है ।]

अंतर दृश्य

स्थान—नदीका दूसरा किनारा

समय—रात

[हिन्दुस्तानी सिपाही एक चट्टान पर खड़ा पहरा दे रहा है ।]

सिपाही— (आँधीके जोरमें चिल्लाकर) सावधान ! सावधान !! दुश्मन नदी न पार कर ले । सावधान !

[बिजली चमकती है । सिपाहीके पास एक वृक्षको आग लग जाती है । मगर सिपाही उसी तरह खड़ा रहता है और चिल्लाता है ।]

सिपाही— (चिल्लाकर) सावधान ! दुश्मन नदी पार न कर ले । सावधान ! सावधान !

दूसरा सिपाही—अरे भाई ! जब नदी शांत थी, उस समय किसीने नदी पार नहीं की, तो इस वृक्षानमें किस भाईके लालची हिम्मत है, जो पांव भी बढ़ा जाए ।

अंतर दृश्य

स्थान—नदीका पहला किनारा

समय—रात

[सिकंदर और उसके सिपाही]

सिकंदर—हममें हिम्मत है, सबसे पहले नदीमें हम उतरेंगे । और तुम्हें यकीन दिलाते हैं कि नदी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी । नदी जानती है कि हम जुपिटरके बेटे हैं । वह हमें अपनी लहरोंकी गरदन भुकाकर रास्ता देगी और हमारे सिपाही हमारे साथ आएंगे ।

[सिकंदर अपना घोड़ा नदीमें डाल देता है ।]

एंट्रीगोनस— (चिल्लाकर) एलेक्जेंडर ज़िन्दावाद !

सिकंदर— (मुड़कर और उंगली मुंहपर रखकर) चुप ! यह वक्त नारे लगानेका नहीं है । यह वक्त चुपचाप नदी पार करनेका है ।

[सिकंदर आगे बढ़ता है, दूसरे सिपाही भी नदीमें कूद पड़ते हैं ।]



सातवां दृश्य

स्थान—महाराज पुरूका महल

समय—सवेरा

[महाराज पुरू, उनके पुत्र अमर और समर, सेनापति, मंत्री इत्यादि बातें करते प्रवेश करते हैं । बाहर तूफ़ानके गरजनेकी आवाज़ें आती हैं ।]

पुरू—अगर वह सिपाही हिन्दुस्तानी हैं, तो निश्चय ही वह महाराज अभिसार की सेना होगी । मगर फिर भी हमें सोते नहीं रहना चाहिए । (अमरसे) अमर ! तुम दो हजार योद्धा और एक सौ रथ लेकर चले जाओ । अगर यह अभिसारकी सेना हो, तो स्वागत करो । अगर सिकंदरके सिपाही हों, तो लड़ाई करो । (अमर सिर झुकाता है) हमें तुम्हारे भुज-बल और बुद्धि-बल दोनोंपर भरोसा है । भारत माताकी जय हो ।

अमर—भारत माता की जय हो ।

[अमर, समर, सेनापति सब चले जाते हैं, महाराज पुरु चुपचाप खड़े रहते हैं । मंचपर आँधेरा छा जाता है । आँधेरेमें लड़ाईकी आवाजें आती हैं । लड़ाईके नारे सुनाई देते हैं और उसके बाद रोशनी हो जाती है । महाराज उसी जगह चुपचाप खड़े हैं । उनके सामने समर, प्रार्थना, रुखसाना, महारानी सरिता, मंत्री, सेनापति, और दूसरे सिपाही हैं ।]

पुरु—कौन कहता है, अमर मर गया । वह मरा नहीं, मरकर अमर हो गया है । और हम खुश हैं, कि वह हमारा बेटा था ! उसने हमारी लाज रख ली है । हमें उसपर अभिमान है । उसने अपने देशको अपना लहू दिया है ।

[प्रार्थना और रुखसाना रो पड़ती हैं ।]

पुरु—हम देखते हैं, आप लोगोंकी आंखोंमें आंसू छलक रहे हैं । मगर अपने महाराजकी तरफ़ देखो, उसकी आंखें जीतकी आशासे चमक रही हैं । अपने महाराजकी बातें सुनो, वह तुम्हें लड़नेको उभार रहा है । अपने राजकुमारका हँसता-मुस्कराता चेहरा याद करो और हँसते-मुस्कराते युद्ध-भूमिमें जाओ । भगवान तुम्हें हँसते-मुस्कराते वापस लाएगा । भारत माता की जय हो !

सब—भारत माताकी जय हो !

[महाराज पुरु और रानी सरिताको छोड़कर बाक़ी सबका प्रस्थान । सरिताके चेहरेपर मुर्दानी और आंखोंमें आंसू हैं । महाराज पुरु धीरे धीरे उसके

पास आते हैं और अपना हाथ उसके कंधेपर रख देते हैं । सरिता उनकी तरफ देखती है और फूट फूट कर रो पड़ती है ।]

पुरु—हम जानते हैं तुम उसकी मां हो । मगर हम भी उसके पिता हैं । हमारी तरफ देखो, हम तो नहीं रो रहे हैं । (आंखें रोकनेकी कोशिश करते हुए) और सरिता रानी ! रोनेसे होता क्या है ? जो चला गया वह चला गया, अब उसे कोई शक्ति वापस नहीं ला सकती ।

सरिता—इसी बातका तो रोना है महाराज !

पुरु—(आंखें पीकर) रोनेसे हिम्मत टूटती है । और आज हमें हिम्मत की जितनी आवश्यकता है उतनी आज तक कभी न थी । प्रतिज्ञा करो, अब तुम नहीं रोओगी ।

सरिता—(रोते रोते) नहीं रोऊंगी, महाराज, नहीं रोऊंगी । मगर फिर भी... अच्छा प्रतिज्ञा करती हूं (रोते रोते) अब नहीं रोऊंगी । (और जोरसे रोकर) अब नहीं रोऊंगी । मगर महाराज ! अमर चला गया है ! (रोकर) हमारा अमर !

पुरु—(पीठपर हाथ रखकर) हमारा अमर कहीं नहीं गया । वह हमारे दिलमें रहेगा । उसे वहांसे ब्रह्मा भी नहीं ले जा सकता ।

[महाराज पुरु सरिता रानीको सहारा देकर अंदर ले जाते हैं]

अंतर दृश्य

स्थान—महलके अंदर

समय—सवेरा

[पुरु फौजी लिबासमें बैठा है । रखसाना, प्रार्थना और समर खड़े हैं ।

एकाएक पुरु सिंहासनसे उठता है और कहता है—]

पुरु—हमें बधाई दो, हम आज अपनी शेरनी मांका दूध सफल करनेके लिए जा रहे हैं।

रुखसाना— (भरे हुए गलेसे) खुदा आपकी हिफाजत करे।

प्रार्थना—परमात्मा हमारे देशकी रक्षा करे।

रुखसाना— (शिकायती लहजेमें) प्रार्थना ! भैयाकी सेहत मलामती मांग। यह होंगे तो गिरे हुए मुल्कको भी उठा लेंगे।

[नौकर महाराजको लोहेका टोप देता है।]

प्रार्थना—देशके सामने राजा कोई वस्तु नहीं। देश बचा रहे, राजे बहुत मिल जाएंगे। देश हार जाए, राजे दास बन जाएंगे।

[समर मुस्कराता है।]

पुरु— (लोहेका टोप सिरपर पहनते हुए) हमने प्रार्थनाकी बात पसंद की। (कहकहा लगाकर) हमारी बहनको हमारे प्यारने कायर बना दिया है। (टांगें नौकरके सामने कर देता है। नौकर लोहेकी पेटियां पहनाता है।) प्रार्थना ! हम लड़ाईमें जा रहे हैं। और लड़ाईमें सब कुछ हो सकता है। हो सकता है कि हम सांभके समय जीतके डंके बजाते हुए आएंगे। हो सकता है रातका चाँद हमें न देखे, हमारी लाशको देखे। इसलिए कोई इच्छा हो तो बताओ, हम उसे पूरा करेंगे।

प्रार्थना—मेरी इच्छा यह है कि देशके दुश्मनोंको नष्ट कीजिए।

पुरु—हम इसके लिए लहूकी अंतिम बूंद भी निछावर कर देंगे।

(रुखसानासे) अब हमारी बहन क्या चाहती है ?

रुखसाना—मैं चाहती हूँ, मेरे यहाँ आनेका मकसद पूरा हो ।

पुरु—यानी सिकंदर जीत जाए !

[प्रार्थना चौककर देखती है ।]

रुखसाना—नहीं, सिकंदर ज़िंदा रहे ।

[प्रार्थना हैरान होती है ।]

पुरु—हम तुम्हें वचन देते हैं, सिकंदर हमारे हाथसे नहीं मरेगा ।

थिना—क्यों नहीं मरेगा ? उसने हमारे देशपर चढ़ाई की है । उसने हमारे दो हजार योद्धा मारे हैं । उसने हमारे अमरको क़त्ल किया है । और वह हमारा सिर झुकाना चाहता है । वह हमारे देशका दुश्मन है ।

समर—(आगे बढ़कर)—तो यह बेगम साहिबा इसीलिए आई थीं, कि हमारे घरमें रहकर हमारे घरका साँप बनें ।

पुरु—समर ! तुम राजकुमार हो, तुम्हें अपने आपसे बाहर न होना चाहिए । क्षमा माँगो ।

समर—(नम्रतासे) महाराज मुझे क्षमा करें ।...मगर (जोशको दबानेका व्यर्थ यत्न करते हुए) जिसने हमारा अमर मारा है, जो हमें अपना दास बनाना चाहता है, जिसकी आंख हमारी आन पर है, जिसका दांत हमारी दौलत पर है, जो अमनका डाकू, शांतिका लुटेरा है, वह आपके हाथसे क्यों नहीं मरेगा ? और आप उसे क्यों नहीं मारेंगे ?

पुरु—इसलिए कि (अलमारीसे खोलकर राखी निकालता है) हम रुखसानासे राखी बँधवा चुके हैं । अब वह हमारी बहन है । अगर सिकंदर मरेगा

तो हमारी बहन विधवा हो जाएगी । (राखीको अलमारीमें रखकर अलमारी बंद कर देता है) कहनेको यह राखी रखसानाने पुरुको बांधी है । मगर ध्यानकी आंखोंसे देखो तो यह राखी ईरानने हिन्दुस्तान को बांधी है ! (टहलते हुए) हमें अफसोस है, हिन्दुस्तान ईरानकी सहायता नहीं कर सका, मगर वह ईरानकी एक बेटीकी सहायता कर सकता है—और वह करेगा—और जो आदमी इतना भी न करे, वह आदमी नहीं आदमीकी शक्लमें पशु है ।

प्रार्थना—तो क्या इसका यह मतलब है कि आप जान बूझ कर अपने देश को हरा देंगे ?

पुरु—जो आदमी अपने देशको हरा दे, वह पशुसे भी गिरा हुआ है ।

[सरिता रानीका प्रवेश]

पुरु—(सरिताके सामने खड़े होकर) प्रार्थना चाहती है हम अपने देशके लिए लड़ें । हमने उसे विश्वास दिलाया है कि अपने देशके लिए हम अपने लहूकी अंतिम बूंद भी न्योछावर कर देंगे ! रखसाना चाहती है हम सिकंदरको न मारें । हमने उसे वचन दिया है कि सिकंदर हमारे हाथसे न मरेगा । अब तुम बताओ तुम क्या चाहती हो ।

सरिता—मैं कुछ नहीं चाहती, क्योंकि जो कुछ मैं चाहती हूं वह दुनिया का कोई आदमी नहीं कर सकता । (आंखोंमें आंसू आ जाते हैं)

पुरु—सरिता रानी ! होशमें आओ । आज युद्ध है ।

सरिता—(रुंधे हुए गलेसे) भगवान अब आपको जीवन और जीत दे । मेरा बेटा तो जीवन और जीत दोनोंको छोड़कर चला गया ।

[एकाएक नगाड़ेकी आवाज़ आती है । पुरु जल्दी जल्दी बाहर

निकल आता है। समर भी पीछे पीछे जाता है।]

सरिता—खुसाना ! दौड़कर जा, तूने अपने भाईको टीका नहीं लगाया।

[खुसाना आरतीका थाल और फूलोंका हार लेकर जल्दी जल्दी जाती है और गिर पड़ती है। सरिता उसे उठाती है और उदास होकर बैठ जाती है।]



आठवां दृश्य

स्थान—युद्ध-भूमि

समय—सवेरा

[जंगी बाजा बजनेकी आवाज़ें आ रही हैं। हिन्दुस्तानी सिपाही हथियार लेकर आते हैं और पंक्तियोंमें खड़े हो जाते हैं। इन सिपाहियोंमें समर भी है, जसराम भी है, बृद्धा शंकरसरन भी है और दूसरे तमाम आदमी भी हैं जिनको हम पहले देख आए हैं। सारा रंगमंच सिपाहियोंसे भर जाता है। इतनेमें महाराज पुरु एक ऊँची जगहपर खड़े होते हैं और सिपाहियोंसे कहते हैं—]

पुरु—आग और आंधीके बने हुए वीरो ! तुम उन सूरमाओंकी संतान हो,

जो मैदानमें मरना जानते थे, मैदानसे भागना नहीं जानते थे । तुम उस देशके निवासी हो जिसने अपने लाखों पुत्र कटवाए हैं, मगर अपनी आन और अपने आदरका भंडा कभी नीचे नहीं झुकने दिया । तुम उस धरतीसे पैदा हुए हो, जिसके ऊपर कभी किसी विदेशी दुश्मन के पांव नहीं पड़े । और आज एक लोभ और अहंकारका अंधा विदेशी आकर तुमसे कहता है, यह भंडा पृथ्वीपर गिरा दो और मेरे सामने सिर झुकाना स्वीकार कर लो, वरना मैं तुम्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दूंगा । बोलो, क्या तुम उसकी बात सुनोगे ?

सिपाही—(एक स्वरसे) कभी नहीं ! बिल्कुल नहीं !

पुरु—अगर तुम अपनी और अपने देशकी मर्यादा बचाना चाहते हो, अगर तुम अपने पूर्वजोंके सिर स्वर्गमें ऊंचे रखना चाहते हो तो अपने शरीर और आत्माकी सम्पूर्ण शक्तियां लेकर आगे बढ़ो, आप मरकर भी दुश्मन का मुंह तोड़ दो, और दुनियाको दिखा दो, कि तुम अपनी जातिके लिए जीना ही नहीं जानते, मरना भी जानते हो । तुम्हारे पूर्वज तुम्हारी वीरता स्वर्गमें देखेंगे और तुम्हें आशीर्वाद देंगे ।

सिपाही—(चिल्लाकर) हर हर महादेव !

[जंगी बाजा बजता है ।]

अंतर दृश्य

स्थान—युद्ध-भूमिका एक दूसरा हिस्सा

समय—सवेरा

[सिकंदर अपनी फौजके सामने खड़ा उसे लड़ाईके लिए उभार रहा है । सिपाही चुपचाप खड़े हैं ।]

सिकंदर—मैदान जंगके शाह-सवारो ! आज कुदरत एक बार फिर तुम्हारी आजमाइश करना चाहती है और आज आस्मान एक बार फिर तुम्हारी दिलेरीका तमाशा देखना चाहता है । दिलोंमें जोश, दिमागोंमें दीवानगी और होठोंपर यूनानी देवताओंके नाम लेकर आगे बढ़ो, और दुनियाकी तारीखके सफ़ोंपर न मिटनेवाले हरफ़ोंमें लिख दो, कि दुनिया की ताक़त और तंदुरुस्ती तुम्हारे पांवमें सिर झुकानेके लिए पैदा हुई है । आस्मान पर जुपिटर तुम्हारे साथ है, ज़मीनपर जुपिटरका बेटा तुम्हारे साथ है ।

सिपाही—(चिल्लाकर) एलेक्जेंडर ज़िंदाबाद ! एलेक्जेंडर ज़िंदाबाद !!

सिकंदर—ज़रा खयालकी आंखोंसे देखो, तुम्हारा यूनान तुमसे कितनी दूर है, और यक्रीन करो कि अगर तुम हारकर वापस जाना चाहो, तो रास्तेके कंकड़ और पत्थर ही तुम्हारे पांवको पकड़ लेंगे । और अगर कोई बचकर यूनानमें पहुंच गया तो यूनान उसपर अपनी इज़्ज़तके दरवाज़े बंद कर लेगा और वह अपनी और यूनानकी आंखोंमें ज़लील होकर जिएगा, ज़लील होकर मरेगा । इसलिए आगे बढ़नेमें ज़िंदगी है, और पीछे हटनेमें मौत है । बोलो, तुम क्या चाहते हो ? ज़िंदगी या मौत ?

सिपाही—(चिल्लाकर) हम ज़िंदगी चाहते हैं !

सिकंदर—(मुस्कराकर) नहीं, तुम इज़्ज़त चाहते हो, तुम फ़तह चाहते हो, तुम आगे बढ़ना चाहते हो । और दुनियाकी खुशियां तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं ।

सिपाही—(चिल्लाकर) हम आगे बढ़ेंगे ! हम आगे बढ़ेंगे !!

[जंगी बाजा बजता है ।]

अंतर दृश्य

स्थान—युद्ध-भूमिसे हटकर एक टीला ।

[महारानी सरिता, राजकुमारी प्रार्थना, रखसाना और राजमहलकी दूसरी स्त्रियां टीलेपर बैठी लड़ाई देख रही हैं । नीचे टीलेके किनारेपर एक दूरदर्शी हाथमें दूरबीन लिए लड़ाई देख रहा है और लड़ाईका हाल बयान कर रहा है ।]

दूरदर्शी— (दूरबीनसे देखते हुए) महाराजका हाथी आगे बढ़ रहा है । समरका घोड़ा साथ है । सेनापति पीछे है । उसके पीछे हाथियोंकी पंक्ति है ।

[लड़ाईके बाजे बजनेकी आवाज़ आती है ।]

दूरदर्शी—हमारे महाराज आगे बढ़ रहे हैं ? दुश्मन पीछे हट रहा है । दुश्मन और पीछे हटा, और पीछे हटा । हमारी सेना आगे बढ़ रही है ।

[लड़ाईके बाजे बजनेकी आवाज़ आती है ।]

दूरदर्शी—यूनानी सेना ठहर गई है । हमारी सेना भी ठहर गई है । दोनों सेनाएं एक दूसरेको देख रही हैं । (खुशीके साथ जल्दी जल्दी) वह हमारी सेना आगे बढ़ी, वह तीर चले । एक...दो...तीन यूनानी गिरे । और गिरे, और गिरे । अब समर आगे बढ़ा । अब हमारा सेनापति आगे है ! हमारी सेना आगे बढ़ रही है... यूनानी पीछे हट

रहे हैं । (महारानी सरिताकी तरफ देखकर) महारानी, शुरू अच्छा हुआ है । हम जीत जाएंगे ।

[महारानी सरिता और प्रार्थना हाथ बाँधकर ईश्वरसे प्रार्थना करती हैं । रुखसाना बैचैनीसे प्रतीक्षा करती है । एक सवार प्रवेश करता है, और महारानी सरिताके सामने पहुँचकर सिर झुकाता है ।]

सरिता—कहो समाचार-वाहक ! क्या समाचार है ?

सवार—हमने समझा था, दुश्मनकी सेना बहुत ज्यादा है । मगर दुश्मनकी सेना हमसे बहुत ज्यादा नहीं है, ज्यादासे ज्यादा दुगुनी होगी । और इतनी सेनासे हम हारनेवाले नहीं हैं । आशा है, जीत हमारी होगी ।

सरिता—तुने मुझे खुश किया है, मैं तुझे खुश करूँगी ।

सवार—भारत माताकी जय हो ।

[सवार नमस्कार करके चला जाता है । दूरदर्शी दूरबीनसे देखता है, और चुप रहता है ।]

रुखसाना—(अधीरतासे) अब क्या हो रहा है ?

दूरदर्शी—(दूरबीनसे देखते हुए) दोनों तरफकी सेनाएं गुत्थम-गुत्था हो गई हैं । दोनों तरफके सिपाही लड़ रहे हैं । दोनों तरफके सिपाही मर रहे हैं । महाराजका हाथी आगे बढ़ रहा है...यह क्या हो गया ? ...यह क्या हो गया ?...भगवान हमारी सहायता करे...मगर...

प्रार्थना—(आगे बढ़कर) क्या हुआ है दूरदर्शी ? जल्दी बोलो, क्या हुआ है ?

दूरदर्शी—(घबराहटसे) महाराजका हाथी घिर गया । चारों तरफ दुश्मन

हैं। समरका पता नहीं, सेनापतिका पता नहीं। महाराजका हाथी अकेला है। और...और...उनके चारों तरफ दुश्मन हैं...

रुखसाना—(आगे बढ़कर) अब क्या हुआ है दूरदर्शी? अब क्या हुआ? जल्दी बोलो।

दूरदर्शी—महाराज धिरे हुए हैं। मुझे चिंता है, कहीं...

सरिता—चिंता न करो। चिंता करनेसे कुछ नहीं होता।

[दूरदर्शी देखता रहता है। बाजोंकी आवाज़ आती रहती है।]

दूरदर्शी—वह हमारे सिपाही आ रहे हैं...वह आ रहे हैं...वह आ रहे हैं...वह आ गए...वह महाराजके पास पहुंच गए...अब महाराजको कोई भय नहीं। महाराज भयसे बाहर हैं।

मायना और रुखसाना—(खुश होकर) शुक्र है।

दूरदर्शी—महाराज आगे बढ़ रहे हैं। दुश्मन पीछे हट रहा है।

[रंगमंचपर अंधेरा हो जाता है। अंधेरेमें बाजोंको आवाज़ आती है। 'हरहर महादेव' और 'एलेक्जैण्डर ज़िंदाबाद' के नारे सुनाई देते हैं। थोड़ी देरमें रोशनी हो जाती है और दूरदर्शी दूरबीनसे लड़ाईका हाल देखते हुए नज़र आता है। सामने सूरज डूबनेवाला है। एक सवार प्रवेश करता है और सरिताके सामने झुककर नमस्कार करता है।]

सरिता—कहो समाचार-वाहक ! क्या समाचार है ?

सवार—सिकंदरकी बहुतसी और सेना आ गई है। यह सेना हमारी सेनासे चार-पांच गुना है। अबतक आशा थी कि हम जीतेंगे, अब आशंका है, शायद हम हार जाएं।

सरिता—हारका नाम न लो । भगवानपर भरोसा रखो । भारत माता की जय हो ।

सवार—(झुककर) भारत माताकी जय हो ! (मुड़कर चला जाता है ।)

[दूसरा सवार प्रवेश करता है और सरिताके सामने झुककर नमस्कार करता है ।]

सरिता—क्या समाचार है ?

सवार—सिकंदरने महाराजपर आक्रमण किया था, और सिकंदरके घोड़ेने महाराजके हाथीपर अगले पाँव जमा दिए थे । मगर महाराजने एक ऐसा भाला मारा कि सिकंदरका घोड़ा वहीं मर गया, और सिकंदर धरतीपर गिर पड़ा । उसके पास शस्त्र नहीं थे । उसके पास घोड़ा नहीं था । और वह घबराया हुआ था ।

रुखसाना—(घबराकर) फिर क्या हुआ ?

सरिता—(रुखसानासे) अधीर न हो रुखसाना ! लड़ाईमें अधीर नहीं हुआ करते ।

सवार—महाराज हाथीसे क्रुद पड़े और भाला लेकर सिकंदरपर लपके । सिकंदर पृथ्वीपर था, उसके पास हथियार न थे । महाराज अपने पाँवपर खड़े थे, और उनके हाथमें भाला था । हाथ हवामें ऊँचा उठा । सिकंदरकी मौतमें संदेह न था । मगर जाने क्या हुआ ? महाराजका हाथ हवा ही में रह गया । ऐसा लगता था जैसे वह कुछ सोच रहे हैं, जैसे उन्हें कुछ याद आ गया है, जैसे वह सिकंदरको नहीं मारना चाहते ।

रुखसाना—(हाँपते हुए) तो महाराजने सिकंदरको नहीं मारा ?

सवार—(तोतेकी तरह) नहीं । महाराज उसी तरह चुपचाप खड़े रहे ।

इतनेमें सिकंदर उठ बैठा, उसके सिपाही पहुंच गए, और सिकंदर उचककर एक घोड़ेपर सवार हो गया । महाराजने सिकंदरको हाथमें पाकर भी क्यों नहीं मारा, यह कोई नहीं जानता ।

प्रार्थना—(मुस्कराकर) रुखसाना ! सिकंदर बच गया है ।

रुखसाना—महाराज महापुरुष हैं ।

सवार—(सिर झुकाकर) भारत माताकी जय हो !

सरिता—भारत माताकी जय हो !

[सवार मुड़ता है और चला जाता है । प्रार्थना, रुखसाना, सरितारानी दूरदर्शीकी तरफ देखती हैं ।]

दूरदर्शी—(दूरबीनसे देखते हुए) लड़ाई हो रही है । दोनों सेनाएं गुत्थम-गुत्था हो रही हैं । साफ़ साफ़ कुछ दिखाई नहीं देता ।

[जंगी बाजोंकी आवाज़ आती है ।]

दूरदर्शी—महारानी ! अंधेर हो गया...हमारे हाथी चिंघाड़ते हुए भाग रहे हैं और हमारे ही सिपाहियोंको कुचल रहे हैं...हमारे सेनापति सिपाहियोंको रोकनेका यत्न कर रहे हैं...मगर उनके किए कुछ नहीं बनता । हमारे हाथी भाग रहे हैं । दुश्मनकी सेना बढ़ रही है...हमारे सिपाही हमारे हाथियोंके पांव तले आ आकर मर रहे हैं...अब कोई आशा नहीं...हम हार रहे हैं...हम हार रहे हैं...हमारे सिपाही भाग रहे हैं...

रुखसाना—(दोनों हाथ उठाकर) ऐ खुदा ! मेरे भाईकी इज्जत बची रहे । मेरे भाईका सिर ऊंचा उठा रहे ।

[जंगी बाजेकी और शोर-शराबेकी आवाज नज़दीक आती जाती है ।]

दूरदर्शी—(दूरबीनसे देखते हुए) हमारे हाथियोंकी सूँडें किसीने काट डाली हैं, और वह क्रोध और कष्टसे अपने ही आदमियोंको कुचल रहे हैं...हमारी हारमें अब कोई संदेह नहीं । महारानी ! हम हार गए ! हम हार गए !

प्रार्थना—(दूरदर्शीके पास जाकर घबड़ाहटसे) ज़रा देखो, महाराज कहाँ हैं ?

दूरदर्शी—महाराजका कोई पता नहीं । उनके हाथीका भंडा कहीं दिखाई नहीं देता ।

सरिता—(आकाशकी ओर आँखें उठाकर) भगवान ! क्या तेरी यही इच्छा है ?

[एक सवार आकर सरिताके सामने सिर झुकाता है ।]

सरिता—क्या समाचार है ?

सवार—(सिर झुकाकर) हम हार गए, महारानी ।

सरिता—(भरपूर हुए कंठसे) महाराजका क्या हाल है ?

सवार—मुझे आज्ञा मिली है कि आपको राजमहलमें पहुँचा दिया जाए ।

सरिता—(क्रोधसे) मैंने पूछा है, महाराजका क्या हाल है ?

सवार—महावत मर गया था ! महाराज घायल हो गए थे । महाराजकी देह हाथीसे नीचे लटक रही थी और उनके घावोंसे लहू बह रहा था । ऐसे संकटके समयमें भी हाथी महाराजकी रक्षा कर रहा था, और उन्हें घरकी ओर ला रहा था कि इतनेमें महाराज आम्बिने आगे बढ़कर महाराजके हाथीकी सूँड काट डाली और उसके पाँवोंपर भाले मारे ।

रुखसाना—(प्रार्थनाकी ओर क्रोधसे देखकर) फिर ?

सवार—हाथी भट्टा गया । मगर वह अपना धर्म नहीं भला । वह जानवर था, मगर वह शायद यह जानता था, कि उसका महाराज सुसीवतमें है । वह बेतहाशा भागा, मगर उसपर चारों ओरसे तीरोंकी वर्षा होने लगी । स्वामिभक्त हाथीके शरीर पर सैकड़ों तीर लगे । तब उसने एक बार अपनी कटी हुई सूंड आकाश की ओर उठाई । शायद भगवानसे कहा कि मैंने अपना स्वामिधर्म पूरा कर दिया है । फिर वह धरतीपर बैठ गया और बैठा रह गया । इसके बाद महाराज आग्नि और उनके चार मित्रोंने आकर महाराजके बेहोश शरीरको अपने बसमें कर लिया । और मुझे सेनापतिने आज्ञा दी, कि महारानीको महलमें पहुंचा दिया जाए ।

सरिता—मैं यहीं रहूंगी । मैं महलमें नहीं जाऊंगी ।

सवार—(सिर झुकाकर) मगर महारानी...

सरिता—(बात काटकर) मुझे महारानी न कहो; अब मैं महारानी नहीं हूं ।

प्रार्थना—आप निराश न हों, महारानी ! भगवानकी राहें न्यायी हैं । वह सब कुछ कर सकता है ।

सरिता—(पागलोंकी तरह हवामें देखते हुए) वह सब कुछ कर सकता है, मगर जो हार जाए उसे वह भी नहीं जिता सकता ।

रुखसाना—खुदाके लिए यह भी मुश्किल नहीं महारानी ! वह हारे हुएको भी जिता सकता है ।

सरिता—तुम आशाकी भूठी बातें क्यों करती हो ? मैं तुम दोनोंसे बड़ी हूं, और मैं तुम दोनोंसे ज्यादा जानती हूं । आजसे भारतकी दासता आरंभ हो गई है ।

[टीलेके नीचेसे हिन्दुस्तानी सिपाही भागे हुए चले जा रहे हैं । एक और सवार ऊपर आता है और सरिता रानीके सामने सिर झुकाता है ।]

सरिता—क्या तुम्हारे पास आशाका कोई शब्द है ?

सवार—(सिर झुकाकर धीरेसे) नहीं महारानी ! मेरे पास आशाका कोई शब्द नहीं । दुश्मन हमसे कई गुना अधिक थे । हमारे भाग्य फूट गए हैं ।

सरिता—तो जाओ जाकर अपने और अपने साथियोंके मुंहपर कालिल मल लो ।

सवार—मुझे आज्ञा मिली है, आपको महलमें पहुँचा दिया जाए ।

सरिता—मैं यहीं रहूंगी । अब मेरा महलमें क्या है ?

सवार—मगर हमें आज्ञा है...हमारे सेनापति...

सरिता—तुम्हारे सेनापति बड़े हैं, या मैं ? (थोड़ी देर रुककर) जाओ !

[दोनों सवार चले जाते हैं ! टीलेके नीचे शोर मचता है । एकाएक महाराज आम्भि आठ दस सिपाहियोंके साथ ऊपर आ जाता है और सिपाहियोंसे कहता है—]

आम्भि—पकड़ लो ! यह महाराजा पुरुके घरकी स्त्रियाँ हैं ।

रुखसाना—यह कौन है ?

सरिता—यह आम्भिराज हैं ।

प्रार्थना—(आगे बढ़कर) सावधान ! अगर तुमने इधर आँख उठाकर भी देखा तो तुम्हारे लिए बुरा होगा ।

आम्भि—(देखकर) कौन ? प्रार्थना ? तू सामनेसे हट जा । मैं इस समय तेरी बात न सुनूँगा ।

प्रार्थना—आपने उस दिन मेरी बात न सुनी थी, मगर आपको आज मेरी बात सुननी पड़ेगी ।

आम्भि—(महारानी सरिता और प्रार्थनाकी तरफ इशारा करके

पकड़ लो इन सबको ।

[सिपाही आगे बढ़ते हैं ।]

प्रार्थना—सावधान ! तुम सिपाही हो और हिंदू हो । हिंदू सिपाही कभी स्त्रियों पर आक्रमण नहीं करता । जो करता है वह सिपाही नहीं है, कसाई है ।

[सिपाही रुक जाते हैं ।]

आम्बि—(क्रोधसे) मैं कहता हूँ, पकड़ लो । सिकंदर तुमसे खुश होगा, मैं तुम्हें पुरस्कार दूँगा ।

प्रार्थना—आम्बि, तू मेरा भाई है । और बहन भाईका नाम लेकर गद्गद हो जाती है । मगर तूने अपने आपको इतना गिरा लिया है, कि तेरी बहन तेरा मुंह देखना भी पाप समझती है । मैं समझती थी कि तू देशद्रोही है, तूने देशके दुश्मनोंके साथ सुलह की है, तूने अपने आत्माको बेचा है । मगर तू एक विदेशीको प्रसन्न करनेके लिए एक देशवासीकी स्त्रियां पकड़कर दुश्मनके सामने पेश कर देगा, मुझे यह स्वप्नमें भी आशा न थी । तूने संसारके सामने मेरा सिर झुका दिया है । अब मुझे तुम्हको अपना भाई कहते हुए भी शर्म आती है । भगवान तुम्ह जैसा भाई किसी बहनको न दे ।

[आम्बि सिर झुका लेता है ।]

प्रार्थना—(सिपाहियोंसे) और तुम सैनिक हो, तुमने सेनामें भरती होनेके समय प्रतिज्ञा की थी कि तुम अपने देशकी, अपने ब्राह्मणोंकी, अपनी

स्त्रियोंकी रक्षा करोगे। तुमने अपने देशको दास बना दिया, तुमने अपने ब्राह्मणोंकी बात नहीं सुनी। क्या अब तुम अपनी बहनों और माताओंकी इज्जतको भी चाँदी-सोनेके चार सिक्के लेकर बेच दोगे? तुम मानव हो, तुम दानव नहीं हो। तुमने युद्ध-धर्म ग्रहण किया है, मगर तुमने अपनी सोच-समझकी शक्तिको तिलांजलि नहीं दे दी। तुम सोचो तुम्हारा धर्म क्या है?

[सिपाही कोई जवाब नहीं देते, वह चुपचाप खड़े रह जाते हैं।]

प्रार्थना—अब बोलो, क्या तुम अपनी माओं और बहनोंको पकड़कर और उन्हें अपने विदेशी राजाके हवाले करके इस जन्मका सुख प्राप्त करोगे? या इस (आम्हिकी ओर इशारा करके) नर-पिशाचकी आज्ञासे मुंह मोड़कर परलोककी शांति प्राप्त करोगे? तुम आप फ़ैसला करो, तुम आज अपना मनुष्यत्व बेचकर इसकी खुशी खरीदोगे, या इसे नाराज करके मनका संतोष खरीदोगे?

आम्ह—(क्रोधमें आकर अपने सिपाहियोंसे) मैं तुम्हारा राजा हूँ। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, इन्हें पकड़ लो।

प्रार्थना—(जोशसे) यह तुम्हारा राजा नहीं, यह सिकंदरका नौकर है, यह देशद्रोही है, यह आज भारतवर्षका सबसे बड़ा पापी है। इसके साथ बात करना भी पाप है।

आम्ह—(तलवार निकालकर) तू मेरी बहन है, मगर तेरी बातें बहनोंकी सी नहीं हैं। सबसे पहले मैं तुम्हें समाप्त करूँगा। तुम्हें मारना धर्म है।

प्रार्थना—(अपनी तलवार निकालकर) तू मेरा भाई नहीं है, मेरी माँका गला सड़ा फोड़ा है। तुम्हें मारना पुण्य है।

[दोनों लड़नेको तैयार होते हैं, सिपाही बीचमें आकर खड़े हो जाते हैं और भाई बहनको लड़नेसे रोक लेते हैं ।]

एक सिपाही—(आम्भिसे) आप हमारे स्वामी हैं, हमने आज तक आपकी हर आज्ञाको सिर झुकाकर सुना है। मगर आज...(धीरेसे) आपको हमारी बात सुननी होगी। आप इनमेंसे किसीको भी हाथ नहीं लगा सकेंगे। यह पाप नहीं होगा, महापाप होगा। आप यह नहीं कर सकते। हम आपको यह नहीं करने देंगे।

आम्भि—(कुछ सोचकर) आज तुम लोगोंने मेरा अपमान किया है। मगर खैर—मैं तुम्हारी बात स्वीकार करता हूँ। चलो वापस चलें।

[आम्भि और उसके सिपाही मुड़ते हैं, और टीलेंसे उतर जाते हैं ।]

परदा

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—सिकंदरका शाही तम्बू

समय—संध्या

[सिकंदर अपने दरबारमें सिंहासनपर बैठा है। आम्भि, सेल्यूकस, युमनीस और दूसरे दरबारी अपने अपने स्थानपर बैठे हैं। दरबारियोंमें समर मी है जो यूनानी भेषमें है। सिकंदरके सिरके ऊपर हकीम अरस्तू और कवि होमर की तस्वीरें लगी हैं। एकाएक सिकंदर खड़ा होता है, और बोलने लगता है। दरबारमें सन्नाटा छा जाता है।]

सिकंदर—जीतके अमर देवताओंकी तारीफ़ हो, जिन्होंने हमारी मदद की, और हम आजमाइशकी आगसे खरा सोना बनकर निकले। हम अपने तमाम सिपाहियोंकी बहादुरी और हिम्मतकी तारीफ़ करते हैं, जो आज

की खुशियोंमें शामिल हैं। लेकिन इनसे भी ज़्यादा हम उन बहादुरों की तारीफ़ करते हैं, जो आजकी खुशियोंमें शामिल नहीं, मगर जिनकी रूहें मौतके परदेके पीछेसे हमारी खुशी देखती हैं और देख देखकर मुस्कराती हैं। यूनान ज़िन्दाबाद ! यूनानो फ़ौज ज़िन्दाबाद ! यूनानी शहीद ज़िन्दाबाद !

दरबारी—(चिह्लाकर) एंलेक्ज़ैन्डर ज़िन्दाबाद ! निकाटोर ज़िन्दाबाद ! यूनानी शहीद ज़िन्दाबाद !

[समर चुप रहता है। उसके साथका दरबारी उसकी तरफ़ हैरानीसे देखता है, और समझनेका यत्न करता है कि इसने जीतका जयकारा क्यों नहीं लगाया ?]

सिकंदर—माबदौलतने इजाज़त दी, आजकी कारवाई शुरू की जाए।

[सिकंदर बैठ जाता है। युमनीस हाथसे इशारा करता है, इसके साथ ही बाजा बजने लगता है। समर बड़े ध्यानसे देखता है। पुरु चार यूनानी सिपाहियोंके पहरमें प्रवेश करता है। वह इस समय बंदी है, मगर उसका तेज अभी तक वैसा ही है, जैसे हारसे पहले था। पुरु आकर सिंहासनके सामने रुक जाता है। समर तलवारपर हाथ रखता है। सिकंदर खड़ा हो जाता है और इसके साथ ही सारा दरबार खड़ा हो जाता है। बाजा बंद हो जाता है। समर हैरान होता है। पुरु शान और शांतिसे खड़ा रहता है, जैसे उसे इस दरबारसे कोई वास्ता नहीं।]

सिकंदर—आओ हमारे बहादुर दुश्मन, हमारा दरबार आपका स्वागत करता है, हम आपका स्वागत करते हैं। हमारा स्वागत कबूल करो।

पुरु—अगर स्वागतका मतलब (हाथकी हथकड़ियां दिखाकर) हथकड़ियां पहनाना है, तो हम मानते हैं, आपने स्वागतकी सारी शैंतें पूरी कर दी हैं । वर्ना—(बात अधूरी छोड़ देता है ।)

सिकंदर—(नाराज़ीसे) सेल्यूकस ! महाराजको हथकड़ी किसने लगाई है ? हम चाहते हैं, दरबारके बाद इसका पता लगाया जाए और जिसने यह गलती की हो, उसे सज़ा दी जाए । (महाराजसे) महाराज ! हमें अपने आदमियोंकी गलतीका अफ़सोस है । उनसे गलती हुई है ।

[सिकंदर बैठ जाता है, दरबारके लोग भी बैठ जाते हैं । इस बीचमें सेल्यूकस पुरुकी हथकड़ी उतार देता है । समरके चेहरेपर खुशी भलकती है । वह शांतिकी साँस लेता है ।]

सिकंदर—महाराज पुरु ! आपने देखा, हमारी तक्रदोर कितनी बड़ी है ? जिसने आपको एक दिनमें जीत लिया ।

पुरु—(निर्भयतासे) हमें आपकी तक्रदोरने नहीं जीता, हमें आपके धोखेने जीता है । अगर आपकी तक्रदोर इतनी ही बड़ी थी, तो आपने दिनके उजालेमें नदी क्यों पार नहीं की ? और आपने रातके अँधेरेका क्यों सहारा लिया ।

सिकंदर—प्यार और लड़ाईमें धोखा-धड़ी सब कुछ ठीक है ।

पुरु—तो क्या राजदूतके भेषमें आए हुए बादशाहको मारना भी ठीक है !

सिकंदर—यह आपने हमपर मेहरबानी नहीं की थी, अपनी ताक़तपर भरोसा किया था । और आपको मालूम हो, यह आपकी गलती थी । क्या आप अपनी गलतीपर आज अफ़सोस नहीं करते ?

पुरु—अगर हम ऐसी गलतियां करके एक हज़ार बार पकड़े जाएं, और इसके बाद हमें फिर अवसर मिले, तो हम फिर भी यही करेंगे । और

इसके लिए हमें ज़रा भी पछतावा नहीं होगा। पछतावा कायरताके लिए होता है, पछतावा वीरताके लिए नहीं होता। वीरता कभी नहीं पछताती।

सिकंदर—हमने बादशाह बहुत देखे हैं, और बहुतसे बादशाहोंको हराया भी है। लेकिन जुपिटरकी क्रसम ! हमने आप जैसा बहादुर और दिलेर बादशाह आज तक नहीं देखा।

पुरु—(मुस्कराकर) हमने भी बहुतसे महाराज देखे हैं, और बहुतसे महाराजाओंके राज छीने हैं। लेकिन तीर और तलवारकी सौगंध, हमने भी आप जैसा ओछा और घमंडी राजा आज तक नहीं देखा।

[सेल्यूकस अपनी तलवार निकालकर आगे बढ़ता है।]

सेल्यूकस—अदबसे बात करो, तुम जुपिटरके बेटे और यूनानके सबसे बड़े बादशाहके सामने खड़े हो, और उसके सिपाहियोंका खून गरम है।

[समर भी तलवारपर हाथ रखकर उठना चाहता है, मगर रुक जाता है।] सिकंदर ताड़ जाता है, और मुस्कराता है। मगर समर नहीं जानता कि सिकंदरने उसे देख लिया है। वह उसी तरह निर्भयतासे बैठा रहता है। पुरु सेल्यूकसकी तरफ़ देखता है और कहता है—]

पुरु—(बेपरवाहीसे) तुम कौन हो, जो इतना भी नहीं जानते कि जब दो राजे आपसमें बातचीत कर रहे हों तो बीचमें बोलनेसे दोनोंका अपमान होता है। अगर तुम हमारे आदमी होते, तो हम तुम्हें दरबारसे निकाल देते और कहते, जाओ पहले दरबारमें बैठने और बोलनेके नियम सीखो। इसके बाद दरबारमें आओ। दरबारमें बेसमझ और

बेअदब नहीं आ सकते ।

[आग्नि हैरान होकर देखता है । समरका चेहरा अभिमानसे चमकने लगता है । दरबारी डर जाते हैं, वह नहीं समझते अब क्या होगा ।]

सिकंदर—सेल्यूकस ! तुमने ग़लती की है, महाराजसे माफी मांगो ।

सेल्यूकस—(महाराज पुरुके सामने झुककर) महाराज ! मैं माफी चाहता हूँ ।
मुझसे भूल हुई ।

[आग्नि और भी हैरान होता है ।]

पुरु—हमने क्षमा किया ।

सिकंदर—(पुरुकी ओर मुड़कर नम्रतासे) हम आपकी हिम्मत और बहादुरी से खुश हुए हैं । अब आप यह फ़रमाइए, आपके साथ कैसा सुलूक किया जाए ?

पुरु—(निर्भयतासे) जैसा एक महाराजको दूसरे महाराजके साथ करना चाहिए ।

सिकंदर—आप कुछ और भी कहना चाहते हैं ?

पुरु—(बेपरवाहीसे) हमें जो कुछ कहना था, वह हमने पहले जवाबमें कह दिया । हम और कुछ नहीं कहना चाहते ।

सिकंदर—युमनीस ! महाराज पुरुके यह दोनों जवाब सुनहरी हरफ़ोंमें लिखकर हमारे खज़ानेमें रक्खे जाएं । जब हम यूनान जाएंगे, तो वहाँके लोगोंको दिखाएंगे कि दुनियामें ऐसे आदमी भी हैं जो लड़ाई हारते हैं, हिम्मत नहीं हारते—

[युमनीस सिर झुकाता है। आम्बिकी अचम्भा होता है।]

सिकंदर—(अपनी बात जारी रखते हुए) जब हम यूनान जाएंगे, तो अपने लोगोंको बताएंगे, कि दुनियामें ऐसे आदमी भी हैं, जो अपनी किस्मतवे सामने भी सिर नहीं झुकाते, और जिनके बच्चे भी मौतके मुंहमें जानेसे नहीं घबराते।

[युस चौंककर देखता है।]

सिकंदर—(समरकी तरफ उंगली उठाकर) आओ राजकुमार ! आगे आओ हम तुम्हारा भी स्वागत करते हैं। तुम भी बहादुर हो, तुम्हारे पेटे र्भ मजबूत हैं।

[समर आगे बढ़ता है, दो सिपाही साथ उठते हैं। सिकंदर इशारा करके सिपाहियोंको लौटा देता है। समर अकेला आगे बढ़ता है।]

पुस—(हैरान होकर समरसे) समर ! तुम यहां ? और इस लिबासमें ? यह वय बात है ?

समर—(हिचकिचाते हुए) पिता जी...

सिकंदर—(बात काटकर) बहादुर बापका बहादुर बेटा बापकी गिरफ्तारीवे बाद आरामसे घरमें न बैठ सका, और इस लिबासमें हमें क़त्ल करने आ गया। लेकिन—(समरसे) नौजवान ! अफ़सोस करो कि हमारी आंखने तुम्हें पहचान लिया, और तुम हमें क़त्ल न कर सके। हमारी तकदीर ज़बरदस्त है। हम बन्न गए और हम तादगी बरादगीकी तागी करते हैं।

[पुरु अपने पुत्रकी तरफ़ गर्वसे देखता है ।]

सिकंदर—(पुरुसे) जाइए, हमने आपको आज़ाद किया, आपके बेटेको आज़ाद किया, आपके सिपाहियोंको आज़ाद किया । और इतना ही नहीं हमने हाइडस्पस * के आस पासका जितना भी इलाका जीता है, वह भी आपके हवाले किया । (सेल्यूकससे) सेल्यूकस ! फ़ौजोंको ख़बर भेज दो, कि वह जीता हुआ इलाका इनके हवाले करदें ।

[सेल्यूकस सिर झुकाता है ।]

पुरु—मगर हम एक बात पूछना चाहते हैं ।

सिकंदर—पूछिए, हम सुन रहे हैं ।

पुरु—अब क्या हम आपके आधीन होंगे ?

सिकंदर—(मुस्कराकर) आप हमारे आधीन न होंगे, आप हमारे दोस्त होंगे ।

आग्नि—(खड़ा होकर) महाराज ! मैं कुछ प्रार्थना करूं ?

सिकंदर—(मुस्कराकर) बड़ी खुशीसे ।

आग्नि—आप नहीं जानते, यह पुरु आपका विरोध करेगा ।

सिकंदर—नहीं राजा साहिब ! पुरु हिन्दुस्तानमें हमारा सबसे बड़ा दोस्त होगा ।

(नीचे उतरकर अपना हाथ पुरुकी तरफ़ बढ़ाते हुए) पुरराज ! आज हम दूसरी बार आपकी तरफ़ दोस्तीका हाथ बढ़ाते हैं ।

[पुरु सिकंदरकी तरफ़ देखता है । सिकंदर मुस्कराता है । पुरु सिकंदरका हाथ पकड़ लेता है, और मुस्कराकर कहता है—]

* हाइडस्पस वितस्ता (वर्तमान जेहलम नदी) का यूनानी नाम है ।

पुरु—पुरु दांस्तीके हाथको हमेशा दांस्तीके हाथसे पकड़ता है ।

सिकंदर—हमारा कायदा है कि जब किसी आदमी या चीज़को पसंद करते हैं, या जब किसी चीज़को बड़ा पाते हैं, तो उसे यूनानी नामसे पुकारने हैं । इसलिए आजसे आपका यूनानी नाम महाराज पोरस होगा और आपको यूनानकी किताबोंमें इसी नामसे याद किया जाएगा । आप इसे पसंद करते हैं ?

पुरु—हमें कोई आपत्ति नहीं । मगर हम भी आपको अलक्षेत्रके नामसे पुकारेंगे । और आज्ञा देंगे कि हिन्दुस्तानमें आपका बखान इसी नामसे किया जाए ! यह शब्द संस्कृतका है और आपके योग्य है ।

सिकंदर—(प्रसन्न होकर) एलेक्जेंडरको ईरानके सिकंदर बनाया, हिन्दुस्तानने सिकंदरको अलक्षेत्र बना दिया । हमें यह दोनों नाम पसंद हैं । हम इस संस्कृतके खूबसूरत नामके लिए आपका शुक्रिया अदा करते हैं ! (दरबारियोंसे) यह हमारे दोस्तका पहला तोहफ़ा है, हमने खुशीसे क़बूल किया ।

पुरु—(ऊँची आवाज़से) महाराज अलक्षेत्रकी जय !

दरबारी—(चिल्लाकर) महाराज अलक्षेत्रकी जय !

[समर चुप रहता है । एकाएक पुरु उसकी ओर देखता है । समर अपनी भूल महसूस करता है और अकेला कहता है—]

समर—महाराज अलक्षेत्रकी जय !

सिकंदर—(धीरेसे मगर एक एक शब्दपर जोर देकर) महाराज पोरसकी जय ।

दरबारी—(सिवाय आम्बिके) महाराज पोरसकी जय !

सिकंदर—महाराज आम्बिस ! आपने हमारे दोस्तकी जय का नारा क्यों नहीं लगाया ? हम नहीं चाहते हमारे दोस्त एक दूसरेके दुश्मन रहें ।

आप भी कहिए—महाराज पोरसकी जय ।

आम्भि—(हिचकिचाते हुए) महाराज पोरसकी जय !

सिकंदर—सेल्यूकस !

सेल्यूकस—(आगे बढ़कर) आलमपनाह ।

सिकंदर—हमने महाराज आम्भिससे जो वादा किया है, उसे पूरा किया जाए । और उनका राज उन्हींके पास रहे । महाराज आम्भिस हिन्दुस्तानमें हमारे पहले दोस्त हैं ।

समर—पहले दोस्त नहीं, पहले दास । इन्होंने आपकी दासता स्वीकार की थी । यह आपके दोस्त नहीं हैं ।

आम्भि—खबरदार !

[महाराज आम्भि तलवार लेकर समरपर हमला करता है ! सिकंदर आगे बढ़कर हमला अपनी तलवार पर रोक लेता है । महाराज पुरु मुस्कराते हैं । आम्भि डरता है । दरवारी हैरान होते हैं । सिकंदर धीरे धीरे अपनी जगहपर जाकर बैठ जाता है ।]

सिकंदर—(समरसे) हमारे नौजवान दोस्त, यह तेरी चलती थी । मगर हमने तुम्हें माफ़ किया । बहादुरीका मतलब बहादुरी है, बड़ोंकी बेइज्जती नहीं । (महाराज आम्भिससे) महाराज हमें अफ़सोस है ।

दूसरा दृश्य

स्थान—गरीबोंकी बस्ती

समय—रात

[लोग महाराज पुरुकी जयके नारे लगा रहे हैं। इन लोगोंमें सब स्त्री पुरुष हैं, मगर जसराम मिह, बूढ़ाकाका शंकरसरन और एक नौजवान आदमी नहीं हैं। सुखमनी और बूढ़ी काकीने नए कपड़े पहने हैं और उनकी नाकमें नथें हैं। नारोंके बीचमें सुखमनी आरतीका थाल लिए आगे बढ़ती है और कुएंकी जगहपर बैठकर गाना शुरू करती है—]

गाना

आज आई सजनवा अजब रतिया ।

इस रतिया पर बल बल जाऊं,

इस रतिया पर प्राण चढ़ाऊं,

ऐसी हर रोज आती है कब रतिया ।

आज आई सजनवा अजब रतिया ।

चांदीकी रतियामें जलते हैं हीरे,

नीलमकी सड़कों पे चलते हैं हीरे,

नस नसमें समाई गजब रतिया ।

आज आई सजनवा अजब रतिया ।

चाँदीकी रतियामें गीत उगत हैं,

सोनेकी बगियामें सुपने फलत हैं,

कैसी सुन्दर सलोनी सुलभ रतिया ।

आज आई सजनवा अजब रतिया ।

गनेशी—(एकाएक चिल्लाकर) ओ मां ! बापू आ गया । बापू आ गया ।

मुरली—नानी ! नाना भी आ गया । ऊ देख । बड़ा खुम खुम लगे है वह तो ।

[जसराम और बूढ़ा काका शंकरसरन प्रवेश करते हैं । लोग स्वागतके लिए आगे बढ़ते हैं लेकिन बूढ़ी काकी सबको रोक देती है और सुखमनीके हाथमें आरतीका थाल देकर कहती है—]

बूढ़ी काकी—आज तेरा पति देस खातर लड़कर आया है । चलकर आरती कर पहले । श्रीगेंकी आरती पहले, दूजे सब काज पीछे ।

[सुखमनी आरतीका थाल लिए हुए आगे बढ़ती है और जसरामके सामने पहुंचकर आंग्खें बंद करके मुंह ही मुंहमें कुछ गुनगुनाती है ।]

जसराम—(पेशान होकर) यह तुम गुनगुन काह करत हो ?

सुखमनी—परमेश्वरसे प्रार्थना करे हूं कि अगले जनममें भी हमें तुमही जैसा सूरमा पति मिलै, तो हमारा जनम सफल होय ।

जसराम—(मुस्कराकर) जाओ भक्तनी ! हमने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करी । अगले जनममें भी तोहरा ब्याह हमरे ही संग होएगा । अगले जनममें भी तू हमारी ही इस्त्री हवैगी, और हमारी ही चरण-सेवा करेगी ।

आवाज़—जसरामसिंह !

[जसरामसिंह चौंकर पीछे देखता है—बूढ़ीकाकी शंकरसरन की आरती कर रही है । सब लोग देख देखकर हँस रहे हैं ।]

शंकरसरन—अरी भली मानस ! रहने दे ना । बूढ़ोंकी आरती कौन करे है ?

हम तो बुढ़िया गए। और यह चोचले जवानीके दिनोंके है।

बूढ़ी काकी—(आरती करते हुए) मर्द बूढ़ा हो जाए, फिर भी इस्त्रीका तो सुहाग ही रहे है—मैं तोसे ऊंचा ऊंचा बोलें हूं मुदा लड़ाई-जुद्ध थोड़ा करे हूं। मेरा तो तुही किंगसन-कन्हैया है, तुही राम-रमैया है।

जसराम—लो काका ! मुंह मीठा करा देओ ! तुम तो कहा करते थे काकी कभी मिसरी बातें नहीं करे है। अब बोल, करे है कि नहीं करे है।

शंकरसरन—अरे अव्वल दरजेके भूट ! भूट न बोल। हमारा आजका मजा भी किरकिरा हो जइ है ! (बूढ़ीसे) अच्छा भई, करे जा आरती, हम देवताकी तरह चुपचाप बैठें हैं।

गनेशी—(काकीके सामने आकर) लो काकी ! हमरी भी आरती करो। हम किसीसे कम थोड़े हैं। हां i i.....

[सब हँस पड़ते हैं।]

जसराम—सुकर है, आज हमारे देस और राजाकी मर्जादा बची, ए कारन खुसियां मनाओ और मिठाइयां खाओ, और घर-घर घीके दिए जलाओ।

[औरतें थाल उठाती हैं। एकाएक एक आदमी प्रवेश करता है, और ऊंची आवाज़से कहता है—]

वह आदमी—जरा ठहरो ! मेरी एक बात सुन लो।

[सब रुक जाते हैं।]

सिकंदर

वह आदमी—अगर आज आनंद-खुसीकी रात होती तो राजमहल जगमग जगमग करते नजर आते । मुदा मैं देख आया हूं, राजमहलके बाहर तो एकदम अँधेरा है, अंदरकी परमेसर जाने ।



तीसरा दृश्य

स्थान—महाराज पुरुका महल

समय—रात

[महाराज पुरु बुतकी तरह चुपचाप खड़े हैं । सामने रखसाना और कुछ नौकर आज्ञाकी प्रतीक्षामें हैं । चारों तरफ उदासी छाई हुई है ।]

पुरु—(नौकरोंसे) जाओ, हमारे महलके दिए भी बुझा दो ।

[नौकर सिर झुकाकर चलें जाते हैं । रखसाना आगे बढ़ती है ।]

रखसाना—मगर विरादर ! यह आप क्या कर रहे हैं ?

पुरु—(जवाब न देकर) हारे हुए आदमीको कोई अधिकार नहीं कि वह अपने घरमें दिये जलाकर बैठे और खुशियां मनाए । उसके लिए उदासी और अँधेरा है ।

[साथके कमरेकी रोशनी बुझ जाती है । इस कमरेमें भी अंधेरा सा हो जाता है, मगर अभी पीछेके कमरेमें रोशनी है, और वहांकी रोशनी इस कमरेमें छन छनकर आ रही है ।]

रुखसाना—मगर यह आपकी हार नहीं है, यह आपकी जीत है । जो हारता है उसकी इज्जत नहीं होती, उसे इलाका नहीं मिलता, उससे जीता हुआ बादशाह दोस्तोंका सा मुलूक नहीं करता ।

पुरु—तुम कहती हो, यह हमारी जीत है । हम समझते हैं, यह हमारा मौत है । बल्कि अगर हमारी मौत हो जाती, तो अच्छा था, ताकि हमारे कान संसारका यह कैसला तो न सुनते, कि पुरु हार गया और सिकंदरने उसे क्षमा कर दिया । हार मौतसे भी बुरी है । भगवान हार दुश्मनको भी न दे ।

रुखसाना—जो कहता है, पुरु हार गया, वह अंधा है !

पुरु—तो इस विचारसे सारा संसार अंधा है । (रुखसाना चुपचाप देखती रहती है) बल्कि इस विचारसे भारतकी आनेवाली संतान भी अंधी होगी, क्योंकि वह भी इतिहास पढ़कर यही कहेगी कि पुरु हार गया और सिकंदर जीत गया, और पुरु हारकर भी जीता रहा । (थोड़ी देर इधर उधर टहलते हैं । रुखसाना कुछ कहनेको मुंह खोलती है, मगर पुरु उसे कहनेका अवसर नहीं देते और अपनी बात जारी रखते हैं—) इतिहास यह बताता है कि बाहर रोशनीमें क्या हुआ ? इतिहास यह नहीं बताता, कि घरके अंदर अंधेरेमें क्या हुआ ? इतिहास यह बताता है कि एक आदमी हार गया, इतिहास यह नहीं बताता कि वह आदमी क्यों हारा ? हमारे, तुम्हारे, प्रार्थना और समरके सिवाय और कौन जानता है कि तुमने पुरुसे कोई वचन लिया था, और जब पुरु सिकंदर का वध कर सकता था, उस समय उस वचनने पुरुके हाथ बाँध लिए

थे । (ठंडी आह भरकर) अगर यह न होता तो पुरु सिकंदरको मार डालता, सिकंदरकी फौज मैदान छोड़कर भाग जाती, और हमारा देश जीतके नारे लगाता । मगर अब तो इतिहास यही कहेगा, कि सिकंदर और पुरुकी लड़ाई हुई, जिसमें पुरु हार गया, सिकंदर जीत गया और सिकंदरने कृपा करके पुरुको क्षमा कर दिया ।

[पीछेके कमरेकी रोशनी भी बुझ जाती । अब सिर्फ बाईं तरफके कमरेसे मध्यम मध्यम रोशनी आ रही है ।]

पुरु—आज हमारे मुंह पर वह कालिख मली गई है जो कभी न धुल सकेगी । मगर यह हमारा ही दोष है, हमने आंखें बंद करके ऐसी प्रतिज्ञा क्यों करली थी ? हम अंधे थे । हम मूर्ख थे । हमारे मनकी जोत बुझ गई थी । और जिसके मनकी जोत बुझ जाती है, वह कभी नहीं जीतता ।

[समर और प्रार्थनाका प्रवेश]

पुरु—बेटा समर !

समर—क्या कोई और प्रतिज्ञा हो रही है, पिताजी ?

पुरु—(चौंककर) समर मेरे बेटे ! (साथके कमरेकी ओर इशारा करके) यह रोशनी भी बुझा दे । हम नहीं चाहते, हमारा काला मुंह कोई और देखे और हमपर दया करे ।

समर—मगर (रुखसानाकी ओर इशारा करके) यह तो देख रही हैं आपका मुंह !

पुरु—यह देख रही हैं कि इन्होंने जो मेरा मुंह काला किया है, वह पूरा काला

हो चुका या कभी कुछ कोर-कसर है ।

रुखसाना—वह न कहो विरादर ! मेरे सीनेमें छुरी उतार दो, मैं इसे बरदाश्त कर लूगी । मगर आपके यह लफ़्ज़—यह मुझसे बरदाश्त न होंगे । यह न कहिए विरादर, यह न कहिए विरादर । मैं आपकी छोटी बहन हूँ ।

[पुरुष के पाँवमें गिर पड़ती है । पुरु उभं उठाता है और उसकी पीठ पर हाथ फेरता है । रुखसाना सिसकियाँ भर भगकर गेती है, और कुछ कह नहीं सकती ।]

पुरु—रुखसाना ! तू हमारी बहन है । हिन्दुस्तानमें बहन भाई का पाँव नहीं छूती । और तू अपना दिल थोड़ा न कर, यह तेरा दोष नहीं है । यह हमारा दोष है । हम तुझसे कुछ न कहेंगे । हमें जो कुछ कहना है, अपने आपसे कहेंगे ।

रुखसाना—(सिसकियाँ भरते हुए) मुझे कोई रास्ता बताइए, मैं सब कुछ करनेको तैयार हूँ—मैंने सचमुच आपपर बड़ा जुल्म किया है । अगर मैं न होती, तो आप कभी न हारते ।

समर—(कटाक्षसे) अभी क्या किया है आपने ? अभी तो एक पुरराज हारे हैं । चार दिनके बाद दूसरे राजे भी हारेंगे और भारतकी स्वतंत्रता मिट्टी पर गिरकर दम तोड़ेगी, हम अपनी यह दुर्गति अपनी अभागी आंखोंसे देखेंगे, और हमारे मन लहूके घूंट पी पी कर रह जाएंगे । और वह दिन दूर नहीं है, जब भारतकी स्वतंत्रता भूमि पर गिरकर दम तोड़ देगी ।

[रुखसाना ठंडी आह भरती है । महाराज पुरु कोई जवाब नहीं देते]

और चुपचाप टहलते हैं । प्रार्थना जोशमें आ जाती है ।]

प्रार्थना—भारतकी स्वतंत्रता दम नहीं तोड़ेगी, सिकंदरकी सेना दम तोड़ेगी ।

ब्यासके उस पार हम जैसे आदमी नहीं हैं, न वहां रखसानाका कोई भाई है, जो सिकंदरको बचा लेगा । वह तलवारका जवाब तलवारसे देंगे, और सिकंदरके होश ठिकाने आ जाएंगे ।

रखसाना—(धीरेसे) मैंने तो सुना है कि सिकंदरकी फौजन आपकी बहादुरीसे डरकर आगे बढ़नेसे इनकार कर दिया है ।

पुरु—सिपाहियोंने इनकार किया है, सिकंदरने तो इनकार नहीं किया । सिकंदरके मुंहसे जोशके चार शब्द निकलेंगे, सिपाहियोंकी लड़खड़ाती हुई हिम्मत अपने पांवपर खड़ी हो जाएगी, और सिपाही आगे बढ़नेको तैयार हो जाएंगे । लड़ाई होगी, फ़साद होगा, देशका नाश होगा ।

समर—सिकंदर इसे अपनी जीत समझेगा, मगर उसकी यह जीत ही हार हो जाएगी । हम चाहते हैं, वह ब्यासके पार जाए, और अपनी आंखोंसे अपनी जीतको हारमें बदलते हुए देखे ।

रखसाना—(चौंककर) नहीं बिरादर नहीं, वह ब्यासके पार नहीं जाएगा । (और भी जोरसे) वह ब्यासके पार नहीं जाएगा । (और भी जोरसे) वह ब्यासके पार नहीं जाएगा ।

[रखसाना तेज़ीसे भाग जाती है । सरिता पागलोंकी तरह प्रवेश करती है—]

सरिता—यह पगली कहती है, वह ब्यासके पार नहीं जाएगा । मगर वह तो गंगाके भी पार चला गया ।

प्रार्थना—कौन गंगाके पार चला गया मां ?

पुरु—सरिता रानी तुम किसकी बात कर रही हो ?

सरिता—अपने अमरकी, और किसकी ? आप उसे इतनी जल्दी भूल गए ?
आप पिता हैं, आप भूल सकते हैं। मगर मैं कैसे भूल जाऊं ? मैं उसकी
मां हूं ! वह मेरा पुत्र है। वह मेरे मनमें सदा जीता रहेगा।



चौथा दृश्य

स्थान—सिकंदरकी छावनी

समय—दोपहर

[सिकंदर टहलते-टहलते प्रवेश करता है। उसके साथ-साथ महाराज
आम्बि और महाराज आम्बिके पीछे-पीछे सेल्यूकस, युमनीस और एग्टीगोनस
हैं। सिकंदर बोल रहा है, बाकी सब लोग सुन रहे हैं।]

सिकंदर—अमन और आरामकी वड़ियां खत्म हो गईं, अब हमें फिर आगे
बढ़ना है, फिर लड़ना है, फिर नए नए इलाके जीतना है। महाराज
आम्बिस ! फरमाइए, आप हमें क्या मदद देंगे ?

आम्बि—हम और हमारी सेनाका हर एक आदमी आपकी उंगलीके इशारेपर
मरने मारनेको तैयार है। आप आज्ञा कीजिए, हम पालन करेंगे। हमारे
होंठोंपर आपके लिए न नहीं है।

सिकंदर—हम खुश हुए ।

[महाराज पुरु और राजकुमार समरका प्रवेश]

सिकंदर—महाराज पोरस ! अब हम आगे बढ़ना चाहते हैं । आप हमारी क्या मदद करेंगे ?

पुरु—हमें शोक है, हमारा जवाब आपको निराश करनेवाला होगा, और हमें शोक है, हमारे पास दूसरा कोई जवाब नहीं ।

सिकंदर—(हैरान होकर) तो क्या आप हमारी मदद न करेंगे ? आप हमारे दोस्त हैं ।

पुरु—हम आपके दोस्त तो हैं, मगर हम अपने देशके दुश्मन नहीं हैं । देश पहले, दोस्त पीछे ।

सिकंदर—(क्रोधसे) आप क्या कहना चाहते हैं महाराज !

पुरु—(ईटका जवाब पत्थरसे देते हुए) महाराज ! हमें लाल आँखें न दिखाएँ, हमें लाल आँखें देखनेकी आदत नहीं है । याद रखिए हमने आप की मित्रता स्वीकार की है, आपकी गुलामी स्वीकार नहीं की । ऐसी बातें उससे कहिए जो आपका नौकर हो, और जिसने आपके सामने घुटने टेके हों ।

आम्बि—(पुरुसे) देखिए पुरुराज । यह जीते हुए हैं...

पुरु—(चुप कराते हुए) हम इनसे बात कर रहे हैं, आपसे नहीं ।

सिकंदर—(नरम होकर) महाराज पोरस ! हमारा मतलब आपकी बेइज़्जती करना न था । हमने आपसे मदद मांगी थी ।

पुरु—(नरम होकर) ज़रा आप ही सोचिए, क्या कोई देशभक्त अपने ही देश को हरानेकी बात सोच सकता है ? आपको सहायता देनेका यही अर्थ है ।

सिकंदर—(खुश होकर) गो आपके जवाबने हमें मायूस किया, मगर हम आपसे खुश हैं। (सेल्यूकसकी ओर बढ़ता है।)

पुरु—हम आपके जीवनके लिए प्रार्थना करेंगे।

सिकंदर—(मुड़कर) फ़तहके लिए क्यों नहीं ? हमें फ़तह चाहिए, जीवन नहीं चाहिए। जीवन यूनानमें भी बहुत था। हम चाहते हैं, आप हमारी फ़तहके लिए प्रार्थना करें।

पुरु—यह असम्भव है। क्योंकि आपकी जीत हमारे देशकी हार है, और जो आदमी अपने देशकी हारके लिए प्रार्थना करता है वह आदमी नहीं, जानवर है। बल्कि जानवरसे भी बुरा—अपनी हारके लिए जानवर भी प्रार्थना न करते होंगे।

आम्भि—पुरु ! यह तुमने हमारी ओर इशारा करके हमारा अपमान किया है। तलवार निकालो, हम तुम्हारा भुज्बल देखना चाहते हैं।

पुरु—(तलवारकी मूठपर हाथ रखकर) हमें यह देखकर खुशी हुई है, कि हमारे पड़ोसीकी रगोंका लहू अभी बिल्कुल पानी नहीं हो गया, अभी उसमें आग बाक़ी है। आ जाओ !

सिकंदर—(दोनोंके बीचमें आकर) युमनीस ! क्या तुमने कभी ऐसी आग देखी है जो बरफ़में भी न बुझे, और ऐसा लोहा देखा है जो आगमें भी न पिघले ? अगर नहीं, तो हमारे दोस्त पोरसको देखो। यह वह आदमी है, जो तुफ़ानके सामने भी तनकर चलता है। (पोरसके कंधे पर हाथ रखकर) महाराज पोरस ! हेयरे+। (महाराज आम्भिके कंधे पर हाथ रखकर) महाराज आम्भिस ! आप और महाराज पोरस दोनों हमारे बाजू हैं। हम नहीं चाहते हमारे बाजू आपसमें लड़ते रहें। लेकिन हम जानते हैं, आपकी लड़ाई होती रहेगी और हमारे बाजू

+ यूनानी भाषामें श्रद्धा-पूर्ण सलामके लिए “हेयरे” शब्दका प्रयोग होता है।

आपसमें टकराते रहेंगे ।

आम्भि—(बिना सोचे समझे) आपने ठीक कहा है, हमारी लड़ाई होती रहेगी । मगर दोष हमारा नहीं, पुरुराजका है ।

सिकंदर—महाराज आम्भिस ! हम आपसे एक चीज़ मांगते हैं, और आप जानते हैं, हम जो चाहते हैं ले लेते हैं । हम न नहीं सुनना जानते ।

आम्भि—और हम आपके सामने न कहना नहीं जानते ।

सिकंदर—हम खुश हुए ।... (थोड़ी देर बाद) हम आपकी बहन प्रार्थना मांगते हैं ।

समर—(तलवारपर हाथ रखकर) आप प्रार्थना मांगते हैं ?

पुरु—देखिए महाराज ! मित्रताकी इतनी कड़ी परीक्षा न कीजिए कि वह टूट जाए ! आखिर हर बातकी एक हद होती है ।

आम्भि—(क्रोधसे) क्या कहा आपने ? आप मेरी बहन प्रार्थना मांगते हैं । मैं मतलबी हूं, मैं मुरदा नहीं हूं ।

सिकंदर—(मुस्कराते हुए) हम आपकी बहन प्रार्थना मांगते हैं अपने दोस्त महाराज पोरसके बेटे राजकुमार समरके लिए । समर उसे चाहता है, वह समरको चाहती है, और दोनों एक दूसरेके क्राविल हैं ।

[महाराज पुरु और समर दोनों खुश होते हैं । आम्भि सोचने लगता है ।]

सिकंदर—(आगे बढ़कर) महाराज आम्भिस ! आप इक्क़रार कर चुके हैं और हम न सुनना नहीं जानते ।

आम्भि—मगर...

सिकंदर—हम आपको यक़ीन दिलाते हैं कि इससे अच्छा ख़ाविन्द प्रार्थनाको हिन्दुस्तान भरमें नहीं मिल सकता । इसलिए मंज़ूर कीजिए । मुहब्बत का देवता आपकी मंजूरीकी राह देख रहा है ।

आग्नि—मगर इतना सोच लें कि महाराज पुरु हमारे दुश्मन हैं ।

सिकंदर—हमने सोच लिया है । इस शादीके बाद वह आपके दुश्मन नहीं रहेंगे । (ज़रा रुककर) आपके दोस्त बन जाएँगे । तो आपने मंजूर किया ?

आग्नि—आज हिन्दुस्तानमें सिकंदरकी बात कौन टाल सकता है ?

सिकंदर—(मुस्कराकर) कमसे कम एक आदमी टाल सकता है और वह हमारे दोस्त महाराज पोरस हैं । (समरकी ओर देखकर) क्यों नौजवान ! तेरा क्या खयाल है ?

[समर चुप रहता है, महाराज पोरस हँस पड़ते हैं ।]

सिकंदर—(एकाएक मुड़कर) सेल्यूकस !

सेल्यूकस—(सलाम करके) आलम पनाह ।

सिकंदर—हमने आगे बढ़नेका फैसला कर लिया । सिपाहियोंसे कहो, अपनी अपनी ताकत और तलवार लेकर तैयार हो जाएं ।

सेल्यूकस—देवताओंकी तमाम मेहरबानियां आप पर निसार हों । सिपाही अभी थके हुए हैं...

सिकंदर—(बात काटकर और अपना हाथ क्रोधसे अपनी जंघा पर मारकर) मगर वह सिपाही हैं । सिपाहियोंका काम थकना नहीं है...और सिपाही कभी अपने सुल्तानका हुक्म माननेसे इनकार नहीं करते । उनसे कह दो, यह उनके सुल्तानका हुक्म है, और वह सिपाही हैं । बाक़ी सब अपने आप ठीक हो जाएगा ।

[सिकंदर चला जाता है । बाक़ी लोग भी उसके पीछे पीछे चले जाते हैं ।]



पांचवां दृश्य

स्थान—सिकंदरकी छावनी

समय—दोपहर

[यूनानी सिपाही क्रोधसे एक दूसरेसे बातें कर रहे हैं।]

एक सिपाही—यह दुस्त है कि हम सिपाही हैं, और यह भी दुस्त है कि सिपाही अपने सुल्तानका हुक्म माननेसे इनकार नहीं करते। सुल्तान का काम हुक्म देना है, और सिपाहियोंका काम सिर झुकाकर उसे मानना है। मगर सिपाहियोंकी भी आँखें होती हैं और वह आँखें देखती हैं। और जो कुछ वह देखती हैं, उसकी रोशनीमें अपने लिए रास्ते ढूँढ़ती हैं।

दूसरा सिपाही—यह बात तो ठीक है बिरादर, हम अंधे नहीं हैं।

तीसरा—हम अंधे नहीं हैं, मगर हम अंधे बन रहे हैं। और जो अंधे बन नहीं रहे वह बनाए जा रहे हैं। क्या हम जानते हैं कि इस जंगमें महाराज पोरसने हमारी आधी फौज खत्म कर दी है, आधीकी हिम्मत तोड़ दी है ? अपने दिलोंको टटोलो, वहां पोरसका खौफ बैठा पाओगे। हम पोरससे डरते हैं।

पहला—और पोरससे हम ही नहीं डरते, हमारा बादशाह भी डरता है। अगर न डरता तो उससे इस तरह सुलह न करता, जिस तरह उसने की है। हार-जीतका कोई फर्क ही मालूम न होता था उस दिन।

दूसरा—बिरादर ! यह तुने लाखोंकी बात कह दी।

तीसरा—याद है, उस दिन भरे दरबारमें पोरसने कैसी खरी खरी सुनाई थी।

हमारा बादशाह माँका दूध समझकर पी गया। यह क्यों ? उसे उस

दिन गुस्ता क्यों नहीं आया ? वह महता क्यों गया ? वह मुस्कगता क्यों रहा ?

चौथा—हमारे हाकिम कहते हैं हमने चालीस हजार सिपाही ईरान और यूनान भेज दिए हैं। मगर मैं कहता हूँ यह सफ़ेद झूट है। यह चालीस हजार आदमी यूनान और ईरान नहीं गए, पोरसकी फौजने जानसे मार डाले हैं और हमारे हाकिमोंने यह बात हमसे छिपाई है।

पाँचवाँ—बिल्कुल ठीक है, हमारे हाकिमोंने यह बात हमसे छिपाई है।

छठा—(आगे बढ़कर) अरे यार मुझसे सुनो ना ! जिस वक़्त इधर हमारा दरबार हो रहा था, उसी वक़्त उधर हमारे सिपाहियोंकी लाशें हिन्दुओं की लाशोंके साथ जलाई जा रही थीं, ताकि हमें मालूम न हो जाए और हमारी हिम्मत न टूट जाए।

पहला—(हैरान होकर) अरे ! हमको इतना बड़ा धोखा दिया है इन लोगोंने।

दूसरा—और अब हमसे कहा जाता है कि चालीस हजार सिपाहियोंको घर जानेकी छुट्टी दे दी गई है।

तीसरा—इसका तो यह मतलब है कि कल अगर हम मारे जाएंगे तो हमारे नामोंकी भी फ़हरिस्त लटकाकर उसके ऊपर लिख दिया जाएगा—इन्हें घर जानेकी छुट्टी दे दी गई है।

चौथा—तो कहते क्यों नहीं कि अब हम आगे नहीं बढ़ेंगे !

पाँचवाँ—सिर्फ़ इतना ही नहीं। हम तो यह भी कहेंगे कि हम घर जाना चाहते हैं, हमें घर भेज दिया जाए।

पहला—बिल्कुल ठीक है—हम घर जाना चाहते हैं।

दूसरा—हम घर जाना ही नहीं चाहते, हम घर जाएंगे, और हमें रोकनेकी किसीमें ताक़त नहीं। जो हाथ रोकेगा, वह हाथ नहीं रहेगा; जो तलवार रोकेगी, वह तलवार नहीं रहेगी। हमारा फैसला आखिरी है।

[एक सिपाही खुशीसे भरा हुआ आता है और कहता है—]

सिपाही—(पोछेकी ओर इशारा करके) इधर चलो, इधर जलसा हो रहा है। इधर सब सिपाही जमा हैं। इधर चलो, इधर चलो। इधर बड़ा भारी जलसा हो रहा है।

[सब सिपाहियोंका शोर मचाते हुए प्रस्थान]

अंतर दृश्य

स्थान—सिकंदरकी छावनी

समय—दोपहर

[रुखसाना सिपाहियोंके सामने भाषण दे रही है। सिपाही बड़े ध्यानसे सुन रहे हैं। और वह जोशमें हैं।]

रुखसाना—मैंने माना कि तुम सिपाही हो, मगर तुम सिर्फ सिपाही नहीं हो। तुम अपनी बीवियोंके खाविन्द भी हो, तुम अपनी माँओंके बेटे भी हो, तुम अपनी बहनोंके भाई भी हो। मेरी आँखें लेकर देखो, तुम्हारे रिश्तेदारोंकी नींद तुम्हारी यादमें हराग हो गई है और आसमानके तारे उन्हें हर रातको जागते और करवेंटे बदलते हुए देखते हैं।

[सिपाही एक दूसरेकी तरफ देखते हैं और कहते हैं—]

एक सिपाही—ठीक है

दूसरा—बिल्कुल ठीक है।

रुससाना—तुम कहोगे, यह हमारा फ़र्ज़ है कि अपने बादशाहकी मज़ीके सामने मिर भुका दें। मैं भी कहती हूँ, यह ठीक है। लेकिन मैं पूछती हूँ कि क्या तुम्हारे बादशाहका यह फ़र्ज़ नहीं है कि वह भी तुम्हारे दिलों की ख्वाहिश देखे और उसका खयाल करे। सिपाही अपना फ़र्ज़ पूरा करें—बादशाह अपना फ़र्ज़ पूरा करें।

[पिछले दृश्यके सिपाही प्रवेश करते हैं और सिपाहियोंके साथ मिलकर खड़े हो जाते हैं।]

रुससाना—तुम नहीं जानते, आगे बढ़नेमें कितने खतरे हैं। तुम नहीं जानते, तुम्हारे आगे कितनी सुमीत्रें खड़ी हैं। तुम नहीं जानते, तुम्हारे आगे कितनी तबाहियाँ और बरबादियाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं। मुझ पर यकीन करो, मैं बहुत कुछ जानती हूँ। मेरा मशविग मानो, मुझे तुम्हारी भलाई मंज़ूर है। मेरी बात सुनो, मैं तुम्हारे पास तुम्हारे वतन की आवाज़ बनकर आई हूँ। और तुम्हारे वतनकी आवाज़ तुम्हारे बादशाहकी आवाज़से बड़ी है।

[सिपाही एक दूसरेकी तरफ़ देखते हैं और कहते हैं—]

एक सिपाही—ठीक है।

दूसरा सिपाही—सौ फ़ीसदी ठीक है।

रुससाना—मैं चुप रहती और तुम्हारी बरबादियाँ देख देखकर बेपरवाही से हँस देती। मगर मेरे चेहरेकी तरफ़ देखो, इस पर तुम्हें ईरानके नज़्शो-निगार नज़र आएंगे। मैं ईरानी हूँ, और मैं जानती हूँ तुम्हारी फ़ौज के आधे सिपाही ईरानी हैं। मैं उनके खूनका खून और गोशतका

गोश्त हूं। मैं उन्हें बचाना चाहती हूं। इसलिए...

एक सिपाही—मगर बानो ! हम हकीर हैं। हम क्या कर सकते हैं ?

दूसरा सिपाही—हमारी कोई हस्ती नहीं।

तीसरा सिपाही—हमारी आवाज़में कोई तामीर नहीं।

चौथा—सिकंदर हमारी एक नहीं सुनेगा।

पाँचवाँ—वह बादशाह है, वह जो चाहेंगा, करेगा।

रुखसाना—(पहलेसे भी ज़्यादा जोशके साथ) कौन कहता है, तुम हकीर हो ?

तुम हकीर नहीं हो, सिकंदरकी हर एक लड़ाई तुमने जीती है। (दूसरी ओर मुड़कर) कौन कहता है तुम्हारी कोई हस्ती नहीं ? सिकंदर अपनी सारी ताकत तुमसे लेता है। (तीसरी ओर मुड़कर) कौन कहता है, तुम्हारी आवाज़में कोई तामीर नहीं ? सिकंदर तुम्हारे बग़ैर एक कदम भी नहीं चल सकता। (एक आदमीकी ओर इशारा करके) कौन कहता है, सिकंदर तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनेगा ? उसे तुम्हारी आवाज़ सुननी पड़ेगी, और वह सुनेगा। अगर नहीं सुनेगा तो उसकी बादशाही ग़तरेमें पड़ जाएगी।

एक सिपाही—बानो सच कहती है।

दूसरा—बानो हम कुछ नहीं जानते। हमें बताओ, हम क्या करें ?

तीसरा—बानो हम अनपढ़ हैं, हम कुछ नहीं समझते। तुम बताओ, हम क्या करें ?

रुखसाना—अपने बादशाहकी बेइज़्जती न करो। बादशाहकी बेइज़्जती करना बुरा है। मगर उससे इतना कह दो कि हम आगे न बढ़ेंगे, और यकीन करो, तुम्हें घर जानेकी इजाज़त मिल जाएगी।

चौथा सिपाही—बानो क्या वह हमारी सुनेगा ?

रुखसाना—अगर एक एक करके कहोगे तो वह नहीं सुनेगा। मगर जब मिलकर कहोगे, तो उसे सुनना पड़ेगा। ओसकी एक बूंदसे चिड़िया भी

नहीं भीगती, मगर मेंहसे हाथी भी भीग जाता है । तुम आस न बनो,
 तुम मेंह बनो । मेंह बहुत कुछ कर सकता है । मेंहमें बड़ी ताकत है ।
 एक सिपाही—(चिल्लाकर) ठीक है, बनो ठीक कहती है । हम मेंह बनेंगे ।
 रुखसाना—कहो, हम घर जाना चाहते हैं ।
 एक सिपाही—(चिल्लाकर) हम घर जाना चाहते हैं ।
 दूसरा—(चिल्लाकर) हम घर जाना चाहते हैं ।
 रुखसाना—कहो, हम आगे नहीं बढ़ेंगे ।
 तीसरा—(चिल्लाकर) हम आगे नहीं बढ़ेंगे ।
 चौथा—(चिल्लाकर) हम आगे नहीं बढ़ेंगे ।
 रुखसाना—तो जाओ ! अपनी मरजी अपने बादशाके सामने पेश करो ।
 और वह तुम्हारी मरजी मंजूर करेगा ।
 एक सिपाही—(चिल्लाकर) अब हम आगे नहीं बढ़ेंगे ।
 दूसरा सिपाही—अब हम अपने घर जाएंगे ।

[सिपाही शोर मचाते हुए चले जाते हैं ।]

अंतर दृश्य

स्थान—सिकंदरके खेमेके बाहर चबूतरा

समय—दोपहर

[सिपाही शोर मचाते हुए आते हैं, और “हम आगे नहीं बढ़ेंगे”, “हम आगे नहीं बढ़ेंगे” के नारे लगाते हैं । खेमेका परदा हटता है, और सिकंदर क्रोधमें भरा हुआ बाहर निकलता है । लोग चुप हो जाते हैं । सेल्यूकस और युमनीस सिकंदरके साथ साथ हैं । सेल्यूकस और युमनीस नारा लगाते हैं—]

सेल्यूकस और युमनीस—(जंची आवाज़से) एलेक्जेंडर जिन्दाबाद !

कुछ सिपाही—एलेक्जेंडर ज़िन्दाबाद !

सिकंदर—(सिपाहियोंकी भीड़को एक नज़र देखकर) क्या आज वफ़ा और बंदगीका मतलब बदल गया है, जो तुम लोगोंके मुँहसे अपने बादशाहके लिए ज़िन्दाबादका नारा भी नहीं निकलता ?

[लोग चुप रहते हैं ।]

सिकंदर—मावदौलतके जंगी दोस्तो ! हमारे शाही कानोंने तुम्हारी ज़बानोंसे हमेशा वफ़ादारीके क़ौलक़रार सुने हैं लेकिन आज मावदौलतको तुम्हारी आंखोंमें गुस्ताखियां नज़र आती हैं, और हमारी आंखोंको गुस्ताखियां देखनेकी आदत नहीं है । बताओ तुम लोग क्या चाहते हो ? तुम्हारा बादशाह तुम्हें बोलनेकी इजाज़त देता है ।

एक सिपाही—(स्वाईसे) हम लोग कुछ नहीं चाहते ।

सिकंदर—(क्रोधसे) नालायको ! क्या तुम्हारे अफ़सरोंने तुम्हें अपने बादशाहके साथ बोलनेका यही तरीक़ा सिखाया है ? अदबसे बात करो ।

बही सिपाही—(डरते-डरते) हम लोग कुछ नहीं चाहते, आलमपनाह !

सिकंदर—(मुस्कराकर) अगर तुम लोग कुछ नहीं चाहते, तो तुमने हमारे आराममें ख़लल क्यों डाला है ? जाओ खुद भी आराम करो, हमें भी आराम करने दो । (मुड़ता है ।) यह वक़्त हमारे आराम करनेका है ।

दूसरा सिपाही—(हिम्मत करके) हम घर जाना चाहते हैं ।

सिकंदर—(पलटकर) कहो, मैं घर जाना चाहता हूँ । तुम अपने लिए बोल सकते हो, तुम दूसरोंके लिए नहीं बोल सकते ।

एक और सिपाही—(आगे बढ़कर और दूसरे सिपाहियोंके साथ खड़ा होकर) मैं घर जाना चाहता हूँ, और मेरे साथ और भी बहुत हैं ।

सिकंदर—हमें एतबार नहीं आता, कि हमारा कोई सिपाही इस तरह बोल

सकता है। यह तरीका बेवकूफों और बाधियोंका है। खैर, तुम क्या चाहते हो ?

एक और सिपाही—(आगे बढ़कर) हम घर जाना चाहते हैं।

एक और सिपाही—(आगे बढ़कर) हम सब घर जाना चाहते हैं।

[सिकंदर हैरान होता है, सिपाही एक दूसरेकी तरफ देखते हैं। उनकी आँखोंमें डर नहीं।]

सिकंदर—आज हमें पहली बार मालूम हुआ कि हमारी फ़ौजमें कमज़ोर-दिल और कम-हिम्मत आदमी भी हैं। (लोगोंकी तरफ देखकर और चबूतरे की दीवारपर अपना हाथ रखकर) क्या कोई और बहादुर भी हैं जो आनेवाली मुसीबतोंसे घबराते हैं ?

[कोई जवाब नहीं देता।]

सिकंदर—बोलो, तुम्हारे जुपिटरका बेटा तुम्हें बोलनेकी इजाज़त देता है।

वह तुम्हारी बात सुनेगा, और तुम्हारी बातपर गौर करेगा।

कुछ सिपाही—(डरते डरते) हम घर जाना चाहते हैं।

सिकंदर—हम उन सब बुज़दिलोंके चेहरे देखना चाहते हैं, जो यह भी नहीं जानते कि अपने वतनके बाहर उनका अपने मुल्क और मालिककी तरफ़ क्या फ़र्ज़ है।

पहला सिपाही—(आदर सहित) हम अपना फ़र्ज़ जानते हैं, और हमने अपना फ़र्ज़ पूरा किया है। मगर अब हमें अपने वतनसे निकले हुए चौदह साल गुज़र गए हैं। हमारे घरवाले हर सुबह हमारे आनेकी उम्मीद लेकर जागते हैं, और हर रात मायूस होकर सो जाते हैं।

आग्विर हमारा उनको तरफ़ भी तो कोई फ़र्ज़ है। इसलिए हम निहायत अदबके साथ अर्ज़ करते हैं, कि अब हमें घर जानेकी इजाज़त दी जाए।
 सिकंदर—हमें अफ़सोस है, हम तुम्हें घर जानेकी इजाज़त नहीं दे सकते।
 पहला सिपाही—तो आलमपनाह ! क्या आप हमें ग़ैरोंके इस मुल्कमें इसलिए लाए हैं कि हम यहाँ तबाह और बर्बाद हो जाएं, और हमारी मौत पर कोई रोनेवाला भी न हो ?

दूसरा सिपाही—क्या आप हमें यहां इसलिए लाए हैं कि हमारी कब्रोंपर अपनी कामयाबीका महल खड़ा करें, और उसे देख देखकर खुश हों ?

तीसरा सिपाही—आग्विर आपके पास हमारे इस सवालका क्या जवाब है कि हम हजारों सिपाही सिर्फ़ एक आदमीकी दीवाना ख्वाहिशको खुश करनेके लिए, क्यों अपनी ज़िन्दगियां और ज़िन्दगीकी खुशियां मोचे-समझे बग़ैर कुरबान कर दें ?

सिकंदर—सिपाहीका काम है, अपने सिपह-सालारका हुक्म सुने और उसकी तामील करे। सिपाहीका काम है अपने सिपह-सालारकी खुशीको अपनी खुशी और सिपह-सालारकी तकलीफ़को अपनी तकलीफ़ समझे और उसके फ़ैसलेके खिलाफ़ एतराज़की छोटी उँगली भी न हिलाए। और...तुम सिपाही हो, हम सिपह-सालार हैं। हमने तुम्हें तुम्हारा फ़र्ज़ समझा दिया है। उसे समझना और उसे पूरा करना तुम्हारा काम है।

पहला सिपाही—तो क्या आपकी खुशी सब कुछ है ? हमारी खुशी कुछ भी नहीं है ?

दूसरा सिपाही—और क्या आपकी तकलीफ़ ही सब कुछ है ? हमारी तकलीफ़ कुछ भी नहीं है ?

तीसरा सिपाही—और क्या आपका फ़ैसला ही सब कुछ है, हमारा फ़ैसला कुछ भी नहीं है ? तो गोया हम आदमी नहीं, मिट्टीके टुकड़े हैं, और आप जिधर चाहें, हमें फेंक सकते हैं।

सिकंदर—जान की खर मांगो, तुमने जोशमें आकर अपने बादशाहकी बे-इज्जती की है। क्या तुमने यूनानसे चलते वक्त यूनानी देवताओंकी क्रस्में खाकर कौल-करार नहीं किए थे कि तुम हमारी जीतके लिए अपने लहका आगिरी कतरा भी कुरबान कर दोगे ? अपने कौल-करार याद करो और उलटे पांव यहांसे लौट जाओ। हम तुम्हारा कसूर माफ़ कर देंगे।

पहला सिपाही—(क्रोधसे) हमारे आका ! क्या हमने जांबाजी और वफ़ादारी के कौल-करार पूरे नहीं किए ? क्या हम आपके एक-एक इशारेपर मौतको सामने देखकर भी आगे नहीं बढ़ते रहे ? हमने मौतसे कब मुँह मोड़ा है ? हम मरनेसे कब डरे हैं ?

दूसरा सिपाही—और क्या हमने अपनी जिंदगियां कुरबान करके आपके लिए आधी दुनिया फ़तह नहीं की ? क्या अब आप चाहते हैं कि दुनियाकी हवा भी चलनेसे पहले आपकी तरफ़ देख लिया करे ?

तीसरा सिपाही—और क्या आप चाहते हैं, कि अब दुनियाके दरिया भी बहनेसे पहले आपकी शाही इजाजत तलब किया करें ?

चौथा सिपाही—और क्या आप चाहते हैं कि अब सारी दुनियाको अपने हुक्मके सामने झुका लें ? मगर दुनिया बहुत बड़ी है और आदमी बहुत छोटा है और कोई बड़े से बड़ा आदमी भी इतना बड़ा नहीं हो सकता, कि दुनियाकी तमाम ताकतें उसके सामने ज़मीनपर लेट जाएं।

सिकंदर—यूनानी देवता जुपिटरका खौफ़ करो, तुम जुपिटरके बेटेको नाराज़ कर रहे हो। और जुपिटर इसे बरदाश्त नहीं करेगा।

पहला सिपाही—हम जुपिटरके बेटेको नाराज़ नहीं करना चाहते।

सब सिपाही—हम घर जाना चाहते हैं ! हम घर जाना चाहते हैं।

सिकंदर—(बहुत क्रोधसे) अपने घरवालोंको यह बतानेके लिए कि तुम निकम्मे हो और तुम हारकर वापस आए हो ?

दूसरा सिपाही—(दिल्लंगीके साथ) हम हारे हुए और निकम्मे नहीं हैं। हमने लड़ाइयां लड़ी हैं, और हमने लड़ाइयां जीती हैं, और फ़तहने हमारे पांव चूमे हैं।

सिकंदर—(एकाएक खुश होकर) यह किसने कहा है, हमने लड़ाइयां जीती हैं, और फ़तहने हमारे पांव चूमे हैं? (उंगलीसे इशारा करते हुए) ऐसे ही जाँबाज़ और जाँनिसार हैं जिन पर हमारी कामयाबीका एक एक कदम और हमारे जाहोजलालकी एक एक फ़तह फ़ख़्र करती है। और ऐसे ही बहादुर हैं, जिनके नाम यूनानकी तारीख़में चाँद और सूरज बनकर जगमगाएंगे, और हमेशा ज़िन्दा रहेंगे। (कुछ रुककर) हमारे रफ़ीको। ज़रा अपनी याददाश्तके बक्के उलटकर देखो। जब तुम यूनानसे निकले थे, उस वक्त तुम एक छोटा-सा चश्मा थे। आज तुम एक लहरें मारता हुआ बड़ा दरया हो। और अगर तुम इसी तरह आगे बढ़ते गए तो कल तुम एक समंदर बन जाओगे और कोई तुम्हारी थाह न पा सकेगा। (कुछ रुककर) तुमने ईरान फ़तह किया, तुमने तुरान फ़तह किया। तुमने मिस्र फ़तह किया, तुमने काबुल और कंधार फ़तह किया। और अब जब कि तुम उस ज़मीनके मालिक बननेवाले हो, जो चाँदी और सोना उगलती है; जिसके समंदरोंमें मोती हैं, जिसके जंगलोंमें संदल है, जिसकी मिट्टी में केसर है। जब दुनियाकी वह शान शौकत तुम्हारे पांव चूमनेके लिए दौड़ती हुई आ रही है, जिसे चाँद और सूरज भी लालचकी निगाहों से देखते हैं, तो तुम्हारे दिलमें घरकी मुहब्बत जाग उठी है। लेकिन यह घरकी मुहब्बत बुज़दिलीका दूसरा नाम है। इस बुज़दिलीको दूर हटाओ, अपनी बिग्वरी हुई बहादुरीको फिरसे जमा करो और कहो, हम आगे बढ़ेंगे !

पहला सिपाही—लेकिन हम आगे बढ़कर क्या करेंगे जब हमारी आंखें अपने

वतनके गली-कूचे देखनेके लिए पीछे लौटना चाहती हैं ?

दूसरा सिपाही—और जब हमें पोरससे लड़नेके बाद यह भी मालूम हो गया है कि इससे आगे और भी ज़बरदस्त दुश्मन बैठे हैं ?

सिकंदर—(बिगड़कर) तो जाओ और जाकर अपने घरवालोंको यह खुश-खबरी सुनाओ कि तुम अपने निकाटोरको दुश्मनके इलाक़ेमें छोड़ आए हो ताकि उसे ज़िल्लत नसीब हो और वह गुमनामीकी मौत मरे ।

[सिपाही चले जाते हैं, सिकंदर युमनीसकी तरफ़ मुड़ता है ।]

सिकंदर—युमनीस !

युमनीस—आलम पनाह !

सिकंदर—(क्रोधसे टहलते हुए) हमने आज तक किसीसे भी शिकस्त न खाई थी और आज हमारे अपने सिपाहियोंने हमें शिकस्त दे दी । युमनीस (दुखसे) दुनिया क्या कहेगी ? तारीख़ क्या कहेगी ? आनेवाली नस्लें क्या कहेगी ? (युमनीसके सामने रुककर जल्दी जल्दी बोलते हुए) मगर हमें कुछ सोचना होगा, हमें कुछ करना होगा, हमें कोई रास्ता ढूँढना होगा । जूपिटर का बेटा इस तरह अपने सिपाहियोंसे शिकस्त नहीं खा सकता । (जाते जोते मुड़कर) एक बात और । पता लो, इस बग़ावतका असली सबब क्या है ? और उसका सरगना कौन है ?

[सिकंदर अपने खेमेकी तरफ़ बढ़ता है, सेल्यूकस आदि मुड़ते हैं । रंग-मंचपर अँधेरा छा जाता है; थोड़ी देर बाद रोशनी होती है, और रातकी मशालें जलती हैं । देवकुलीस और रेनीयास पहरा देते दिखाई देते हैं ।]

देवकुलीस—क्यों विरादर रेनीयास, निकाटोर सो गया होगा, या जागता होगा ?

रेनीयास—देवकुलीस, आज देवताओंके पास निकाटोरके लिए नींद नहीं है।

आज निकाटोर सारी रात जागेगा।

देवकुलीस—और करे भी क्या ? आज उसकी हालत रहमके काबिल है।

रेनीयास—(पास आकर धीरेसे) अरे यार ! आज आसमानने ज़मीनके सामने सर झुकाया है, आज सूरजने चार चिरागोंसे हार मान ली है। वर्ना हमारा बादशाह, और सिपाहियोंके सामने चुप हो जाता। एक एक सिपाहीको तलवारके घाट उतार देता, एक एककी गरदन काट लेता, खूनकी नदी बहा देता, और उस नदीमें नहाकर अकेला आगे बढ़ जाता। उससे कुछ भी दूर नहीं है।

देवकुलीस—बिरादर, बात यह है कि अगर आदमी ऊपर ही ऊपर चढ़ता जाए तो एक दिन चौद-सूरज भी उसके नीचे रह जाएं, और यह देवताओंको मंजूर नहीं है।

रेनीयास—देवता आदमीको ऊपर उठनेका मौका देते हैं, और आदमी बहुत ऊपर चढ़ जाता है, मगर एक जगह ऐसी भी आती है, जहाँ देवता आदमीका रास्ता रोक लेते हैं, और कहते हैं—बस आगे जाने की इजाज़त नहीं है। मालूम होता है हमारा निकाटोर उस जगह पहुँच गया है। उसका रास्ता देवताओंने रोका है !

देवकुलीस—मगर आज चलती सिपाहियोंकी थी, निकाटोरकी कोई चलती न थी।

रेनीयास—कोई सुन न ले, मगर मेरा खयाल है, गरीब सिपाही भी क्या करें ? कोई एक साल घरसे बाहर रहे, दो साल बाहर रहे, तीन साल बाहर रहे। हमें यूनान छोड़े चौदह साल गुज़र गए हैं ! और बिरादर, चौदह साल तक एक उम्र होती है। अच्छा बता, जब तू घरसे चला, उस वक़्त तेरी बिन मांकी बेटीकी उम्र क्या होगी ?

देवकुलीस—उस वक़्त वह चार सालकी थी।

रेनीयास—तो अब वह अठारह सालकी हो गई। क्या तेरे दिलमें गुदगुदी नहीं होती, कि उसे जाकर देखे। क्या जब तू अकेला होता है तो यह नहीं सोचता कि वह कैसी लगती होगी? कैसी बातें करती होगी? देवकुलीस—मेरे दिलमें तो यह आता है कि किसी दिन चुपकेसे निकल भागूं। मगर फिर डरकर रुक जाता हूं।

रेनीयास—और मेरा यह हाल है, कि जब मैं वहांसे चला, उस वक़्त मेरी बीवी बीस सालकी थी। पूरी जवान, चाँदकी तरह खूबसूरत, और उमंगों से भरी हुई। जब मैं उसके चेहरेकी तरफ़ देखता था, तो मेरी रगोंके खूनकी गरमी बढ़ जाती थी। जब वह मेरे करीब आती थी, तो मेरी जवानीमें हलचल मच जाती थी। जब वह मेरी बाँहोंमें आकर मुस्कराती थी, तो दुनियाकी बहों नाच उठती थीं।

देवकुलीस—मालूम होता है, वह बहुत खूबसूरत है।

रेनीयास—‘खूबसूरत है’ न कहो, ‘खूबसूरत थी’ कहो। अब वह चौंतीस साल की है। चौंतीस सालमें औरत खूबसूरत नहीं रहती। उसकी सारी जवानी मेरे इंतज़ारमें बीत गई, उसकी सारी खूबसूरती आहें भर भरकर मुरझा गई, उसकी सारी उमंगें दम घुट घुटकर मर गईं। मैंने जवान छोड़ा था, अब मुझे वह बूढ़ी होकर मिलेगी।

देवकुलीस—यह तो ठीक है बिरादर।

रेनीयास—जवानी एक बार आती है, दूसरी बार नहीं आती। हमारी जवानी परदेसमें बीत गई, अब हम अगर मिलें भी, तो बुढ़ापेमें मिलेंगे। और बुढ़ापा ठंडा, धुँधला, कमज़ोर होता है। सचमुच हम सिपाही बेवकूफ़ हैं, हम मरना जानते हैं, हम जीना नहीं जानते।

【 एकाएक बाहर शोर होता है। देवकुलीस और रेनीयास सँभलते हैं।

इतनेमें बीस नक्रावपोश सिपाही आकर उनपर दूट पड़ते हैं। वह उनकी तलवारें छीन लेते हैं, उनके मुंहमें कपड़े ठूस देते हैं। और उन्हें बाँधकर एक तरफ़ डाल देते हैं। इसके बाद कुछ आदमी नंगी तलवारें लिए सिकंदरके खेमेकी तरफ़ बढ़ते हैं, ताकि सिकंदरको क़त्ल कर दे। इतनेमें महाराज पुरु ढाख़ और तलवार लिए आते हैं, और उन्हें ललकारते हैं।]

पुरु—अपने पांव रोक लो, अलक्षेन्द्र तुम्हारा राजा है।

एक सिपाही—मगर तुम हमें हुक्म देनेवाले कौन हो ?

पुरु—मैं इस देशका राजा पुरु हूँ।

सब सिपाही—(हैरान होकर) राजा पुरु !

पुरु—हाँ तुम्हारे सामने पुरु खड़ा है। अब कहो, तुम्हें क्या कहना है !

सिपाही—(धनानी ढंगसे सलाम करके) हम आपको सलाम करते हैं।

पुरु—हम चाहते हैं, तुम अपना यह इरादा छोड़कर वापस चले जाओ, और हम तुम्हें अभयदान देते हैं कि तुम्हारी यह बात तुम्हारे बादशाहके कानों तक न पहुंचेगी, और तुम्हें दंड न मिलेगा।

एक सिपाही—मगर हमारा बादशाह चाहता है, वह आगे बढ़े, नए नए इलाक़े जीते, और हमें मरवाकर अपनी शान-शौकतके मीनार खड़े करे। उसकी भूख बढ़ी है। उसकी प्यास बढ़ी है। उसकी ख्वाहिश बढ़ी है।

पुरु—(धीरेसे) हम तुम्हारे बादशाहको समझा देंगे, कि तुम्हारे सिपाही थक गए हैं। अब उन्हें वापस जाने दो।

दूसरा सिपाही—हमारा बादशाह या अपने दिलकी बात सुनता है, या तलवारकी बात सुनता है, या उस्ताद अरस्तूकी बात सुनता है। वह आपकी बात नहीं सुनेगा।

पहला सिपाही—और आपको तो खुश होना चाहिए कि हम आपके दुश्मन पर हमला कर रहे हैं।

पुरु—हम सीधे आदमी हैं, हमें टेढ़े रास्ते पसंद नहीं। जब हम लड़ते हैं, तो खुले मैदान ललकार कर लड़ते हैं। छुपकर हमला करना कायरोंका काम है। और तुम्हारा बादशाह अब हमारा दुश्मन नहीं, हम उसकी मित्रताका हाथ पकड़ चुके हैं.....इसलिए (धीरेसे मगर दृढ़तासे) वापस चले जाओ, और हम तुम्हें फिर वचन देते हैं, कि यह बात तुम्हारे बादशाहके कानोंतक न पहुंचेगी, और तुम्हारी जान और नौकरी बची रहेगी।

तीसरा सिपाही—और अगर हम आपका हुक्म न मानें तो.....

पुरु—तो (मुस्कराकर) तुम्हें अपने महाराजसे पहले हमसे लड़ना होगा।

चौथा सिपाही—मगर महाराज, आप अकेले हैं और हम बीस हैं।

पुरु—(बात काटकर) हम अकेले तुम सबके लिए काफ़ी हैं। मगर हम अकेले नहीं हैं, हमारे साथ हमारी सेना है, और वह चारों तरफ़ फैली हुई है। अब निश्चय करो, जान बचना चाहते हो, या आत्म-हत्या करना चाहते हो ? हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है।

[महाराज पुरु परे हटकर निर्भयतासे टहलना शुरू कर देते हैं, सिपाही एक दूसरेकी तरफ़ देखते हैं, और आंखों ही आंखोंमें बातें करते हैं। इसके बाद एक सिपाही महाराज पुरुके सामने आता है, और सिर झुकाता है।]

पुरु—तुमने निश्चय कर लिया ?

सिपाही—हम आपका हुक्म मानते हैं, मगर हमारी ज़िन्दगियाँ खतरेमें हैं।

पुरु—तुम निश्चित रहो, तुम्हें कोई भय नहीं है।

सब सिपाही—(सलाम करके दबी हुई आवाज़में) महाराज पुरुकी जय।

[सिपाही पुरुको सलाम करके चलें जाते हैं । महाराज देवीकुलीस और रेनीवासको खोलते हैं । दोनों सिपाही यूनानी ढंगसे सलाम करते हैं । महाराज सलामका जवाब देते हैं ।]

पुरु—(देवकुलीससे) जाकर देखो, अगर अज्ञेन्द्र जागते हों, तो कहो हम मिलना चाहते हैं । अगर सोते हों, तो बेआराम न करो । मगर उन्हें यह मालूम न हो, कि उनपर किसीने आक्रमण किया था, और हमने उनकी जान बचाई है । (देवकुलीसके चलें जानेके बाद रेनीयाससे) सैनिक, तुम्हें यूनानसे निकलें हुए कितने वर्ष हुए ?

रेनीयास—महाराज मुझे और देवकुलीसको यूनानसे निकलें चौदह वर्ष हो गए ।

पुरु—चौदह वर्ष बहुत होते हैं । चौदह वर्षमें दुनिया बदल जाती है ।

रेनीयास—(अदबसे) हां महाराज ।

पुरु—तुम चाहते हो, तुम्हें वापस जानेकी आज्ञा मिल जाए ?

रेनीयास—(सिर झुकाकर) हां महाराज ।

पुरु—दूसरे सिपाही भी यही चाहते हैं ?

रेनीयास—(सिर झुकाकर) हां महाराज ।

[सिकंदर आता दिखाई देता है । रेनीयास सलाम करके चला जाता है । सिकंदर निकट आता है ।]

सिकंदर—महाराज पुरु ! आज आपने एक बार फिर हमारी जान बचाई है ।

हम आपको एक बार फिर सलाम करते हैं । हमने इतने सलाम आज तक किसीको नहीं किए ! आप बहादुर हैं ।

पुरु—हमें अफसोस है, आपके सिपाहीने आपको सब कुछ बता दिया ।

हमने उसे मनाही कर दी थी। उसने हमारा क्रमर किया है।

सिकंदर—यह उसका क्रमर नहीं, यह हमारी आंखोंका क्रमर है। हमने एक बार उसे धरकर देखा, और उसके दिक्की मारी बात उसके मुंहसे बाहर आ गई। (पुरुकी तरफ हाथ बढ़ाकर) हम आपके शुक्रगुजार हैं। आपने हमारी जान बचाई है।

पुरु—(सिकंदरका हाथ पकड़कर) यह सब कुछ भगवानकी कृपा है। जो करता है, भगवान करता है, आदमी कुछ नहीं करता।

सिकंदर—यह हिन्दुस्तानकी तहजीब है, हम इसके आगे भी सिर मुकाते हैं।

पुरु—मुझे आपसे कुछ कहना है।

सिकंदर—आप कहनेकी तक्लीफ न करें, मैंने आपके कहनेसे पहल ही उन बागियोंकी जानबखशी कर दी। आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

पुरु—(मुस्कराकर) धन्यवाद। मगर मुझे आपसे कुछ और भी कहना है।

सिकंदर—तो आइए, खेमेमें चलिए।

पुरु—मैं चाहता हूं आप अपने ग्वास ग्वास आदमियोंको भी बुला लें! हमें बड़े गंभीर मामलेपर विचार करना है।

सिकंदर—(ऊंची आवाज़से) कोई है ?

[रेनीयास आकर सलाम करता है और सामने खड़ा हो जाता है।]

सिकंदर—माबदौलत आफ्फिस, यूमनीस, सेल्युकस और एंडीगोनससे अपने खेमेमें मिलना चाहते हैं।



छठा दृश्य

स्थान—सिकंदरका खेमा

समय—आधी रात

[सिकंदर, पुरु, आग्नि, ऐंटीगोनस, सेल्यूकस, युमनीस बड़ी गम्भीरतासे बातचीत कर रहे हैं ।]

पुरु—(सिकंदरसे) मैंने आज सब कुछ सुना है, और सब कुछ देखा है, और मैंने आजकी हवा सूंघी है ! मैं इस परिणामपर पहुंचा हूं कि आपके सैनिकोंका उत्साह भंग हो गया है, और उनमें घरके प्यारकी प्यास पैदा हो गई है । अब वह आगे नहीं बढ़ेंगे ।

सिकंदर—अब युमनीस बोलेंगा ।

युमनीस—आलमपनाहकी उम्मीदें हमेशा ज़िन्दा रहें । जहां तक मैंने सुना है, हमारे सिपाहियोंको वर्गलाया गया है, और उन्हें धोखा दिया गया है । उनसे कहा गया है कि हमने लड़ाईमें मार खाई है । उन्हें बताया गया है कि हमारे हजारों सिपाही कत्ल हो गए हैं । उन्हें यक्रीन दिलाया गया है कि आगे खौफनाक मुसीबतें खड़ी हैं, और यह बातें इस तरीकेसे कही गई हैं, और इतनी बार कही गई हैं, कि हमारे सिपाहियोंने इन्हें सच मान लिया है और इनके लिए अपनी रूहें खोल दी हैं । नतीजा यह है कि उनमें डर समा गया है । अब उनके पास उम्मीद नहीं है । अब वह आगेकी तरफ देखते हुए भी डरते हैं ।

सिकंदर—(ऐंटीगोनसकी तरफ मुड़कर) अब हम ऐंटीगोनसकी बात सुनेंगे ।

ऐंटीगोनस—आलमपनाह पर दुनिया भरकी खुशियां बुर्दान हों, हमारे

सिपाही बेवकूफ हैं मगर बागी नहीं हैं। उन्हें धोखा दिया गया है, और वह धोखेमें आ गए हैं। उन्हें डराया गया है, और वह डर गए हैं। लेकिन अगर उन्हें समझाया जाए, और उनके सामने उम्मीदकी तसवीर रखी जाए, तो वे अपनी हिम्मतको लेकर फिर से खड़े हो सकते हैं, और दुश्मनोंकी दीवारों उनके सामने फिरसे सिर झुका सकती हैं। मेरा दिल कहता है, निराश होनेकी जरूरत नहीं।

सिकंदर—तूने उम्मीदकी बातें की हैं। मावदीलत तुझसे खुश हुए। अब सेल्यूकस बताएगा कि उसकी क्या राय है ?

सेल्यूकस—निकाटोरके पसीनेपर हमारा खून गिरे, मैं ज्यादा सोचता नहीं, मैं देखता हूँ, और सुनता हूँ, और बोलता हूँ। मैंने देखा है कि आज हमारे सिपाहियोंमें वह बात आ गई है, जो कल तक न आई थी, और उन्होंने अपने बादशाहके सामने इस तरह सिर उठाया है, जिस तरह कभी न उठाया था। यह क्रूर नहीं, यह जुर्म है। यह गलती नहीं, यह बरावत है। और फ्रीजमें बरावतकी सज़ा मौत है।

[सेल्यूकस दम लेंनेके लिए रुकता है, और थोड़ी देर रुककर फिर कहने लगता है।]

सेल्यूकस—अगर हम सिपाहियोंपर मेहरबानी करेंगे, तो हम अपने आप पर जुल्म करेंगे। मेरा खयाल यह है कि आज अगर बादशाह अपना गुस्सा लेकर खड़ा हो जाए, और जो उसके सामने सिर उठाए, उसके सिरको तलवासे झुका दे, तो कल सिपाही अपना भूल मानकर ज़मीन-पर झुक जाएँगे।

सिकंदर—तू बहादुर है, तूने बहादुरीकी बातें कही हैं। हमने तेरी बातें पसंद कीं। अब (आभिभ्राजकी तरफ मुड़कर) महाराज आफ्रिकसे खयाल सुनो।

आम्बि०—मैंने आपसे प्रतिज्ञा की थी, कि मेरी सेना आपका साथ देगी, और मेरी प्रतिज्ञा आज भी मौजूद है। मगर इतना सोच लीजिए, कि मेरी सेना उसी समय आपकी सहायता कर सकती है, जिस समय तक आपकी सेना आपके साथ हो। जब मेरी सेनाको यह मालूम हो गया कि आपकी सेनाने आपका साथ छोड़ दिया है, उस समय मुझे भय है, मेरी सेना के दिलमें आपका आदर न रहेगा।

सिकंदर—महाराजकी बातें कड़वी हैं। मगर महाराजकी बातें सच हैं, और सच हमेशा कड़वा होता है। (ज़रा ट्हलकर) हमारा खयाल है, हमने अपने सारे दोस्तोंकी बातें सुन ली हैं, और उन्होंने हमें वह बताया है, जो उनके दिलोंमें है। अब सवाल यह है कि हमें करना क्या चाहिए ? हम पीछे नहीं हटना चाहते; जो पीछे हटता है वह मर जाता है। हम उस वक़्तका इंतज़ार नहीं कर सकते, जब सिपाही अपनी भूल मानें और अपनी हिम्मत और वफ़ादारी लेकर हमारे सामने हाज़िर हो जाएं। जो वक़्तका इंतज़ार करता है, वक़्त उसके पास कभी नहीं आता। मगर हम एक बात कर सकते हैं, जो तारीखमें दुनियाके हर बादशाहने की है, और दुनियाका हर बादशाह करेगा। हम बग़ावतको लोहेके हाथसे दबा सकते हैं, और हमारा खयाल है, हमारे पास लोहेका हाथ है। जो बादशाह सिपाहियोंके सामने नर्म बनता है, सिपाही उसके सामने सिर नहीं झुकाते, न उसकी बात सुनते हैं। वह बादशाह आसमान तले अकेला रह जाता है, और उसकी ताक़त उसका साथ छोड़कर उसके दुश्मनोंके पास चली जाती है।

सेल्यूक्स—आलमपनाहने ठीक फ़रमाया है, सिपाही सख़्तीके बग़ैर क़ाबुमें नहीं रहते।

सिकंदर—हम इस बग़ावतको दबा देंगे।

पुरु—मेरा विचार है, आप भूल कर रहे हैं। आपको यह विचार छोड़ना

पड़ेगा ।

सिकंदर—क्या आपका यह खयाल है कि हम अपनी फ़ौजके बागी सिपाहियोंको सज़ा नहीं दे सकते ? हम बादशाह हैं । बादशाह सब कुछ कर सकता है ।

पुरु—बादशाह कुछ नहीं कर सकता, जब तक उसकी प्रजा उसके साथ न हो । प्रजा बादशाहको बदल सकती है, बादशाह प्रजाको नहीं बदल सकता ।

सिकंदर—और अगर प्रजा बागी हो जाए तो क्या बादशाह उसे सज़ा नहीं दे सकता ?

पुरु—अगर प्रजाके दो-चार दस हजार आदमी बागी हो जाएं, तो बादशाह उन्हें दबा सकता है, उन्हें कुचल सकता है, उनके सिर काट सकता है । लेकिन अगर सारी सेना अपने राजाकी आज्ञा माननेसे इनकार कर दे, तो राजा कुछ नहीं कर सकता ।

सिकंदर—लेकिन महाराज पोरसको मालूम हो कि हमारी सारी फ़ौज हमारे बरखिलाफ़ नहीं है ।

पुरु—मेरा विचार है, आपकी सारी सेनामें असंतोष और क्रोध है । मैंने बहुत कुछ सुना है, और जो कुछ सुना है, वह सच है ।

सिकंदर—तो भी परवाह नहीं । मैं एक एक सिपाहीकी गरदन काट डालूंगा । और मैं जानता हूं जब मैं अपनी तलवार लेकर खड़ा हूंगा तो मेरा हाथ पकड़नेवाला कोई न होगा ।

पुरु—आप राजा हैं, आप क़साई नहीं हैं । आप अपनी सारी सेनाकी गरदन नहीं काट सकते ।

सिकंदर—और अगर हम काटना चाहें, तो...(धीरेसे) हमें कौन रोकेगा ?

पुरु—आपको आपका मित्र पुरु रोकेगा । और मुझे आशा है, आप अपने मित्रकी मित्रताको ज़वाब न देंगे ।

सिकंदर—(क्रोधसे) आपका खयाल चलत है । अगर हमारे सामने आकर आपकी मित्रता हमारा रास्ता रोकेगी, तो हम उस मित्रताको भी एक तरफ हटा देंगे ।

पुरु—(मुस्कराकर) मगर मेरी मित्रता रास्तेसे नहीं हटेगी, न वह क्रोधमें आएगी, न निराश होगी । वह अपना धर्म पूरा करेगी, और अपनी जगह खड़ी रहेगी ।

सिकंदर—पुरुराज ! इस वक़्त हम गुस्सेमें हैं । और जब हम गुस्सेमें होते हैं, तो हम किसीकी बात नहीं सुनते । मगर हमने आपकी बात सुनी है ।

पुरु—मैं आपका धन्यवाद करता हूं ।

सिकंदर—मगर यह मामला हमारे और हमारे सिपाहियोंका है । आप इसमें दखल देनेवाले कौन हैं ?

पुरु—मैं आपका मित्र हूं ।

सिकंदर—और अगर हम यह कहें कि हमें आपकी मित्रता नहीं चाहिए, तो ?

पुरु—(उठकर खड़ा हो जाता है) तो मेरा स्थान इस शिविरके अंदर नहीं, शिविरके बाहर है । और आपकी जगह मेरे देशमें नहीं, देशकी सीमासे परे है, शायद आम्बिराजके देशमें ।

आम्बि—पुरुराज ! मैं आपका संबंधी हूं और भारतवासी हूं । मेरे राजमें आपके दुश्मनके लिए स्थान नहीं हो सकता ।

सिकंदर—महाराज आम्बिस ! आपने मुझे हैरान किया है !

पुरु—(आम्बिसे) और आपने मुझे खुश किया है । मैं आपके साहसकी प्रशंसा करता हूं । (बाहरकी तरफ बढ़ते हुए) अलक्षेन्द्र, मैं आपसे आशा लेता हूं ।

सिकंदर—(आगे बढ़कर) नहीं पुरुराज ! आपने हमें चलत सम्भला है ।

आप हमारा मतलब नहीं समझे । हम क्रोधमें थे ।

युरु—आदमीका असली रूप देखना हो तो उसे क्रोधमें देखना चाहिए ।

(जाते जाते) नमस्कार ।

सिकंदर—(क्रोधसे) नमस्कार ।

आग्नि—(उठकर जाते हुए) मेरी ओरसे भी नमस्कार ।

सिकंदर—(क्रोधसे भड़ककर) सेल्यूकस !

[सेल्यूकस सामने आकर सलाम करता है और फौजी ढंगसे सिर झुकाकर ग्वड़ा हो जाता है ।]

सिकंदर—(क्रोधपूर्ण आवाज़से) सेल्यूकस ! हमने हुक्म दिया था, पता लगाओ हमारे सिपाहियोंमें बयावत किसने फैलाई है ? तुमने पता लगाया ?

सेल्यूकस—गुलामने हुक्म जारी कर दिए हैं ।

सिकंदर—(भड़ककर) हम हुक्म नहीं चाहते, हम वह आदमी चाहते हैं जिसने हमारी फौजमें बयावत फैलाई है । हम सबसे पहले उसकी गरदन काटेंगे ।

बाहर से आवाज़—मैं हाज़िर हूं ।

सिकंदर—तू कौन है, मेरे सामने आ !

[देवकुलीस और रेनीयास खूसानाको बंदीकी हालतमें अंदर लाते हैं और उसे सिकंदरके सामने पेश करते हैं । सिकंदर खूसानाको देखता है और चौंकता है ।]

सिकंदर—कौन ? तू ! (नज़दीक आकर) क्या सचमुच यह तू ही है, या

हम पागल हो गए हैं। बोल, तू क्या कहना चाहती है ?

रुखसाना—मैं यह कहना चाहती हूँ कि मैंने आपकी फ़ौजमें बगावत फैलाई है और मुझे इसके लिए अफ़सोस नहीं है। मैं मुस्करा रही हूँ।

सिकंदर—अगर तू समझती है कि हम तेरी मुस्कराहटको देखकर दीवाने हो जाएंगे, तो तू खुद दीवानी है ! तूने सिकंदरको आज तक नहीं समझा। सिकंदरमें इतनी हिम्मत है कि वह एक मामूली सरदारकी लड़कीको अपने दिलकी मलिका बना ले। और सिकंदरमें इतनी दिलेरी भी है कि अगर वह लड़की हुक्मतका जुर्म करे तो उसकी गरदन अपने हाथसे काटकर ज़मीन पर फेंक दे।

रुखसाना—मैं खुश हूँ कि मेरा सिकंदर अपने फ़र्ज़में इतना मज़बूत है, लेकिन...

[कहते कहते रुक जाती है।]

सिकंदर—तू रुकती क्यों है ? तू अपनी बात पूरी क्यों नहीं करती ?

रुखसाना—इसलिए कि (लोगोंकी तरफ़ इशारा करके) यह लोग यहां हैं।

सिकंदर—हमें मालूम है, और हम नहीं चाहते कि तुमसे अकेलेमें मुलाकात करें। इस वक़्त हम बादशाह हैं, तू बागी है। तुझे जो कुछ कहना हो, इनके सामने कह।

रुखसाना—तो मुझे यह कहना है कि मैंने आपके सिपाहियोंमें बगावत नहीं फैलाई, आपको आगे बढ़नेसे रोका है। और मैंने आपको आगे बढ़ने से नहीं रोका, आपको बेइज़्ज़तीकी ज़िंदगी और बेइज़्ज़तीकी मौतसे बचाया है। मैंने आपकी ख़िदमत की है। मैंने आपपर अहसान किया है। मैं बहुत कुछ जानती हूँ।

सिकंदर—तू बेवकूफ़ है। तू कुछ नहीं जानती। क्या तू जानती है पोरस

कितना बहादुर बादशाह है ? और क्या तू जानती है कि हमने उसे एक दिनमें जीत लिया है ?

रुखसाना—(ईटका जवाब पत्थरसे देते हुए) और क्या आप जानते हैं, जब आप लड़ाईके मैदानमें घोंड़ेसे गिर पड़े थे, और जब महाराज पुरके हाथमें भाला था, उस वक़्त आपको किसने बचाया था ?

सिकंदर—(अभिमानसे) हमारे इक़बाल और दबदबने !

रुखसाना—नहीं आलमपनाह नहीं ! उस वक़्त आपका इक़बाल सो गया था । उस वक़्त आपका दबदबा ज़मीनपर पड़ा दम तोड़ रहा था । उस वक़्त आपके पास सिपाही न थे, उस वक़्त आपके पास हथियार न थे ! उस वक़्त आपके पास सिर्फ़ रुखसानाकी सुहृद्वत् थी । आपकी हिफ़ाज़त उस सुहृद्वत्‌ने की है ।

सिकंदर—हमसे पहेलियोंमें बात न कर, जो कुछ कहना हो साफ़ साफ़ कह । हम साफ़ साफ़ सुनना चाहते हैं ।

रुखसाना—तो मैं एक ऐसी बात कहनेवाली हूँ जिसे सुनकर आपका सिर शर्मसे झुक जाएगा और जिसे सुनकर आपके गुलाम भी आपके दुश्मनकी इज़ज़त करने लगेंगे । अब आप फ़ैसला करें कि आप वह बात (सेल्यूकस वगैरहकी तरफ़ इशारा करके) इनके सामने सुनना चाहते हैं या अकेलेमें सुनना चाहते हैं ?

युमनीस—आलमपनाह ! हम आपके गुलाम हैं । हम ऐसी कोई बात न सुन सकेंगे, जिसमें आलमपनाहकी बेइज़ज़तीका इशारा भी हो । हमें इज़ाज़त दी जाए ।

सिकंदर—तुम्हारी दरख़वास्त मंज़ूर हुई । तुम जा सकते हो ।

[युमनीस, ऐराटीगोनस, सेल्यूकस, देवकुलीस, रेनीयास सब सिर झुकाकर चले जाते हैं । सिकंदर क्रोधसे होंठ काटता है और रुखसानाके

सामने जाकर खड़ा हो जाता है। रखसाना सिर झुकाए खड़ी रहती है।]

सिकंदर—अब कह, तू क्या कहना चाहती है ?

रखसाना—मैं यह कहना चाहती हूँ कि आपने पुरुषों नहीं जीता, पुरुष आपकी जानबखशी की है। और उस जानबखशीकी वजह यह है कि उसने मुझे अपनी बहन कहा है। जब वह जंगमें जाने लगा तो उसने मुझसे पूछा—तू मेरी बहन है, तू अपनी कोई ख्वाहिश बता।

सिकंदर—और तूने क्या कहा ?

रखसाना—मैंने कहा, मेरी ख्वाहिश यह है कि सिकंदर ज़िन्दा रहे। और उसने इक़रार कर लिया। और जब आप उसके हाथ में थे, और जब वह आपको जानसे मार सकता था, उसे अपना इक़रार याद आ गया और उसके हाथ वहीं रुक गए। लड़ाईका पाँसा पलट गया। और आप जीत गए, वह हार गया।

सिकंदर—(हवामें देखते हुए) पोरस ! मैं समझता था तू बहादुर है, तू दिलीर है, तू शरीफ़ है। लेकिन आज मालूम हुआ, तू इससे भी बड़ा है। तू देवता है, तुझ जैसे आदमी दुनियामें रोज़ रोज़ नहीं आते। कभी कभी आते हैं और दुनियाके सामने एक मिसाल रखकर चले जाते हैं। तुझे दुनिया सलाम करेगी।

रखसाना—इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि आप आगे बढ़ना चाहते हैं। और मुझे यह भी मालूम हुआ कि आगे खतरे हैं, और आगे ऐसे ऐसे ज़बरदस्त बादशाह हैं कि आप उनसे कभी पार न पा सकेंगे। और मुझे आपकी हार और बेइज़्जती सामने नज़र आई। मैं जानती थी, आप मेरे समझानेसे कभी न समझेंगे। मैं जानती थी, आप दुनिया जीतना चाहते हैं। मैं जानती थी, आप अपनी ज़िंदगी भी दे देंगे, मगर पीछे न हटेंगे।

सिकंदर—फिर ?

रुखसाना—मैं घबरा गई। मैं परेशान हो गई। मेरे सामने कोई रास्ता न था। और पुरु अपनी हारके आँधरेमें अपनी जिंदगीको अपना बोझ समझ रहा था। अब मेरे सामने दो फर्ज़ थे। आपकी जिंदगी बचाऊँ और अपने मुँह बोले भाईके दिलका चैन बँचाऊँ। और मैंने वह किया जिसकी सज़ा मौत है।

[बाहर शोर मचता है। सिकंदर सुनता है और टहलता है। शोर बढ़ जाता है। सिकंदर बेचैन होकर देखता है। सेल्यूकस हाज़िर होकर सलाम करता है।]

सिकंदर—यह शोर कौन मचा रहा है ? अगर यह हमारे सिपाही हैं, तो उनसे कह दो उनका बादशाह उनसे कल मुलाकात करेगा !

सेल्यूकस—सिपाही (रुखसानाकी तरफ़ इशारा करके) इन्हें छुड़ाने आए हैं।

वह कहते हैं, पहले हम मरेंगे फिर यह मरेंगी। और वे ...

सिकंदर—(बात काटकर) उनके बीस आदमियोंको अंदर आनेकी इजाज़त दो और उनके हथियार उनके पास रहने दो। आज वह उस सिकंदर को देखेंगे, जो उन्होंने आज तक नहीं देखा।

[सेल्यूकस सिर झुकाकर चला जाता है। सिकंदर तनकर खड़ा हो जाता है और रुखसानाको हुक्मके तौर पर कहता है—]

सिकंदर—लड़की ! तूने जुर्म किया है। हमारे नज़दीक आ, हम तुझे सज़ा देंगे। (रुखसाना आगे बढ़ती है) और आगे बढ़। (रुखसाना और आगे बढ़ती है) और आगे बढ़।

[रुखसाना बिल्कुल सिकंदरके पास आ जाती है। सिकंदर रुखसानाको दोनों कंधोंसे पकड़कर भंगोड़ना चाहता है। रुखसाना डरकर आखें बंद कर लेती है। सिकंदर एकाएक रुखसानाको गलेसे लगा लेता है। रुखसाना चौंककर देखती है और सिकंदरके गलेसे लिपट जाती है। सिकंदर रुखसानाकी पीठपर प्यारसे हाथ फेरता है, और धीरे धीरे कहता है।]

सिकंदर—तू रुखसाना नहीं, तू हमारी रेक्सनीज़ है। तूने हमारी जिंदगी बचाई है। हम तुम्हें खुश हैं। आज तू जो इनाम मांगेगी, हम तुम्हें देंगे। और तू जो कुछ चाहेगी, हम तेरे लिए करेंगे।

रुखसाना—(मुस्कराकर, शरारतसे सिर झुकाकर, और अपने आपको सिकंदरके बाहुपाशसे छुड़ाकर) शुक्रिया !

सिकंदर—(खुशिके साथ) रेक्सनीज़, तू जानती है मावदौलतको शुक्रिएका यह बृद्धा तरीका पसंद नहीं। और फिर भी तू.....मावदौलतको अफ़सोस है।

रुखसाना—(गंभीरतासे) मैं अपना इनाम मांगती हूं।

सिकंदर—(अपना हाथ अपनी जाँघपर मारकर) मांग, क्या मांगती है। हम आज तेरी हरएक मांग पूरी करेंगे।

रुखसाना—सिपाहियोंकी गुस्ताखी माफ़ की जाए, यह मेरी पहली मांग है।

सिकंदर—दूसरी मांग ?

रुखसाना—मेरी दूसरी मांग यह है कि फ़ौजको पीछे मुड़नेका हुक्म दिया जाए।

सिकंदर—तीसरी मांग ?

रुखसाना—तीसरी मांग यह है कि पुरु मेरा भाई है—

सिकंदर—आलमपनाह सिफ़ारिश सुनेंगे, और उसे क़बूल करेंगे। लेकिन तू पोरस्के लिए सिफ़ारिश न कर। हम तेरे मुँहसे पोरस्के लिए

सिफारिश नहीं सुनना चाहते ।

रुखसाना—क्यों आलमपनाह !

सिकंदर—इसलिए कि वह तेरी सिफारिशसे ऊपर है । हमारे दिलमें उसके लिए गुस्सा नहीं, हमारे दिलमें उसके लिए इज्जत है । और उसकी इज्जत हमारे साथ यूनान तक जाएगी ।

रुखसाना—(मुस्कराकर और सिर झुकाकर) जवान शुक्रिया !

सिकंदर—(बाहर कदमोंकी चापकी आवाज़ सुनकर) चले आओ ।

[सेल्यूकस और बीस सिपाही अंदर आ जाते हैं । सिपाहियोंके तेवर बिगड़े हुए हैं ।]

सिकंदर—हम जानना चाहते हैं, इस वक्त तुमने हमारे आराममें क्यों खलल डाला है !

एक सिपाही—(क्रोधसे) आलमपनाह, आपने (रुखसानाकी तरफ इशारा करके) इन्हें गिरफ्तार किया है ?

सिकंदर—(शांतिसे) किया है ।

सिपाही—(और भी गुस्से होकर) और आप उन्हें सज़ा देंगे ?

सिकंदर—ज़रूर देंगे ।

सिपाही—(धमकी देते हुए) तो फ़ौजमें बराबत हो जाएगी ।

सिकंदर—(मुस्कराकर) हो जाए ।

सिपाही—इसका नतीजा क्या होगा ?

सिकंदर—(एकाएक स्वर बदलकर) नतीजा यह होगा कि तुम्हारा बादशाह तुम सबको यूनान जानेकी इजाज़त दे देगा, मगर वह खुद यहीं इसी ख़ेममें पड़ा रहेगा । वह न खाएगा, न पीएगा, और यह औरत उसे अपने सामने मरते हुए देखेगी ।

रुखसाना—आलमपनाह, यह आपने क्या कहा है ?

सिकंदर—सेल्यूकस ! इनसे कहो, खेमेसे बाहर निकल जाएँ । इन्होंने जो कुछ मांगा था, वह इन्हें मिल गया । अब इन्हें देनेके लिए हमारे पास और कुछ नहीं है ।

[सेल्यूकस और सिपाही चुपचाप बाहर चले जाते हैं । रुखसाना सिकंदर की तरफ बढ़ती है और भराँए हुए स्वरसे कहती है—]

रुखसाना—आलमपनाह ! ज़रा सोचिए ।

सिकंदर—तुमने हमारी जान बचाई, हमने तुम्हारी सिफ़ारिश सुनी । हिसाब बराबर हो गया । अब तुम और क्या चाहती हो ? क्या यह, कि हम अपने सिपाहियोंसे हारकर खुशियाँ मनाएँ, और अपनी हारके आँसुओं को तुम्हारे प्यारमें गर्क कर दें ? यह नामुमकिन है ।

रुखसाना—आलमपनाह ! दुनियामें सिर्फ़ लड़ाई और फ़तह ही नहीं है, अमन और प्यार भी है ! और सच्ची खुशी प्यार और अमनमें है, लड़ाई और फ़तह में नहीं ।

[सिकंदर—(बड़े प्यारसे) मगर रेक्सनीज़, सिपाहीके लिए अगर दुनियामें लड़ाई और फ़तह नहीं है, तो कुछ भी नहीं है । वह लड़ाईमें पैदा होता है, लड़ाईमें बढ़ा होता है, लड़ाईमें आगे बढ़ता है । और जब उसकी ज़िन्दगीमें लड़ाई ख़त्म होती है, तो उसकी ज़िन्दगी भी ख़त्म हो जाती है । और शायद तु जानती है कि हम बादशाह ही नहीं हैं, सिपाही भी हैं । बल्कि सिपाही ज्यादा हैं, बादशाह कम हैं ।

रुखसाना—(भराई हुई आवाज़से) मगर आलमपनाह ! हमारे सिपाही सिर्फ़ सिपाही ही नहीं हैं, वह बेटे, भाई और बाप भी हैं । वह सिर्फ़ सिपाही ही नहीं हैं, वह आदमी भी हैं । और आज उनके अंदरका आदमी

जाग उठा है ।

सिकंदर—(मुस्कराकर) रेक्सनीज ! तूने खूबमूरत बात कही है । माबदौलत तुझसे खुश हैं । अब देखना यह है कि हमारे अंदरका सिपाही जीतता है या उनके अंदरका आदमी जीतता है ।

रुखसाना—जब सिपाही सिपाहीसे लड़ता है तो एक सिपाही हारता है, दूसरा सिपाही जीतता है । मगर जब सिपाही आदमीसे लड़ता है और जब वह आदमी सचमुच आदमी होता है, तो सिपाही कभी नहीं जीतता, हमेशा आदमी जीतता है ।

सिकंदर—मगर इसका यह मतलब कभी नहीं है कि सिपाही हारके डरसे लड़ाईके बगैर ही हार मान ले । तू हमें लड़ने दे । शायद जुपिटर हमारी सुन ले और हमारे सिपाहियोंके दिल पलट दे ।

[रंगमंच पर अंधेरा छा जाता है ! इस अंधेरेमें कई आवाज़ें आती रहती हैं । जब प्रकाश होता है तो सिकंदर एक चौकीपर बैठा नज़र आता है । उसके सिरपर पट्टी बँधी है । उसके सामने सेल्यूकस, एण्टीगोनस, युमनीस, आम्बि और रुखसाना हैं । सिकंदर कमज़ोर और उदास है । उसके आदमी परेशान और बेचैन हैं ।]

सिकंदर—सेल्यूकस ! हमारे सिपाहियोंनं हमारे लिए कुछ नहीं किया । उन्होंने हमारा कोई कहा नहीं माना । उन्होंने हमारे लिए कोई कुरबानी नहीं की । उन्होंने हमें हिन्दुस्तानमें लाकर हमें ज़लील किया है । उनसे कह दे, अब वह हमारे सिपाही नहीं हैं, न हम उनके बादशाह हैं । वह जहाँ चाहे, जा सकते हैं ।

सेल्यूकस—(बड़े अदबसे) आलमपनाह ! आपने आठ दिनसे खाना नहीं खाया । आप कमज़ोर हो गए हैं और आपकी कमज़ोरी देखकर आपके

खादिम डग रहे हैं ।

सिकंदर—तुम झूठ बोलते हो । वह हमारे खादिम नहीं हैं । अगर वह हमारे खादिम होते, तो हमें वचन की कौशिश करते । मगर उन्होंने क्या किया है ?

सेल्यूकस—आलमपनाह ! आज वह सोच रहे हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए, शायद वह अपनी भूल मान लें और आलमपनाहके हुक्मपर आगे बढ़नेको तैयार हो जाएं ।

सिकंदर—(कमजोरीसे) अच्छा ! हम इंतज़ार करेंगे ।

सेल्यूकस—मगर हकीम कहता है अब आप और भूखे रहेंगे तो आपके पेटमें ऐसी खटाई पैदा हो जाएगी, जिसे सँभालना मुश्किल हो जाएगा ।

सिकंदर—(बेवसीसे) सेल्यूकस, हम क्या करें ? हमारा दिल खाना खानेसे इनकार करता है ।

रुसमाना—आलमपनाह ! आप अपने आपको हलाक करनेपर क्यों तुल्ले हुए हैं ?

सिकंदर—(धीरेसे) जुपिटरपर उम्मीद रखो, जुपिटर सब कुछ देख रहा है ।

रुसमाना—जुपिटर कुछ नहीं देखता । जुपिटर कुछ नहीं सुनता । जुपिटर कुछ नहीं करता । आज हमारी किस्मत सो गई है । आज हमारी राहोंमें अंधेरा है ।

[देवकुलीस सामने आकर सिर झुकाता है ।]

सिकंदर—(धीरेसे) क्या बात है ?

देवकुलीस—आलमपनाहके सिपाहियोंने अपना एक सिपाही मेजा है । वह

अंदर आनेकी इजाज़त माँगता है ।

सिकंदर—(धीरेसे) हमने इजाज़त दी ।

[देवकुलीस सिर झुकाकर चला जाता है । थोड़ी देरमें एक सिपाही एक प्याला लिए हुए आता है, सिकंदरके सामने सिर झुकाता है और चुपचाप खड़ा हो जाता है ।]

सिकंदर—तुम्हारा आज जलसा था ?

सिपाही— (सिर झुकाकर) हां, आलमपनाह !

सिकंदर—और वह जलसा खत्म हो गया ?

सिपाही—(सिर झुकाकर) हां, आलमपनाह !

सिकंदर—क्या फ़ैसला हुआ ?

सिपाही—फ़ैसला हुआ है कि आलमपनाहसे हाथ बाँधकर दरखास्त की जाए कि आलमपनाह इस शरबतसे अपना फ़ाका तोड़ दें ।

सिकंदर—(शांतिसे) और अगर हम न तोड़ें, तो ?

सिपाही—तो तमाम सिपाही आलमपनाहके खेमेके बाहर लेंट जाएंगे और उनमें से कोई भी न खाना खाएगा, न पानी पीएगा, न घर लौटेगा । सिर्फ़ ग्यारह सिपाही यूनानको यह इत्तला देनेके लिए भेज दिए जाएंगे कि यूनानमें ग्यारह दिन मातम मनाया जाए, यूनानपर यूनानकी सबसे बड़ी मुसीबत आई है ।

संत्युक्त—(हैरान होकर और चौंककर) आलमपनाह !

रुखसाना—(आँखोंमें आँसू लाकर) इस बातमें मैं भी सिपाहियोंके साथ हूँ ।

युभनीस—(धीरेसे) आलमपनाह ! इस वक़्त यूनानको इस मुसीबतसे आपके सिवाय कोई नहीं छुड़ा सकता ।

सिकंदर—(बेवसीसे) हम नहीं समझते, हम क्या करें ? हमपर ऐसा दिन कभी न आया था । हमें हमारे अपने सिपाहियोंने घेर लिया है और हमें बाहर निकलनेका कोई रास्ता नज़र नहीं आता ।

आम्बि—(सिपाहीसं प्याला लेकर और आगे बढ़कर) महाराज, अब आपको

सिपाहियोंका कहा मानना ही पड़ेगा, वरना अनर्थ हो जाएगा ।

एगटीगोनस—इस वक़्त जुपिटरका बेटा ही यूनानकी मवसे बड़ी मुसीबतका
टाल सकता है ।

सिकंदर—उहरो, हमें सोचने दो ।

रुखसाना—(मिनत करते हुए) आलमपनाह ! आपकी ज़िंदगी ख़तरेमें
है, और यूनान आपको ज़िंदा देखना चाहता है ।

सिकंदर—(बेवसीसे) हम क्या करें ? हमारे चारों तरफ़ अँधेरा है । हमें
कुछ नहीं सूझता और हमारे सिपाही हमें धमका रहे हैं ।

आम्बि—महाराज, आपके सिपाही आपके बच्चे हैं । वह आपको धमकाते
नहीं, आपसे प्रार्थना करते हैं । और जब आप उनकी प्रार्थना नहीं
सुनते, तो चाहते हैं कि मर जाएं । वह आपके ऊपर क़ुर्बान हो जाना
चाहते हैं ।

सिकंदर—तो क्या हमारे सब दोस्तोंकी यही राय है कि हम ज़िंदा रहें ?

सब लोग—(खुशीसे) हाँ आलमपनाह !

सिकंदर—नहीं, यह सब दोस्तोंकी राय नहीं । इस रायमें महाराज पोरस
कहाँ शामिल हैं ? जाओ, कोई उन्हें बुला लाओ । कहो, तुम्हारा
मित्र अलक्षेन्द्र कमज़ोरी और बीमारीमें तुम्हें बुला रहा है ।

रुखसाना—उन्हें तो आपने खफ़ा करके भेज दिया था । वह यहां नहीं
आएंगे ।

सिकंदर—तु उन्हें नहीं जानती । वह जब मुहब्बतकी पुकारको सुनेंगे तो
ज़रूर आएंगे, ज़रूर आएंगे ।

आवाज़—वह आ गए हैं !

सिकंदर—(खुशीसे हांपते हुए) पुरुराज, आप आ गए ! आप आ गए !

(उठनेकी कोशिश करता है ।)

पुरु—आप लेंटे रहिए । आप कमजोर हैं । (आम्भिसे) आम्भिराज, यह प्याला मुझे दीजिए । (प्याला लेकर) लीजिए, महाराज अल-
दौद्र ! आपके सिपाही और मित्र आपको ज़िंदा देखना चाहते हैं ।

[सिकंदर शरबत लेकर पी लेता है, और पीकर लेंट जाता है ।
प्याला लानेवाला सिपाही बाहर चला जाता है ।]

रुससना—(खुशीसे पागल होकर) एलेक्जैंडर ज़िंदाबाद !

खेमेके सब लोग—(चिल्लाकर) एलेक्जैंडर ज़िंदाबाद !

बाहरसे सिपाहियोंकी आवाज़—एलेक्जैंडर ज़िंदाबाद !

सिकंदर—(धीरे से) महाराज पोरस ज़िंदाबाद !

खेमेके सब लोग—(चिल्लाकर) महाराज पोरस ज़िंदाबाद !

बाहरसे सिपाहियोंकी आवाज़—महाराज पोरस ज़िंदाबाद !

[आवाज़ गूंजती रहती है । धीरे धीरे परदा गिरता है ।]

समाप्त

श्री सुदर्शनकी और पुस्तकें

नाटक

अंजना, आनरेगी मजिस्ट्रेट, माग्य-चक्र

कहानियां

पुष्पलता, सुप्रभात, तीर्थयात्रा, पग्विर्तन, सुदर्शन-सुधा.

सुदर्शन-मुमन. पनघट, चार कहानियां.

नगीने

बच्चोंके लिए

बटपटलाल, रुस्तम-मोहराव, मात अजबे, पागम, फूलवती.

अंगूठीका मुकदमा, राजकुमार सागर, बच्चोंका

हितोपदेश, मात कहानियां,

वीर दयानंद

गीत

संकार, दिलके तार

लेख

भरोखे, मनकी मौज

